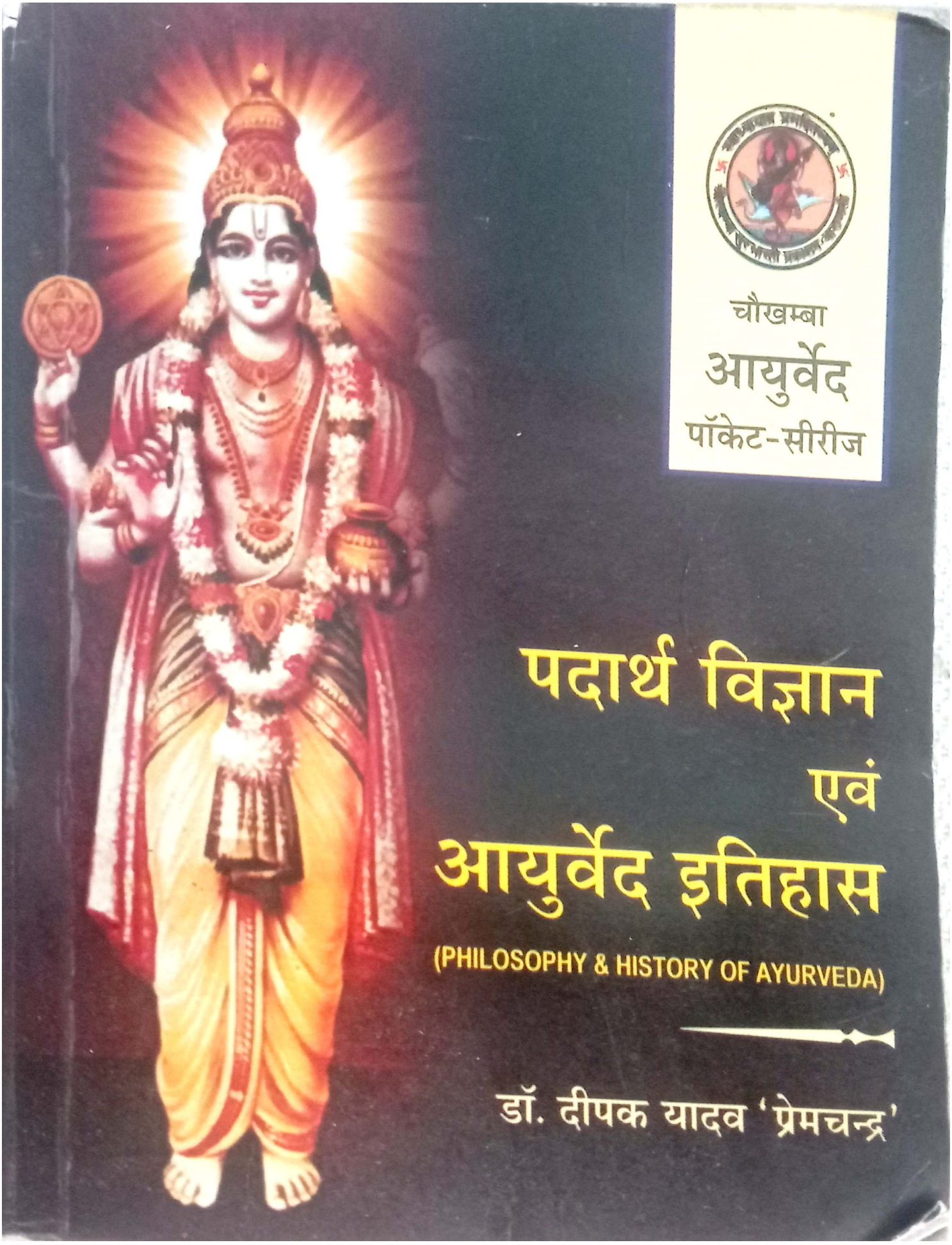

चौखम्बा

आयुर्वेद

पॉकेट-सीरीज

पदार्थ विज्ञान एवं आयुर्वेद इतिहास

(PHILOSOPHY & HISTORY OF AYURVEDA)

डॉ. दीपक यादव 'प्रेमचन्द्र'

Ayurveda Ek Vikalp Foundation

- All ayurvedic books store
- India's biggest Ayurveda union.
- For Ayurvedic E- book follow, subscribe us on

Telegram-
https://t.me/ayurvedaekvikalpfoundation

Facebook-
https://m.facebook.com/ayurvedaekvikalp/?ref=bookmarks

E-mail- ayurvedaekvikalp@gmail.com

Website- ayurvedaekvikalp.org

For WhatsApp group msg-
9561788826

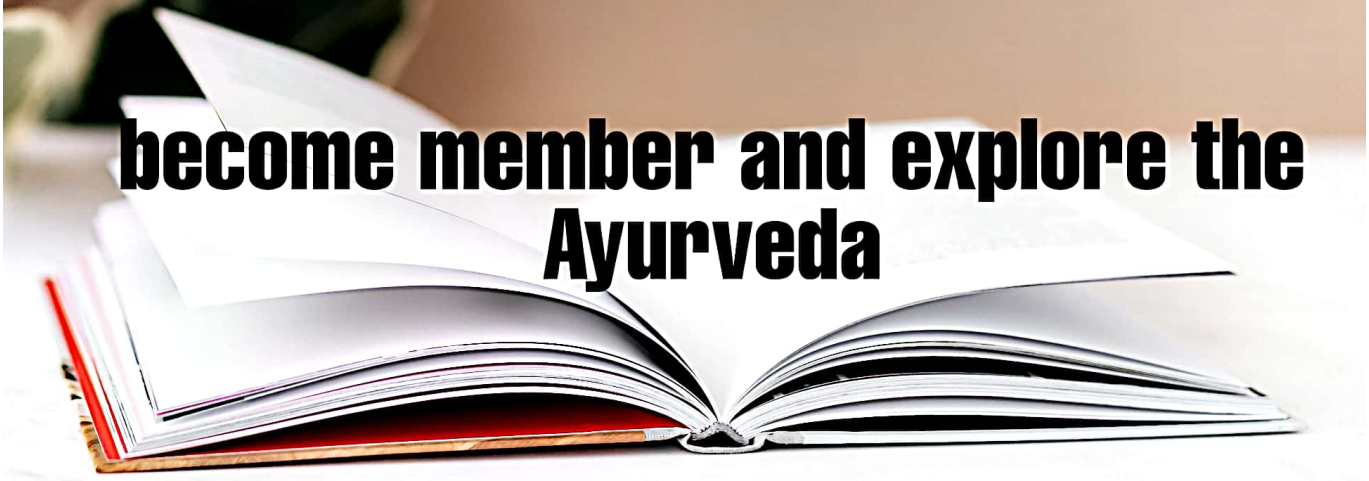

become member and explore the Ayurveda

।। श्रीः ।।

चौखम्बा आयुर्विज्ञान ग्रन्थमाला

101

पदार्थ विज्ञान एवं आयुर्वेद इतिहास

(PHILOSOPHY & HISTORY OF AYURVEDA)

(As per CCIM new syllabus 2012)

लेखक

डॉ. दीपक यादव 'प्रेमचन्द्र'

एम.डी. (मौलिक सिद्धान्त)

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

पदार्थ विज्ञान एवं आयुर्वेद इतिहास (पाकेट बुक)
ISBN : 978-93-83721-00-9
प्रकाशक :
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन, पोस्ट बॉक्स न. 1129
वाराणसी 221001
दूरभाष : (0542) 2335263
e-mail : csp_naveen@yahoo.co.in
website : www.chaukhamba.co.in

© **सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन**

संस्करण : 2016
₹ 110

अन्य प्राप्तिस्थान :
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2 ग्राउण्ड फ्लोर, गली न. 21-ए
अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : (011) 32996391, टेलीफैक्स : 23286537
e-mail : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

*

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
पोस्ट बॉक्स न. 2113, दिल्ली 110007

*

चौखम्बा विद्याभवन
पोस्ट बॉक्स न. 1069, वाराणसी 221001

मुद्रक : रत्ना ग्राफिक्स दिल्ली

विषयावलि

PAPER I

Section A

1. परिचय 1
2. द्रव्य विज्ञानीयम् 40

Section B

3. गुण विज्ञानीयम् 85
4. कर्म विज्ञानीयम् 111
5. सामान्य विज्ञानीयम् 115
6. विशेष विज्ञानीयम् 118
7. समवाय विज्ञानीयम् 120

8. अभाव विज्ञानीयम् 123

PAPER II
Section A

1. परीक्षा
2. आप्तोपदेश परीक्षा 126
3. प्रत्यक्ष परीक्षा 139
4. अनुमान परीक्षा 147
5. युक्ति परीक्षा 160
6. उपमान परीक्षा 182
7. कार्य कारण सिद्धान्त 184
188

Section B

आयुर्वेद इतिहास 200

❖❖❖

Section A

1. परिचय

आयु (Ayu)

परिभाषा (*Definition*)

- **आयुः शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः।** सु.सू. 1.15 पर डल्हण
- **शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्।**
  नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते।। च.सू.1.42

शरीर (पञ्चमहाभूत एवं चेतनाधिष्ठित), इन्द्रिय (कर्मेन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रिय), सत्त्व (मन) एवं आत्मा का संयोग 'आयु' कहलाता है।

पर्याय (*Synonym*)

- धारि
- जीवित
- नित्यग
- अनुबन्ध
- चेतनानुवृत्ति

- **धारिः धारयति शरीरं पूतितां गन्तुं न ददातीति धारि।** चक्रपाणि

अर्थात् यह संयोग रसादिसंवहन क्रिया से शरीर को शीर्ण होने से बचाता है तथा धारण करता है, इसलिये 'धारि' कहलाता है।

- **जीवितः जीवयति प्राणान् धारयति इति जीवितम्।** चक्रपाणि

अर्थात् श्वसनादि कर्म से प्राणों को धारण करता है, इसलिये 'जीवित' कहलाता है।

- ***नित्यगः नित्यं शरीरस्य क्षणिकत्वेन गच्छतीति नित्यगः।*** चक्रपाणि

अर्थात् प्राणी में निरन्तर गतिशीलता / गमनशीलता के कारण यह 'नित्यग' कहलाता हैं।

- ***अनुबन्धः अनुबध्नाति शरीरान्तराणि इति।***

अर्थात् एक शरीर से दूसरे शरीर में संयोग रूप से सम्बन्ध स्थापित करता है, इसलिये यह 'अनुबन्ध' कहलाता है।

- **चेतनानुवृत्तिः तत्रायुश्चेतनानुवृत्तिर्जीवितमनुबन्धो धारि च इत्येकोऽर्थः।** च.सू.30.22

जन्म से मृत्यु पर्यन्त चेतनता का निरन्तर बने रहने के कारण यह 'चेतनानुवृत्ति' कहलाता है।

परिमाण (*Span of life*)

- **शतायुर्वै पुरुषः।**
- **वर्षशतं खलु आयुषः प्रमाणमस्मिन् काले; सन्ति च पुनः अधिकोनवर्ष- शतजीविनोऽपि मनुष्याः।** च.वि.8.122

सामान्यतया मनुष्य की आयु का परिमाण 100 वर्ष है।

भेद (*Classification of Ayus*)

आयु के भेदः 4

- हित आयु
- अहित आयु
- सुखायु
- दुःखायु

आयुर्वेद (*Ayurveda*)

व्युत्पत्ति (*Etymological derivation*)

- **आयुषो वेदः आयुर्वेदः।**

जो आयु का वेद है, वह आयुर्वेद कहलाता है।

- **आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वाऽऽयुर्विन्दत्यायुर्वेदः।।** सु.सू.1.15

आयु से सम्बन्धित ज्ञान तथा दीर्घायु के उपायों की विशद चर्चा जिस शास्त्र में है वह आयुर्वेद है।

- ***तदायुर्वेदयतीत्यायुर्वेदः।*** च.सू.30.23

वह आयु का ज्ञान कराता है, अतः उसका नाम आयुर्वेद है।

- ***आयुर्वेदयति ज्ञापयति प्रकृतिज्ञानरसायनदूतारिष्टद्युपदेशादित्यायुर्वेदः।*** अरुणदत्त

परिभाषा *(Definition)*

- ***स्वलक्षणतः सुखासुखतो हिताहिततः प्रमाणाप्रमाणतश्च यतश्चायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेदः।*** च.सू.30.23

अपने लक्षणों से, सुख-असुख से, हित-अहित से और प्रमाण-अप्रमाण से वह आयु का ज्ञान कराता है। क्योंकि यह आयुष्य (आयु के लिये हितकर) और अनायुष्य (आयु के लिये अहितकर) द्रव्यों तथा उनके गुणों एवं कर्मों का ज्ञान कराता है अतएव इसको 'आयुर्वेद' कहते हैं।

- ***शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः, तदस्मिन्नायुर्वेदे विद्यते अस्ति इत्यायुर्वेदः, अथवा आयुर्विद्यते ज्ञायतेऽनेनत्यायुर्वेदः, आयुर्विद्यते विचार्यतेऽनेन वा इत्यायुर्वेदः, आयुरनेन विन्दति प्राप्नोति इति वाऽऽयुर्वेदः।*** डल्हण सु. सू. 1.15 पर

- ***हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।***
  मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।। च.सू.1.41

हित आयु, अहित आयु, सुखायु और दुःखायु तथा उस आयु के लिये जो हितकर (पथ्य) अथवा अहितकर (अपथ्य) है, आयु का मान और उसके लक्षणों का वर्णन जिसमें होता है, उसको आयुर्वेद कहते हैं।

पर्याय *(Synonym)*

- ***तत्रायुर्वेदः शाखा विद्या सूत्रं ज्ञानं शास्त्रं लक्षणं तन्त्रमित्यनर्थान्तरम्।।*** च.सू.30.31

• शाखा	• विद्या
• सूत्र	• ज्ञान
• शास्त्र	• लक्षण
• तन्त्र	• पुण्यतम वेद
• अगदवेद	• पञ्चमवेद

प्रयोजन *(Aims of Ayurveda)*

- ***प्रयोजनं चास्य (आयुर्वेदस्य) स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च।*** च.सू.30.26

- **इह खल्वायुर्वेदप्रयोजनं-व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः, स्वस्थस्य रक्षणं च।।** सु.सू.1.14
  - *स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना*
  - *रूग्ण व्यक्ति के रोग का निवारण*

अध्ययन योग्य (*Eligibility for studying Ayurveda*)

- *आयुर्वेद का अध्ययन ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को करना चाहिये।*
- *प्राणियों के प्रति कृपा करने के लिये ब्राह्मणों को*
- *क्षत्रियों को आत्मरक्षा तथा सभी प्राणियों की रक्षा के लिये*
- *वैश्यों को आजीविका के लिये आयुर्वेद का अध्ययन करना चाहिये।*
- *सामान्य दृष्टि से धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति के लिये सबको आयुर्वेद का अध्ययन करना चाहिये।*

सिद्धान्त (Demonstrated truth)

परिभाषा(*Definition*)

- ***अथ सिद्धान्तः- सिद्धान्तो नाम स यः परीक्षकैर्बहुविधं परीक्ष्य हेतुभिश्च साधयित्वा स्थाप्यते निर्णयः।*** च.वि. 8.37

परीक्षकों द्वारा अनेक बार परीक्षा कर और हेतुओं के द्वारा सिद्ध कर जो

स्थायी निर्णय किया जाता है, उसे सिद्धान्त (*demonstrated truth*) कहते हैं।

तथ्य (*Facts*)

- आचार्य अग्निवेश ने (चरक संहिता में) 44 वादमार्गों में सिद्धान्त (16वॉं) का समावेश किया है।
- न्यायसूत्र के 16 पदार्थों में सिद्धान्त की गणना की गई है।

पर्याय (*Synonym*)

- राद्धान्त

प्रकार (*Types*)

- **स चतुर्विधः - सर्वतन्त्रसिद्धान्तः, प्रतितन्त्रसिद्धान्तः, अधिकरण-सिद्धान्तः, अभ्युपगमसिद्धान्तश्चेति।** च. वि. 8.37

1. सर्वतन्त्र सिद्धान्त
2. प्रतितन्त्र सिद्धान्त
3. अधिकरण सिद्धान्त
4. अभ्युपगम सिद्धान्त

सर्वतन्त्र सिद्धान्त (*Sarvatantra Siddhanta*)

- **परिभाषा: तत्र सर्वतन्त्रसिद्धान्तो नाम तस्मिंस्तस्मिन् सर्वस्मिंस्तन्त्रे**

तत्तत् प्रसिद्धं; यथा सन्ति निदानानि, सन्ति व्याधयः, सन्ति सिद्ध्युपायाः साध्यानामिति। च. वि. 8.37

सर्वतन्त्र सिद्धान्त उसको कहते हैं, जो उस-उस तन्त्र में अथवा सभी तन्त्रों में प्रसिद्ध हो।

- *उदाहरण: रोगों के निदान (कारण) हैं, अनेक प्रकार के रोग हैं, साध्य रोगों को सिद्ध करने के उपाय हैं, अर्थात् साध्य अवस्था में रहने पर ही चिकित्सा के लिए कहे गये प्रयत्न सफल होते हैं, सर्वत्र नहीं।*

***प्रतितन्त्र सिद्धान्त** (Pratitantra Siddhanta)*

- *परिभाषा:* ***प्रतितन्त्रसिद्धान्तो नाम तस्मिंस्तस्मिन्नेकैकस्मिंस्तन्त्रे तत्तत् प्रसिद्धं; यथा - अन्यत्राष्टौ रसाः षडत्र, पञ्चेन्द्रियाण्यत्र षडिन्द्रियाण्यन्यत्र तन्त्रे, वातादिकृताः सर्वे विकारा यथाऽन्यत्र, अत्र वातादिकृता भूतकृताश्च प्रसिद्धाः।*** च वि 8.37

उस-उस (आयुर्वेदीय) तन्त्र में अथवा किसी एक तन्त्र में वह (सिद्धान्त) प्राप्त होता हो, वह प्रतितन्त्र सिद्धान्त है।

- *उदाहरण: अन्य आचार्य ने आठ रसों (1. मधुर, 2. अम्ल, 3. लवण, 4. कटु, 5. तिक्त, 6. कषाय, 7. क्षार तथा 8. अव्यक्त) को माना है। चरकसंहिता में केवल 6 रस स्वीकार किये गये हैं। चरक संहिता में*

पांच ज्ञानेन्द्रियाँ मानी गई हैं, अन्य तन्त्र में मन को लेकर छः ज्ञानेन्द्रियाँ स्वीकृत हैं। अन्य तन्त्र में सभी प्रकार के रोग वात, पित्त, कफ से ही उत्पन्न होते हैं, कहा गया है किन्तु चरकसंहिता में वातज, पित्तज, कफज और भूतज सभी रोग माने गये हैं।

अधिकरण सिद्धान्त (*Adhikarana Siddhanta*)

- परिभाषा: **अधिकरणसिद्धान्तो नाम स यस्मिन्नधिकरणे प्रस्तूयमाने सिद्धान्यन्यान्यप्यधिकरणानि भवन्ति, यथा - 'न मुक्तः कर्मानुबन्धिकं कुरुते, निस्पृहत्वात्' इति प्रस्तुते सिद्धाः कर्मफल-मोक्ष-पुरुष-प्रेत्यभावा भवन्ति।** च.वि. 8.37

जिस अधिकरण (विषयविशेष) की चर्चा किसी प्रकार भी प्रारम्भ हो रही हो, उससे सम्बन्धित जितने भी दूसरे सिद्ध अधिकरण हों उन सबका एक स्थान पर दूसरे (अपने) प्रकरण की सिद्धि के लिए प्रयोग करना 'अधिकरण सिद्धान्त' है।

- उदाहरण: जीवन्मुक्त पुरुष कभी भी शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले कर्मों को नहीं करता, क्योंकि वह (जीवन्मुक्त) निस्पृह (किसी वस्तु की इच्छा करने वाला नहीं) होता है। इस प्रस्ताव से यह सिद्ध होता है कि - कर्मों का फल मिलता है, मोक्ष होता है, पुरुष है तथा प्रेत्यभाव (पुनर्जन्म) होता है।

अभ्युपगम सिद्धान्त (*Abhyupagama Siddhanta*)

- परिभाषा: **अभ्युपगमसिद्धान्तो नाम स यमर्थमसिद्धमपरीक्षित-मनुपदिष्टमहेतुकं वा वादकालेऽभ्युपगच्छन्ति भिषजः; तद्यथा - द्रव्यं प्रधानमिति कृत्वा वक्ष्यामः, गुणाः प्रधानमिति कृत्वा वक्ष्यामः, वीर्यं प्रधानमिति कृत्वा वक्ष्यामः, इत्येवमादिः।** च.वि. 8.37
- *जिस असिद्ध (जिसका निर्णय अभी तक न हुआ हो), जिस अपरीक्षित (जिस विषय की विद्वानों द्वारा परीक्षा न की गयी हो), जिस विषय का उचित प्रकार से उपदेश न हुआ हो तथा जिस अहेतुक (युक्ति द्वारा अप्रमाणित) विषय को विद्वान् चिकित्सक शास्त्रार्थ के समय स्वीकार कर लेते हैं, उसे अभ्युपगम सिद्धान्त कहा जाता है।*
- *उदाहरण: द्रव्य को प्रधान मानकर कहेंगे, गुण को प्रधान मानकर कहेंगे और वीर्य को प्रधान मानकर कहेंगे। इस प्रकार यह चार प्रकार का सिद्धान्त है।*

आयुर्वेद शास्त्र के मौलिक सिद्धान्त
(Basic Principles of Ayurveda)

- **त्रिसूत्र सिद्धान्त** (*Trisutra Siddhanta*)

आचार्य चरक ने सूत्रस्थान के प्रथम अध्याय (दीर्घञ्जीवितीयाध्याय) में त्रिविध सूत्रों या त्रिस्कन्धों का वर्णन किया है। यथा -

हेतुलिंगौषधज्ञानं स्वस्थातुरपरायणम्।
त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यं बुबुधे यं पितामहः।। च.सू. 1.24

जो स्वस्थ तथा आतुर (रूग्ण) से सम्बन्धित है और यह आयुर्वेद हेतु (स्वास्थ्य एवं विकार का कारण), लिंग (स्वस्थ व्यक्ति या रोगी के लक्षण) तथा औषध (स्वस्थहित एवं विकारप्रशमन) ज्ञानरूपी त्रिसूत्रों से युक्त, शाश्वत एवं पुण्यकारक है। इन त्रिसूत्रों को त्रिस्कन्ध भी कहा गया है। यथा-

सोऽनन्तरपारं त्रिस्कन्धमायुर्वेदं . . .। च.सू. 1.25

यह आयुर्वेद शास्त्र त्रिसूत्रात्मक या त्रिस्कन्धात्मक है, जिस पर यह आश्रित या टीका हुआ है।

1. हेतु-काल, बुद्धि और इन्द्रियों के विषयों का मिथ्यायोग, अयोग और अतियोग होना शरीर और मन के आधारभूत व्याधियों का त्रिविध हेतु (कारण) संग्रह है।

2. लिंग-पूर्वरूप की स्थिति अव्यक्त (अस्पष्ट) लक्षण ही स्पष्ट रूप में दिखलाई देते हैं, उनको लिंग या रूप कहते हैं। उस लिंग के पर्यायवाची शब्द हैं- लिंग, आकृति, लक्षण, चिह्न, संस्थान, व्यञ्जन और रूप।

3. औषध-औषध के तीन प्रकार हैं- दोषप्रशमन, धातुप्रदूषण और स्वस्थहित।

- **त्रयोपस्तम्भ सिद्धान्त** (*Trayopastambha Siddhanta*)

आचार्य चरक ने सूत्रस्थान के 11वें अध्याय (तिस्त्रैषणीयाध्याय) में त्रिविध उपस्तम्भों का उल्लेख किया है। यथा-

त्रय उपस्तम्भा इति- आहारः, स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति। च.सू. 11.35

आहार, स्वप्न अर्थात् निद्रा एवं ब्रह्मचर्यः ये तीन उपस्तम्भ हैं। जिस प्रकार तिपाई का आधार तीन लकड़ियाँ होती हैं, उसी प्रकार आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य रूपी तीन स्तम्भों पर यह शरीर आधारित है।

आचार्य वृद्ध वाग्भट ने ब्रह्मचर्य के स्थान पर अब्रह्मचर्य का वर्णन किया है।

- **त्रिदण्ड सिद्धान्त** (*Tridanda Siddhanta*)

सत्व, आत्मा एवं शरीर, ये तीनों दण्ड के समान हैं। इन तीनों के संयोग से लोक की स्थिति है। यथा-

सत्त्वमात्मा शरीरं च त्रयमेतत् त्रिदण्डवत्।
लोकस्तिष्ठति संयोगात्तत्र सर्वं प्रतिष्ठितम्।। च.सू. 1.46

- **चतुष्पाद सिद्धान्त** (*Chatushpada Siddhanta*)

'पाद' का अर्थ होता है चरण या पैर। इसी प्रकार चिकित्सा शास्त्र के भी 4 पैर अर्थात् पाद होते हैं, जिसके सहारे चिकित्सा सफल होती है।

यथा-

भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम्।
गुणवत् कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये।। च.सू. 9.3

सभी प्रकार के विकारों की शान्ति के लिये गुणवान् भिषक् (चिकित्सक), गुणयुक्त द्रव्य (औषध), गुणवान् उपस्थाता (परिचारक) एवं गुणसम्पन्न रूग्ण होना चाहिये।

भिषक्	द्रव्य	परिचारक	रूग्ण
श्रुते पर्यावदातत्वम्	बहुता	उपचारज्ञता	स्मृति
बहुशो दृष्टकर्मता	योग्य	दक्ष	निर्देशकारित्व
दक्ष	अनेकविधकल्पना	अनुराग	अभीरु
शुचि	सम्पत्	शुचि	ज्ञापकत्व

- **दोषधातुमल सिद्धान्त** (*Dosha – dhatu – mala Siddhanta*)

दोषधातुमलमूलं हि शरीरम्। सु.सू. 15.3
दोषधातुमला मूलं सदा देहस्य। अ.हृ.सू. 11.1

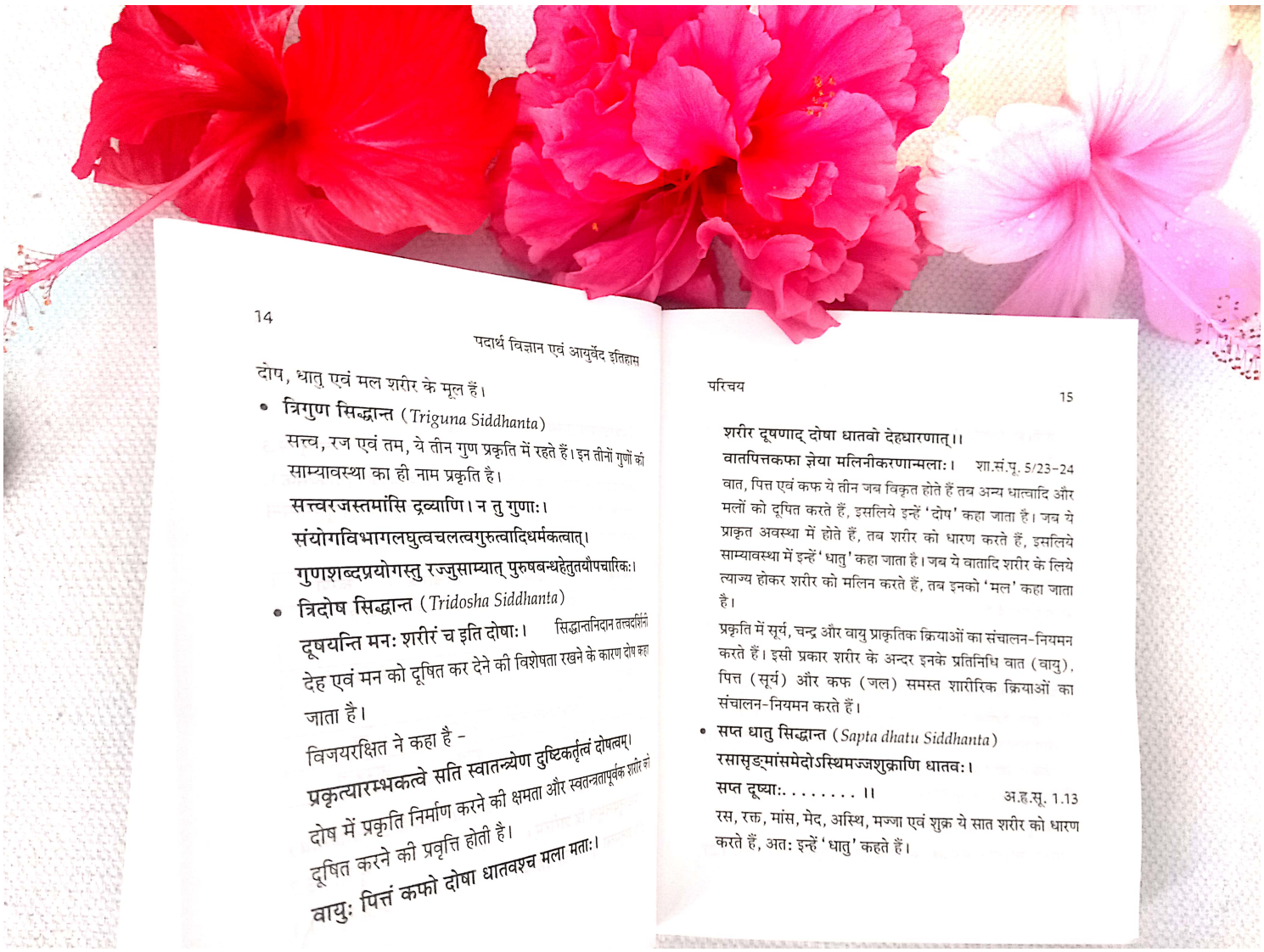

दोष, धातु एवं मल शरीर के मूल हैं।

- **त्रिगुण सिद्धान्त** (*Triguna Siddhanta*)

सत्त्व, रज एवं तम, ये तीन गुण प्रकृति में रहते हैं। इन तीनों गुणों की साम्यावस्था का ही नाम प्रकृति है।

सत्त्वरजस्तमांसि द्रव्याणि। न तु गुणाः।
संयोगविभागलघुत्वचलत्वगुरुत्वादिधर्मकत्वात्।
गुणशब्दप्रयोगस्तु रज्जुसाम्यात् पुरुषबन्धहेतुतयौपचारिकः।

- **त्रिदोष सिद्धान्त** (*Tridosha Siddhanta*)

दूषयन्ति मनः शरीरं च इति दोषाः। सिद्धान्तनिदान तत्त्वदर्शिन

देह एवं मन को दूषित कर देने की विशेषता रखने के कारण दोष कहा जाता है।

विजयरक्षित ने कहा है -

प्रकृत्यारम्भकत्वे सति स्वातन्त्र्येण दुष्टिकर्तृत्वं दोषत्वम्।

दोष में प्रकृति निर्माण करने की क्षमता और स्वतन्त्रतापूर्वक शरीर को दूषित करने की प्रवृत्ति होती है।

वायुः पित्तं कफो दोषा धातवश्च मला मताः।

शरीर दूषणाद् दोषा धातवो देहधारणात्।।
वातपित्तकफा ज्ञेया मलिनीकरणान्मलाः। शा.सं.पू. 5/23-24

वात, पित्त एवं कफ ये तीन जब विकृत होते हैं तब अन्य धात्वादि और मलों को दूषित करते हैं, इसलिये इन्हें 'दोष' कहा जाता है। जब ये प्राकृत अवस्था में होते हैं, तब शरीर को धारण करते हैं, इसलिये साम्यावस्था में इन्हें 'धातु' कहा जाता है। जब ये वातादि शरीर के लिये त्याज्य होकर शरीर को मलिन करते हैं, तब इनको 'मल' कहा जाता है।

प्रकृति में सूर्य, चन्द्र और वायु प्राकृतिक क्रियाओं का संचालन-नियमन करते हैं। इसी प्रकार शरीर के अन्दर इनके प्रतिनिधि वात (वायु), पित्त (सूर्य) और कफ (जल) समस्त शारीरिक क्रियाओं का संचालन-नियमन करते हैं।

- **सप्त धातु सिद्धान्त** (*Sapta dhatu Siddhanta*)

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जशुक्राणि धातवः।
सप्त दूष्याः. . . . . ।। अ.हृ.सू. 1.13

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा एवं शुक्र ये सात शरीर को धारण करते हैं, अतः इन्हें 'धातु' कहते हैं।

ये विकृत वातादि दोषों से दूषित होते हैं, इसलिये 'दूष्य' भी कहलाते हैं।

- **त्रिविध मल सिद्धान्त** (*Trividha Mala Siddhanta*)

मला मूत्रशकृत्स्वेदादयोऽपि च। अ.हृ.सू. 1.13

मूत्र, पुरीष एवं स्वेद तथा अन्य मल शरीर को मलिन करते हैं, अतः इन्हें मल कहते हैं। ये वातादि से दूषित होने के कारण 'दूष्य' कहलाते हैं।

- **षड् पदार्थ सिद्धान्त** (*Shad Padartha Siddhanta*)

आयुर्वेद शास्त्र षड्विध पदार्थों को स्वीकार करता है। ये षड् पदार्थ हैं

सामान्यं च विशेषं च गुणान् द्रव्याणि कर्म च।
समवायं च तज्ज्ञात्वा तन्त्रोक्तं विधिमास्थिताः।। च.सू. 1.28

सामान्य, विशेष, गुण, द्रव्य, कर्म एवं समवाय ये 6 पदार्थ हैं। कुछ लोग अभाव को भी एक सातवाँ पदार्थ मानते हैं। परन्तु आयुर्वेद ने उसे स्वीकार नहीं किया है।

- **पञ्चमहाभूत सिद्धान्त** (*Panchamahabhuta Siddhanta*)

महाभूतानि खं वायुरग्निरापः क्षितिस्तथा।
शब्दः स्पर्शश्च रूपञ्च रसो गन्धश्च तद्गुणाः।। च.शा. 1.27

आकाशपवनदहनतोयभूमिषु यथासंख्यमेकोत्तरपरिवृद्धाः शब्द-स्पर्शरूपरसगन्धाः। सु.सू. 42.3

ख (आकाश), वायु, अग्नि, आप (जल) और क्षिति (पृथिवी) ये पञ्चमहाभूत हैं। इनके क्रमशः गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गन्ध हैं। ये भूतों के नैसर्गिक गुण हैं। इसके अतिरिक्त पिछले-पिछले भूत के अगले-अगले भूत में अनुप्रवेश (सम्मिलन) से अगले-अगले भूत में पिछले भूतों के गुण भी आ जाते हैं।

- **रसादि पञ्च पदार्थ सिद्धान्त** (*Rasa etc. Pancha Padartha Siddhanta*)

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च।
पदार्थाः पञ्च तिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च।। भावमिश्र

षट् पदार्थों में जो द्रव्य एक पदार्थ है, उसमें षट् रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति होते हैं, जिन पर चिकित्सा आश्रित है।

- **षड् रस सिद्धान्त** (*Shad Rasa Siddhanta*)

रसनेन्द्रिय के विषय को रस कहते हैं। अर्थात् जिस गुण का रसना के द्वारा ग्रहण होता है वह रस कहलाता है। यथा-

रसनार्थो रसः।

रसनेन्द्रियग्राह्यो योऽर्थः स रसः। च.सू. 1/64 शि.

संख्या- इन रसों की संख्या 6 है। यथा-

रसास्तावत् षट्- मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायाः। च.वि. 1/4

- मधुर
- अम्ल
- लवण
- कटु
- तिक्त
- कषाय

- **स्वभावोपरमवाद** (*Swabhavoparama Vada – Theory of Self destruction*)

'स्वभावोपरम' का अर्थ होता है 'बिना कारण विनाश होना।' अर्थात् जहाँ कोई प्रत्यक्ष कारण न हो, वहाँ स्वभाव (प्रकृति) ही कारण हो जाता है। चरक ने सूत्रस्थान के 16वें अध्याय चिकित्साप्राभृतीयाध्याय में स्वभावोपरमवाद का उल्लेख किया है-

जायन्ते हेतुवैषम्याद् विषमा देहधातवः।
हेतुसाम्यात् समास्तेषां स्वभावोपरमः सदा।।
प्रवृत्तिहेतुर्भावानां न निरोधेऽस्ति कारणम्।
केचित् तत्रापि मन्यन्ते हेतुं हेतोरवर्तनम्।। च.सू. 16.27-28

हेतु की विषमता के कारण देहस्थ समस्त धातुयें विषम हो जाती हैं और ये हेतु की समता के कारण सम हो जाती हैं। उक्त धातुओं का उपरम स्वभाव से ही होता है। भावों की प्रवृत्ति ही रसादि धातुओं की उत्पत्ति में कारण होती है किन्तु विनाश में कोई कारण नहीं है, किन्तु कुछ आचार्यों का मत है कि कारण का न होना भी विनाश में एक कारण है।

- **त्रिविध एषणा सिद्धान्त** (*Trividha Eshana Siddhanta*)

चरक संहिता सूत्रस्थान के 11वें अध्याय में त्रिविध एषणाओं का वर्णन आया है। एषणा शब्द का अर्थ होता है **"तत् तत् विषय की प्राप्ति-इच्छा"**। ये त्रिविध एषणायें हैं-

- प्राणैषणा
- धनैषणा
- परलोकैषणा

इह खलु पुरुषेणानुपहतसत्त्वबुद्धिपौरुषपराक्रमेण हितमिह चामुष्मिंश्च लोके समनुपश्यता तिस्र एषणाः पर्येष्टव्या भवन्ति। तद्यथा-प्राणैषणा, धनैषणा, परलोकैषणेति। च.सू. 11.3

- **षड्विध क्रियाकाल सिद्धान्त** (*Shadvidha Kriyakala Siddhanta*)

सुश्रुत ने सूत्रस्थान के 21वें अध्याय में 6 क्रियाकालों का वर्णन किया है। व्याधि निर्माण की प्रक्रिया को 'क्रियाकाल' कहा गया है। 'क्रिया'

का अर्थ होता है: चिकित्सा तथा 'काल' का अर्थ होता है अवसर। अतः 'क्रियाकाल' का अर्थ होता है: **'चिकित्सा का अवसर'**। ये संख्या में 6 हैं। यथा —

सञ्चयं च प्रकोपं च प्रसरं स्थानसंश्रयम्।
व्यक्तिं भेदञ्च यो वेत्ति दोषाणां स भवेद्भिषक्।। सु.सू. 21.36

- सञ्चय
- प्रकोप
- प्रसर
- स्थानसंश्रय
- व्यक्ति
- भेद

- **पुनर्जन्म एवं मोक्ष सिद्धान्त** (*Punarjanma & Moksha Siddhanta*)

  आयुर्वेद पुनर्जन्म एवं मोक्ष के सिद्धान्त को मानता है और इसी के अनुसार इसकी सारी क्रियाएँ, समस्त उपदेश एवं समस्त क्रम वर्णित हैं।

- **निदानपञ्चक सिद्धान्त** (*Nidana Panchaka Siddhanta*)
- **चिकित्सा सिद्धान्त** (*Chikitsa Siddhanta*)
- **पञ्चकर्म सिद्धान्त आदि** (*Panchakarma Siddhanta*)।

दर्शन (*Darshana*)

व्युत्पत्ति (*Etymological derivation*)

- दृश् धातु में ल्युट् प्रत्यय करने पर दर्शन शब्द बनता है।
- **दृश्यते अनेन इति दर्शनम्।**
  जो शास्त्र जीवन को यथार्थ रूप से देखने और समझने की वास्तविक दृष्टि प्रदान करता है, उसे दर्शन कहते हैं। दूसरे शब्दों में जिससे सत्य तत्त्व का दर्शन होता है, वही दर्शन है।
- पाश्चात्य भाषा में यह '*Philosophy*' कहलाता है जिसका सामान्य अर्थ होता है जिसके अध्ययन से विश्व के अपूर्व तथा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर उनके रहस्यों को जानने का प्रयत्न किया जा सके।

दर्शन के मुख्य चिन्तनीय विषय: 4 (*Important subjects of Darshana*)

1. **हेय:** दु:ख का वास्तविक स्वरूप क्या है? जो त्याज्य है।
2. **हेयहेतु:** दु:खोत्पत्ति का वास्तविक कारण क्या है?
3. **हान:** दु:ख का नितान्त अभाव क्या है?
4. **हानोपाय:** नितान्त दु:खनिवृत्ति का साधन क्या है?

संख्या एवं विभाजन (*Number and classification*)

दर्शन के प्रकार: 2

1. भारतीय दर्शन
2. पाश्चात्य दर्शन

भारतीय दर्शन के प्रकार:

1. आस्तिक दर्शन (**अस्ति परलोक इत्येवं मतिर्यस्य स आस्तिकः।**)
2. नास्तिक दर्शन (**नास्ति परलोक इत्येवं मतिर्यस्य स नास्तिकः।**)

आस्तिक दर्शन एवं नास्तिक दर्शन के मानक:

	आस्तिक दर्शन	नास्तिक दर्शन
1	ईश्वर है	ईश्वर नहीं है
2	परलोक है	परलोक नहीं है
3	वेदानुकूल विचारधारा वाला	वेद के प्रतिकूल विचारधारा वाला

आस्तिक दर्शन (*Astika Darshana*)

1. न्याय दर्शन (आन्वीक्षिकी, तर्कविद्या, वादविद्या आदि)
2. वैशेषिक दर्शन (औलूक्यदर्शन)

3. सांख्य दर्शन
4. योग दर्शन (सेश्वरसांख्य)
5. मीमांसा दर्शन (पूर्व मीमांसा)
6. वेदान्त दर्शन (उत्तर मीमांसा)

नास्तिक दर्शन (*Nastika Darshana*)

1. चार्वाक दर्शन (लोकायत)
2. बौद्ध दर्शन
3. जैन दर्शन

- तथ्य: जैन दर्शन एवं बौद्ध दर्शन कर्म सिद्धान्त को मानते हैं, अत: परलोक की सत्ता में भी विश्वास रखते है। इस दृष्टि से केवल चार्वाक दर्शन को ही नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत लेना चाहिए।

दर्शन शास्त्र एवं उनके प्रवर्त्तक (*Darshana and their Propagators*)

	दर्शन	**प्रवर्त्तक**
1	वैशेषिक	महर्षि कणाद
2	न्याय	महर्षि गौतम

	दर्शन	प्रवर्त्तक
3	सांख्य	महर्षि कपिल
4	योग	महर्षि पतञ्जलि
5	मीमांसा	महर्षि जैमिनी
6	वेदान्त	महर्षि बादरायण या महर्षि वेदव्यास

नास्तिक दर्शन (*Nastika Darshana*)

	दर्शन	प्रवर्त्तक
1	चार्वाक	बृहस्पति
2	जैन	वर्द्धमान महावीर
3	बौद्ध	गौतम बुद्ध

समान तन्त्र (*Samana Tantra*)

1. न्याय दर्शन और वैशेषिक दर्शन
2. सांख्य दर्शन और योग दर्शन
3. मीमांसा दर्शन और वेदान्त दर्शन

न्याय दर्शन (Nyaya Darshana)

प्रवर्त्तक: महर्षि गौतम/ गोतम/ अक्षपाद

पर्याय नाम:- तर्कशास्त्र - प्रमाणशास्त्र - हेतुविद्या- हेतुशास्त्र- वादविद्या - आन्वीक्षिकी - अक्षपाद दर्शन

तथ्य:

- न्याय का अर्थ है - भाँति - भाँति के प्रमाणों द्वारा वस्तुतत्त्व की परीक्षा करना। यथा —
  प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय:। न्याय सूत्र वात्स्यायन भाष्य
- इस दर्शन का विषय आन्वीक्षिकी विद्या या तर्क विद्या है।
- इनके अनुसार विभिन्न प्रमाणों के द्वारा वस्तुतत्त्व की परीक्षा करना न्याय है। इसीलिए इस दर्शन को न्याय कहा गया है।
- इस दर्शन में वस्तु या सृष्टिगत पदार्थों का परीक्षण करने (न्याय करने) के लिए सोलह पदार्थों का वर्णन किया गया है तथा कहा गया है कि इनके द्वारा तत्त्वज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। **सोलह पदार्थ** हैं -
  (1) प्रमाण (2) प्रमेय (3) संशय (4) प्रयोजन
  (5) दृष्टान्त (6) सिद्धान्त (7) अवयव (8) तर्क
  (9) निर्णय (10) वाद (11) जल्प (12) वितण्डा
  (13) हेत्वाभास (14) छल (15) जाति
  (16) निग्रहस्थान।

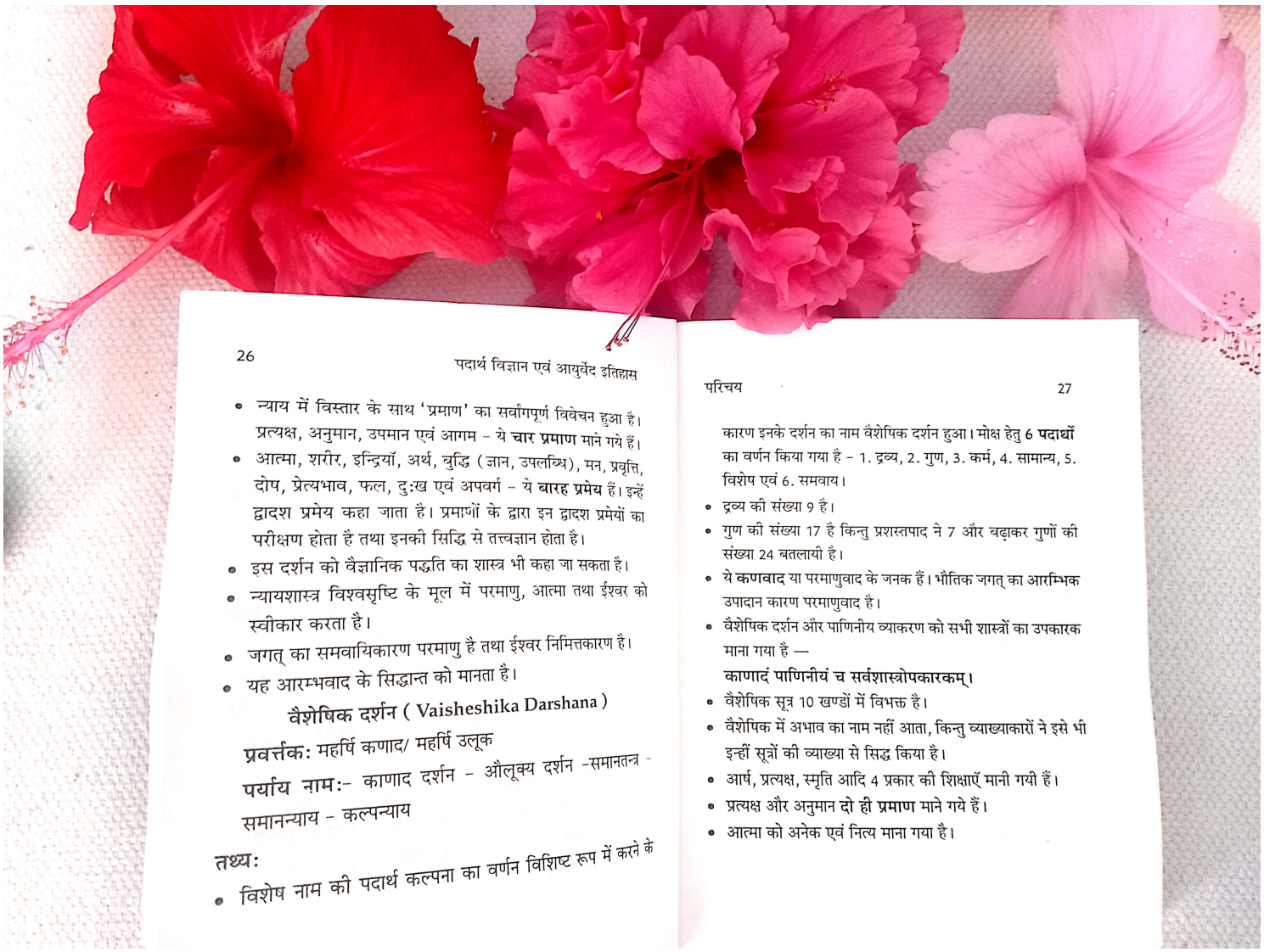

- न्याय में विस्तार के साथ 'प्रमाण' का सर्वांगपूर्ण विवेचन हुआ है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं आगम - ये **चार प्रमाण** माने गये हैं।
- आत्मा, शरीर, इन्द्रियाँ, अर्थ, बुद्धि (ज्ञान, उपलब्धि), मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख एवं अपवर्ग - ये **बारह प्रमेय** हैं। इन्हें द्वादश प्रमेय कहा जाता है। प्रमाणों के द्वारा इन द्वादश प्रमेयों का परीक्षण होता है तथा इनकी सिद्धि से तत्त्वज्ञान होता है।
- इस दर्शन को वैज्ञानिक पद्धति का शास्त्र भी कहा जा सकता है।
- न्यायशास्त्र विश्वसृष्टि के मूल में परमाणु, आत्मा तथा ईश्वर को स्वीकार करता है।
- जगत् का समवायिकारण परमाणु है तथा ईश्वर निमित्तकारण है।
- यह आरम्भवाद के सिद्धान्त को मानता है।

वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika Darshana)

प्रवर्त्तक: महर्षि कणाद/ महर्षि उलूक

पर्याय नाम:- काणाद दर्शन - औलूक्य दर्शन -समानतन्त्र - समानन्याय - कल्पन्याय

तथ्य:

- विशेष नाम की पदार्थ कल्पना का वर्णन विशिष्ट रूप में करने के

कारण इनके दर्शन का नाम वैशेषिक दर्शन हुआ। मोक्ष हेतु **6 पदार्थों** का वर्णन किया गया है - 1. द्रव्य, 2. गुण, 3. कर्म, 4. सामान्य, 5. विशेष एवं 6. समवाय।

- द्रव्य की संख्या 9 है।
- गुण की संख्या 17 है किन्तु प्रशस्तपाद ने 7 और बढ़ाकर गुणों की संख्या 24 बतलायी है।
- ये **कणवाद** या परमाणुवाद के जनक हैं। भौतिक जगत् का आरम्भिक उपादान कारण परमाणुवाद है।
- वैशेषिक दर्शन और पाणिनीय व्याकरण को सभी शास्त्रों का उपकारक माना गया है —

  काणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम्।
- वैशेषिक सूत्र 10 खण्डों में विभक्त है।
- वैशेषिक में अभाव का नाम नहीं आता, किन्तु व्याख्याकारों ने इसे भी इन्हीं सूत्रों की व्याख्या से सिद्ध किया है।
- आर्ष, प्रत्यक्ष, स्मृति आदि 4 प्रकार की शिक्षाएँ मानी गयी हैं।
- प्रत्यक्ष और अनुमान **दो ही प्रमाण** माने गये हैं।
- आत्मा को अनेक एवं नित्य माना गया है।

- जीव के दु:ख का कारण मिथ्या -ज्ञान को माना गया है।
- यह **बाह्यार्थवादी** है। आत्मा और बाह्य पदार्थों को सत्य मानता है।
- यह **तत्त्वमीमांसा** को महत्त्व देता है।
- यह **आरम्भवाद** को मानता है।

सांख्य दर्शन (Samkhya Darshana)

प्रवर्त्तक: महर्षि कपिल

तथ्य:

- सांख्य शब्द '**संख्या**' शब्द से उत्पन्न हुआ है; संख्या का अर्थ है सम्यक् ख्यान अर्थात् सम्यक् ज्ञान या विवेक ज्ञान।
- इसका मुख्य सिद्धान्त '**द्वैतवाद**' अर्थात् प्रकृति एवं पुरुष है।
- **प्रमाण** 3 हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द।
- **तत्त्वों** की संख्या 25 है जो 4 में विभक्त है -
  - प्रकृति
  - प्रकृति-विकृति
  - विकृति
  - न प्रकृति न विकृति

- यह **निरीश्वरवाद** का समर्थक है।
- यह **परिणामवाद** का समर्थक है।
- शंकराचार्य ने सांख्य को वेदान्त का '**प्रधान मल्ल**' (प्रमुख प्रतिपक्षी) कहा है।

योग दर्शन (Yoga Darshana)

प्रवर्त्तक: महर्षि पतञ्जलि

पर्याय नाम:- सेश्वर सांख्य

तथ्य:

- योग शब्द जोड़ने अर्थ में 'युज्' धातु से बनता है। अत: यह दर्शन चित्तवृत्ति - निरोध के द्वारा जीवात्मा का लय परमात्मा में करने की शिक्षा देता है।
- यह ईश्वर को मानता है।
- प्रकृति जगत् का उपादान कारण है तथा ईश्वर जगत् का निमित्त कारण है।
- यह **परिणामवाद** को मानता है।
- योग के समान बल नहीं होता है-**नास्ति योगसमं बलम्।**

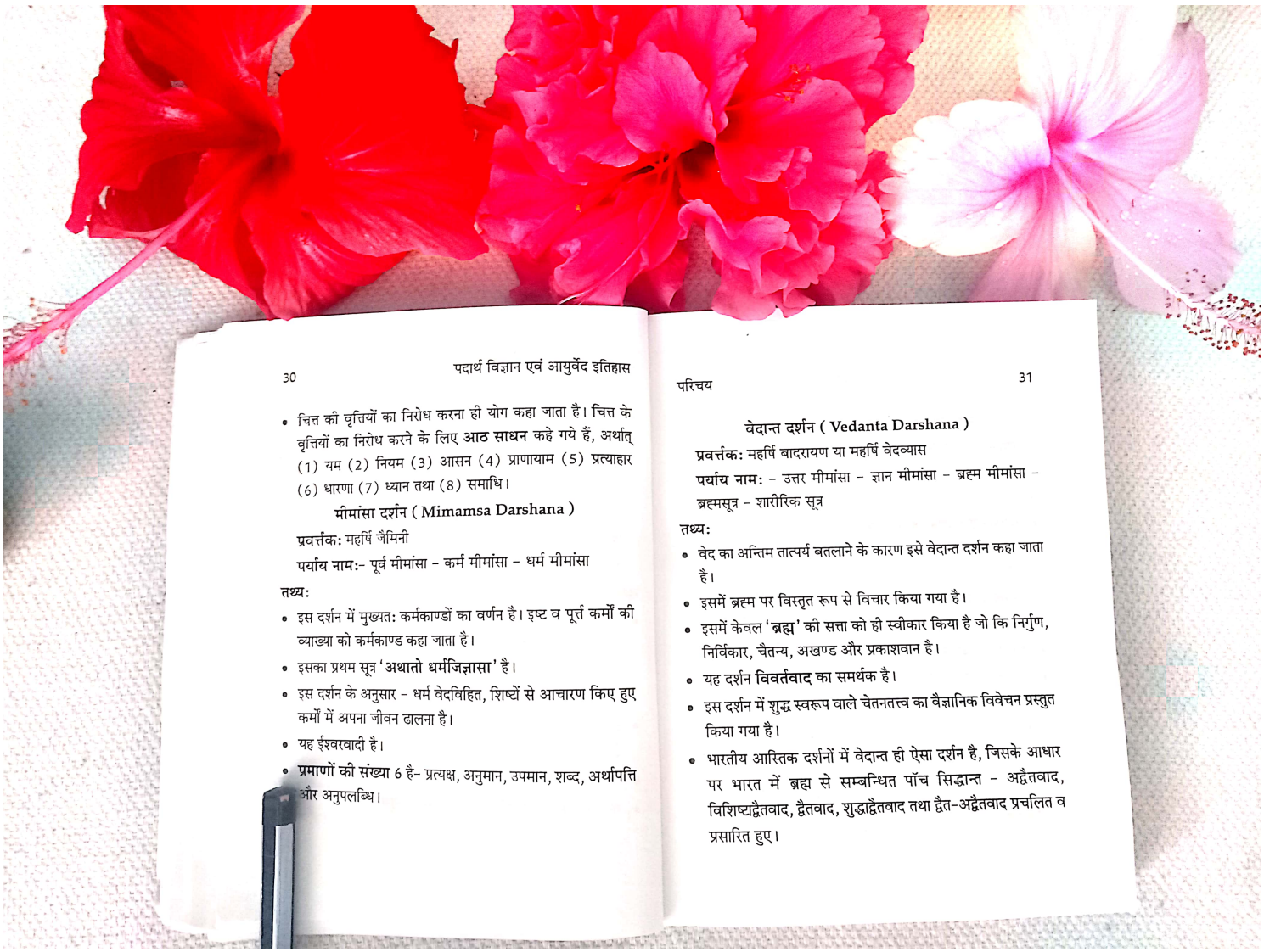

- चित्त की वृत्तियों का निरोध करना ही योग कहा जाता हैं। चित्त के वृत्तियों का निरोध करने के लिए **आठ साधन** कहे गये हैं, अर्थात् (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान तथा (8) समाधि।

मीमांसा दर्शन (Mimamsa Darshana)

प्रवर्त्तक: महर्षि जैमिनी

पर्याय नाम:- पूर्व मीमांसा - कर्म मीमांसा - धर्म मीमांसा

तथ्य:

- इस दर्शन में मुख्यत: कर्मकाण्डों का वर्णन है। इष्ट व पूर्त्त कर्मों की व्याख्या को कर्मकाण्ड कहा जाता है।
- इसका प्रथम सूत्र '**अथातो धर्मजिज्ञासा**' है।
- इस दर्शन के अनुसार - धर्म वेदविहित, शिष्टों से आचारण किए हुए कर्मों में अपना जीवन ढालना है।
- यह ईश्वरवादी है।
- **प्रमाणों की संख्या** 6 है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि।

वेदान्त दर्शन (Vedanta Darshana)

प्रवर्त्तक: महर्षि बादरायण या महर्षि वेदव्यास

पर्याय नाम: - उत्तर मीमांसा - ज्ञान मीमांसा - ब्रह्म मीमांसा - ब्रह्मसूत्र - शारीरिक सूत्र

तथ्य:

- वेद का अन्तिम तात्पर्य बतलाने के कारण इसे वेदान्त दर्शन कहा जाता है।
- इसमें ब्रह्म पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है।
- इसमें केवल '**ब्रह्म**' की सत्ता को ही स्वीकार किया है जो कि निर्गुण, निर्विकार, चैतन्य, अखण्ड और प्रकाशवान है।
- यह दर्शन **विवर्तवाद** का समर्थक है।
- इस दर्शन में शुद्ध स्वरूप वाले चेतनतत्त्व का वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।
- भारतीय आस्तिक दर्शनों में वेदान्त ही ऐसा दर्शन है, जिसके आधार पर भारत में ब्रह्म से सम्बन्धित पाँच सिद्धान्त - अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद तथा द्वैत-अद्वैतवाद प्रचलित व प्रसारित हुए।

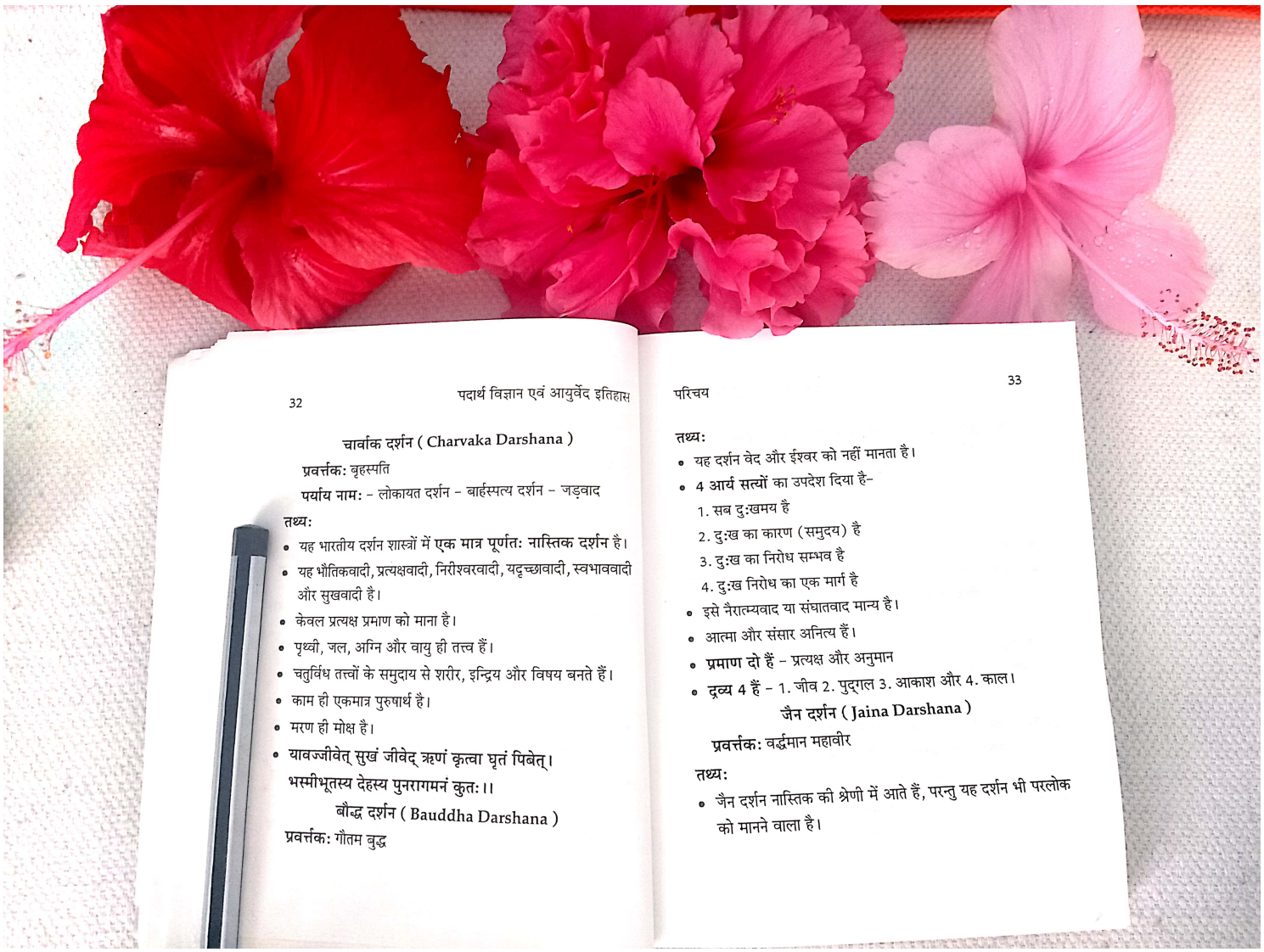

चार्वाक दर्शन (Charvaka Darshana)

प्रवर्त्तक: बृहस्पति

पर्याय नाम: - लोकायत दर्शन - बार्हस्पत्य दर्शन - जड़वाद

तथ्य:

- यह भारतीय दर्शन शास्त्रों में **एक मात्र पूर्णतः नास्तिक दर्शन** है।
- यह भौतिकवादी, प्रत्यक्षवादी, निरीश्वरवादी, यदृच्छावादी, स्वभाववादी और सुखवादी है।
- केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को माना है।
- पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ही तत्त्व हैं।
- चतुर्विध तत्त्वों के समुदाय से शरीर, इन्द्रिय और विषय बनते हैं।
- काम ही एकमात्र पुरुषार्थ है।
- मरण ही मोक्ष है।
- **यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।**
  भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

बौद्ध दर्शन (Bauddha Darshana)

प्रवर्त्तक: गौतम बुद्ध

तथ्य:

- यह दर्शन वेद और ईश्वर को नहीं मानता है।
- **4 आर्य सत्यों** का उपदेश दिया है-
  1. सब दु:खमय है
  2. दु:ख का कारण (समुदय) है
  3. दु:ख का निरोध सम्भव है
  4. दु:ख निरोध का एक मार्ग है
- इसे नैरात्म्यवाद या संघातवाद मान्य है।
- आत्मा और संसार अनित्य हैं।
- **प्रमाण दो हैं** - प्रत्यक्ष और अनुमान
- **द्रव्य 4 हैं** - 1. जीव 2. पुद्गल 3. आकाश और 4. काल।

जैन दर्शन (Jaina Darshana)

प्रवर्त्तक: वर्द्धमान महावीर

तथ्य:

- जैन दर्शन नास्तिक की श्रेणी में आते हैं, परन्तु यह दर्शन भी परलोक को मानने वाला है।

- यह दर्शन षड्पदार्थवादी है; परन्तु ये पदार्थ या द्रव्य के रूप में (1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) काल (5) पुद्गल तथा (6) जीव को स्वीकार करते हैं।
- मोक्ष प्राप्ति तीन उपायों द्वारा सम्भव है -(1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान तथा (3) सम्यक् चरित्र।
- **प्रमाण 3 हैं** - शब्द, प्रत्यक्ष और अनुमान।
- इस दर्शन में '**स्याद्वाद**' है अर्थात् इस बाह्य जगत् के बारे में कोई इनका निश्चित मत नहीं है।

पदार्थ (Padartha)

पद (*Pada*)

- **सुप्तिङन्तं पदम्। सुबन्तं तिङन्तं च पदसंज्ञं स्यात्।**

पाणिनीयाष्टाध्यायी 1/4/14

सुबन्त और तिङन्त को पद कहते हैं। उदाहरण: राम, श्याम, गोपाल आदि सुबन्त हैं तथा भवति, गच्छति, पठति आदि तिङन्त हैं। इन्हें पद कहा जाता है।

- **शक्तं पदम्।**

न्यायदर्शन

शक्ति विशिष्ट युक्त को पद कहते हैं। अमुक पद से अमुक अर्थ का ग्रहण होना।

- **पदनाम् सुप्तिङ्प्रत्ययान्तो यो वर्णसमुदाय एकाक्षरो वाऽर्थजुष्ट-स्तत्पदम्।**

पदार्थ विज्ञान –सत्यनारायण शास्त्री

सुप् तिङ् प्रत्ययान्त अर्थयुक्त जो अक्षर समूह अथवा एकाक्षर हो, उसे पद कहते हैं।

पद भेद (*Types of Pada*)

- 3
  1. रूढ़
  2. यौगिक
  3. योगरूढ़

अर्थ (*Artha*)

- **अर्थशब्देन तु ये शब्दादयोऽभिधीयन्ते ते स्थूलखादिरूपा एव ज्ञेया:।**

च.शा. 1.31 पर चक्रपाणि

जो 'ज्ञेय' या जो जानने योग्य हो उसे अर्थ कहते हैं।

- **ऋच्छन्ति इन्द्रियाणि इति अर्थ:।**

इन्द्रियाँ जिसे प्राप्त करती हैं वह अर्थ है।

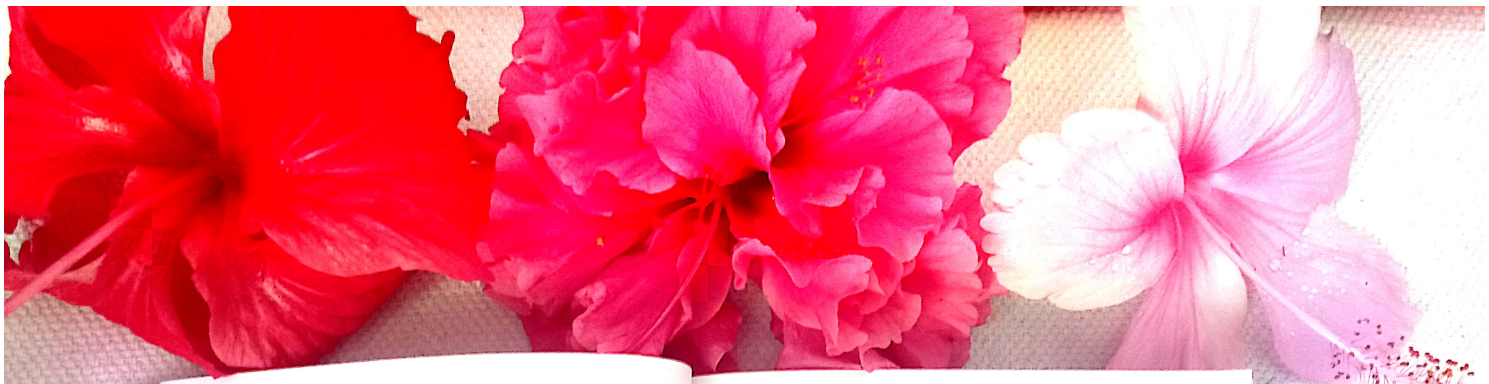

पदार्थ *(Padartha)*

- **अर्थः पदस्य।** च.सि. 12/41

  पद का अर्थ पदार्थ है।

- **पदार्थो नाम पदस्य पदयोः पदानां वाऽर्थ पदार्थः।** चक्रपाणि

  एक पद, दो पद अथवा बहुत पदों का अर्थ पदार्थ है।

- **पदप्रतिपाद्योऽर्थः।** तात्पर्य टीका

  पद से प्रतिपादित होने योग्य अर्थ को पदार्थ कहते हैं।

- **योऽर्थोऽभिहितः सूत्रे पदे वा स पदार्थः, पदस्य पदयोः पदानां वाऽर्थः पदार्थः, अपरिमिताश्च पदार्थाः।** सु.उ. 65.10

- **पद्यते गम्यते येनार्थ इति सूत्रस्यापि पदत्वात् सूत्रे योऽर्थः प्रतिपादितः स पदार्थः।** डल्हणाचार्य

  एक पद, दो पद या अनेक पदों के मेल को पदार्थ कहते हैं। जिससे किसी विषय विशेष या अर्थ का ज्ञान होता है, वह पदार्थ कहलाता है।

- **अभिधेयत्वं पदार्थसामान्यलक्षणम्।** तर्कदीपिका

  अभिधेय अर्थात् किसी नाम को धारण करने वाली वस्तु या विषय पदार्थ है।

- **प्रमितिविषयाः पदार्थाः।** सप्तपदार्थी

  प्रमिति अर्थात् ज्ञान का विषय होना पदार्थ कहलाता है।

- **षण्णामपि पदार्थानामस्तित्वाभिधेयत्वज्ञेयत्वानि।** प्रशस्तपाद भाष्य

- जिसमें अस्तित्व (जो विद्यमान हो), अभिधेयत्व (नामकरण योग्य हो) तथा ज्ञेयत्व (जानने योग्य) हो वह पदार्थ कहलाता है।

पदार्थ संख्या *(Number of Padarthas)*

- **सामान्यं च विशेषं च गुणान् द्रव्याणि कर्म च।**
  समवायं च तज्ज्ञात्वा तन्त्रोक्तं विधिमास्थिताः।। च.सू. 1.28

  ये षड् पदार्थ हैं - सामान्य - विशेष - गुण - द्रव्य - कर्म - समवाय।

- **अपरिमिताश्चपदार्थाः।** सु.उ. 65.10

  पदार्थ अपरिमित अर्थात् असंख्य हैं।

- **धर्मविशेषप्रसूताद् द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायानां पदार्थानां साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसम्।** वै.द. 1.4

  वैशेषिक दर्शनकार महर्षि कणाद ने भी इन्हीं 6 पदार्थों को माना है। किन्तु व्याख्याकारों ने 7 पदार्थों की गणना की है और यह 7वाँ पदार्थ अभाव है।

विभिन्न मतों के अनुसार पदार्थों की संख्या
(Number of Padarthas – as per various views)

संदर्भ	संख्या	पदार्थ
आयुर्वेद	6	- सामान्य - विशेष - गुण - द्रव्य - कर्म - समवाय
वैशेषिक	6	- द्रव्य - गुण - कर्म - सामान्य - विशेष - समवाय
तर्कसंग्रह/नवन्याय	7	- द्रव्य - गुण - कर्म - सामान्य - विशेष - समवाय - अभाव
सुश्रुत	असंख्य	
रामानुजाचार्य एवं निम्बार्काचार्य	3	- ईश्वर - चित्त - अचित्
वेदान्त	2	- आत्मरूप - अनात्मरूप
मीमांसा	8	-द्रव्य- गुण- कर्म- सामान्य- परतन्त्रता- शक्ति- सादृश्य- संख्या

संदर्भ	संख्या	पदार्थ
जैन	7	-जीव- अजीव- आश्रव- बन्ध- सम्बर- निर्जरा- मोक्ष
न्याय	16	
सांख्य	25	
कुमारिल	5	-द्रव्य- गुण- कर्म- सामान्य- अभाव

❖❖❖

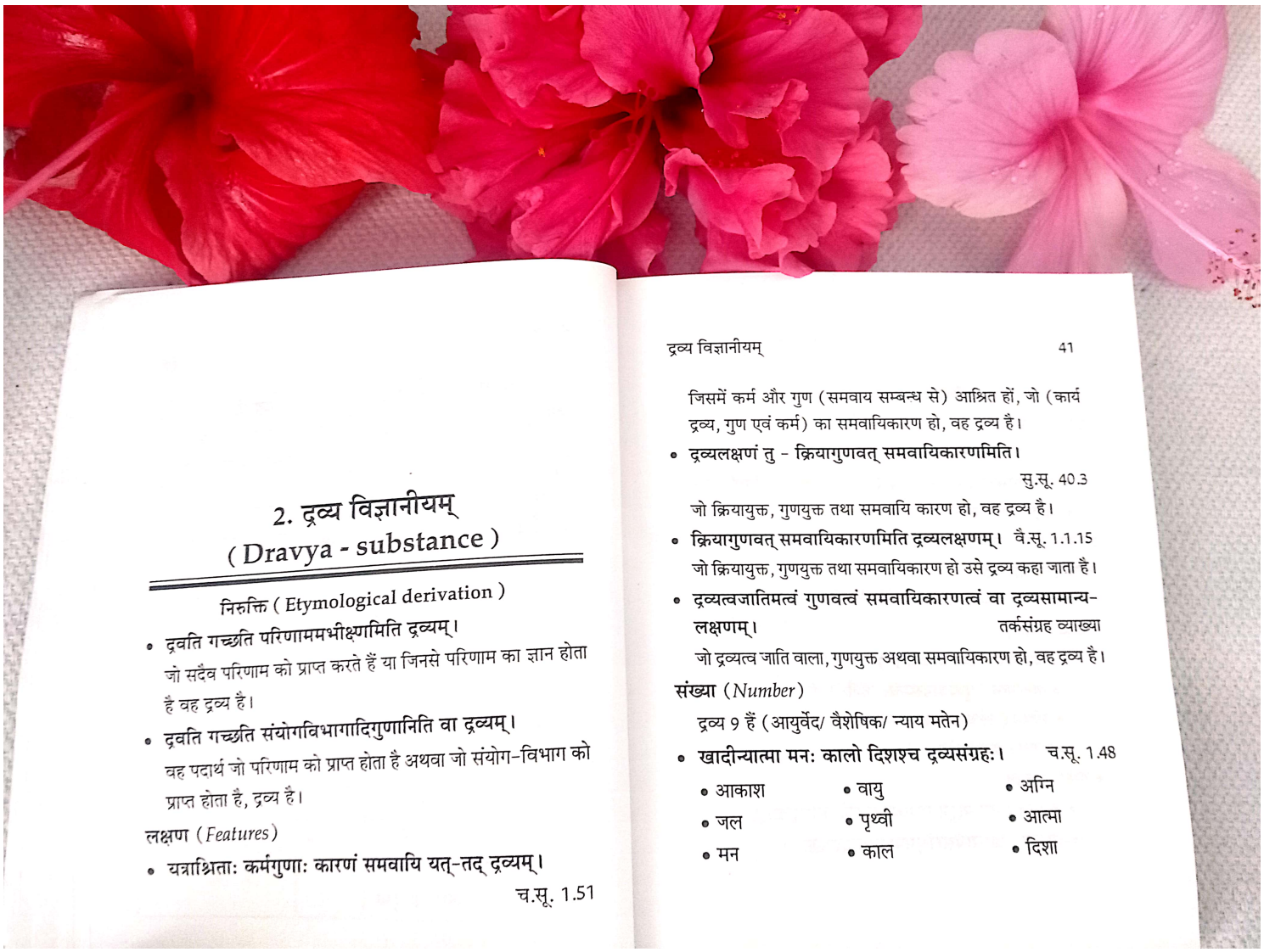

2. द्रव्य विज्ञानीयम्
(Dravya - substance)

निरुक्ति (Etymological derivation)

- **द्रवति गच्छति परिणाममभीक्ष्णमिति द्रव्यम्।**
  जो सदैव परिणाम को प्राप्त करते हैं या जिनसे परिणाम का ज्ञान होता है वह द्रव्य है।
- **द्रवति गच्छति संयोगविभागादिगुणानिति वा द्रव्यम्।**
  वह पदार्थ जो परिणाम को प्राप्त होता है अथवा जो संयोग-विभाग को प्राप्त होता है, द्रव्य है।

लक्षण (*Features*)

- **यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत्-तद् द्रव्यम्।**
  च.सू. 1.51

जिसमें कर्म और गुण (समवाय सम्बन्ध से) आश्रित हों, जो (कार्य द्रव्य, गुण एवं कर्म) का समवायिकारण हो, वह द्रव्य है।

- **द्रव्यलक्षणं तु - क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति।**
  सु.सू. 40.3
  जो क्रियायुक्त, गुणयुक्त तथा समवायि कारण हो, वह द्रव्य है।
- **क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्।** वै.सू. 1.1.15
  जो क्रियायुक्त, गुणयुक्त तथा समवायिकारण हो उसे द्रव्य कहा जाता है।
- **द्रव्यत्वजातिमत्वं गुणवत्वं समवायिकारणत्वं वा द्रव्यसामान्य-लक्षणम्।** तर्कसंग्रह व्याख्या
  जो द्रव्यत्व जाति वाला, गुणयुक्त अथवा समवायिकारण हो, वह द्रव्य है।

संख्या (*Number*)

द्रव्य 9 हैं (आयुर्वेद/ वैशेषिक/ न्याय मतेन)

- **खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः।** च.सू. 1.48
  - आकाश
  - वायु
  - अग्नि
  - जल
  - पृथ्वी
  - आत्मा
  - मन
  - काल
  - दिशा

वर्गीकरण (Classification)

द्रव्य के दो भेद

1. कारण द्रव्य (संख्या: 9)
   - मूर्त्त/ परमाणु द्रव्य (5: - वायु - तेज - जल - पृथिवी - मन)
   - अमूर्त्त/ विभु द्रव्य (4: - आकाश - काल - दिशा - आत्मा)
2. कार्य द्रव्य (संख्या: असंख्य)

कार्य द्रव्य के भेद

1. चेतन द्रव्य (सेन्द्रिय)
   - अन्तश्चेतन
     - वनस्पति (**फलैर्वनस्पतिः**)
     - वानस्पत्य (**पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैः**)
     - औषध (**ओषध्यः फलपाकान्ताः**)
     - वीरुध (**प्रतानैर्वीरुधः**)
   - बहिरन्तश्चेतन
     - जरायुज (**तत्र पशुमनुष्यव्यालादयो जरायुजाः**)
     - अण्डज (**खगसर्पसरीसृपप्रभृतयोऽण्डजाः**)

     - स्वेदज (**कृमिकीटपिपीलकाप्रभृतयः**)
     - उद्भिज्ज (**इन्द्रगोपादि**)
2. अचेतन द्रव्य (निरिन्द्रिय)
   - खनिज
     - धातु
     - अधातु
   - कृत्रिम

द्रव्य के अन्य भेद

1. **योनि भेद से:** 3
   1. जांगम द्रव्य/ जान्तव द्रव्य
   2. औद्भिद् द्रव्य/ वानस्पतिक द्रव्य
      - क. वनस्पति
      - ख. वानस्पत्य
      - ग. औषध
      - घ. वीरुध
   3. पार्थिव द्रव्य/ भौम द्रव्य

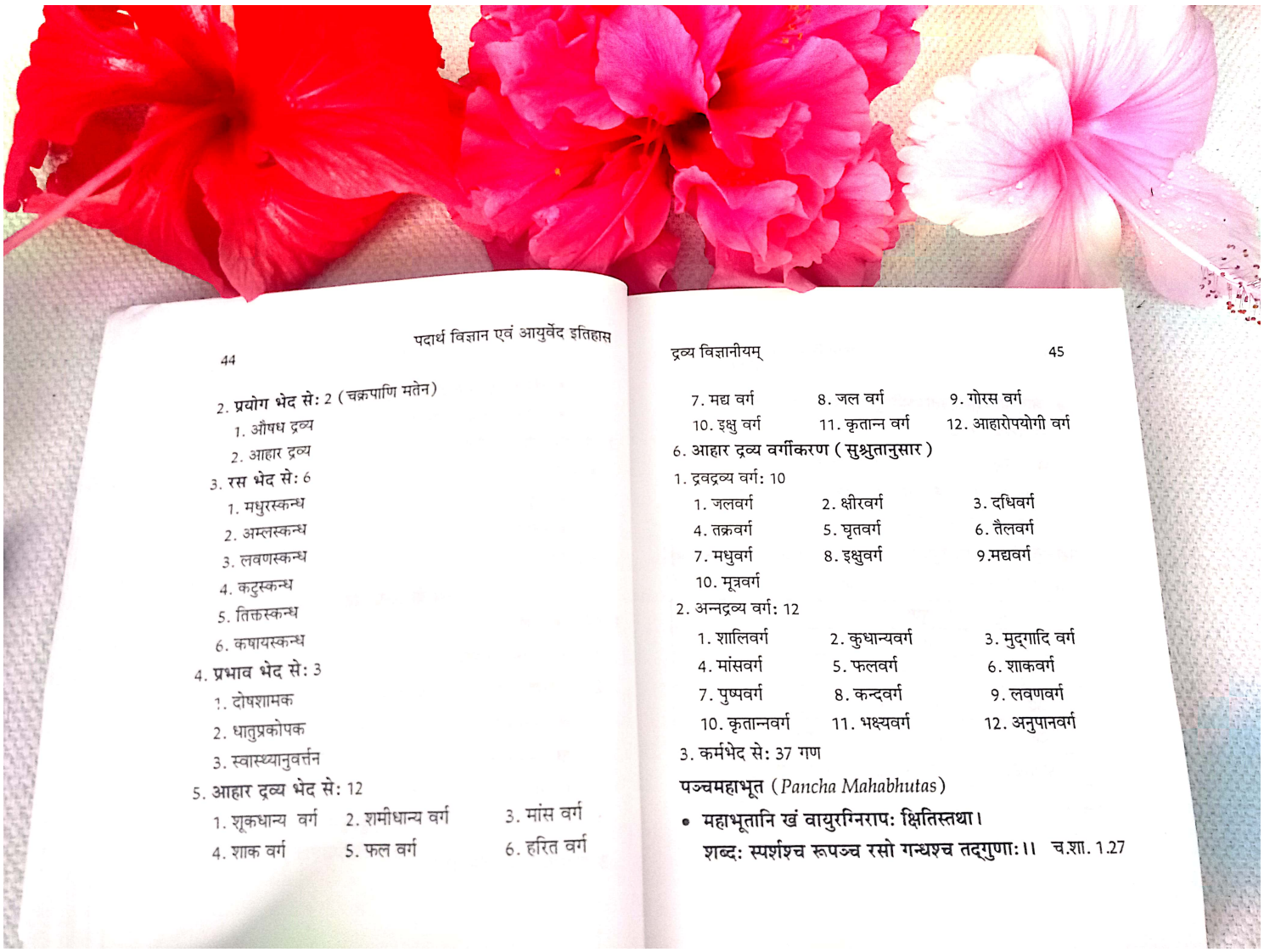

2. **प्रयोग भेद से:** 2 (चक्रपाणि मतेन)
   1. औषध द्रव्य
   2. आहार द्रव्य
3. **रस भेद से:** 6
   1. मधुरस्कन्ध
   2. अम्लस्कन्ध
   3. लवणस्कन्ध
   4. कटुस्कन्ध
   5. तिक्तस्कन्ध
   6. कषायस्कन्ध
4. **प्रभाव भेद से:** 3
   1. दोषशामक
   2. धातुप्रकोपक
   3. स्वास्थ्यानुवर्त्तन
5. **आहार द्रव्य भेद से:** 12

1. शूकधान्य वर्ग	2. शमीधान्य वर्ग	3. मांस वर्ग
4. शाक वर्ग	5. फल वर्ग	6. हरित वर्ग

7. मद्य वर्ग	8. जल वर्ग	9. गोरस वर्ग
10. इक्षु वर्ग	11. कृतान्न वर्ग	12. आहारोपयोगी वर्ग

6. **आहार द्रव्य वर्गीकरण (सुश्रुतानुसार)**

1. द्रवद्रव्य वर्ग: 10

1. जलवर्ग	2. क्षीरवर्ग	3. दधिवर्ग
4. तक्रवर्ग	5. घृतवर्ग	6. तैलवर्ग
7. मधुवर्ग	8. इक्षुवर्ग	9.मद्यवर्ग
10. मूत्रवर्ग		

2. अन्नद्रव्य वर्ग: 12

1. शालिवर्ग	2. कुधान्यवर्ग	3. मुद्गादि वर्ग
4. मांसवर्ग	5. फलवर्ग	6. शाकवर्ग
7. पुष्पवर्ग	8. कन्दवर्ग	9. लवणवर्ग
10. कृतान्नवर्ग	11. भक्ष्यवर्ग	12. अनुपानवर्ग

3. कर्मभेद से: 37 गण

पञ्चमहाभूत (*Pancha Mahabhutas*)

- **महाभूतानि खं वायुरग्निरापः क्षितिस्तथा।**
  शब्दः स्पर्शश्च रूपञ्च रसो गन्धश्च तद्गुणाः।। च.शा. 1.27

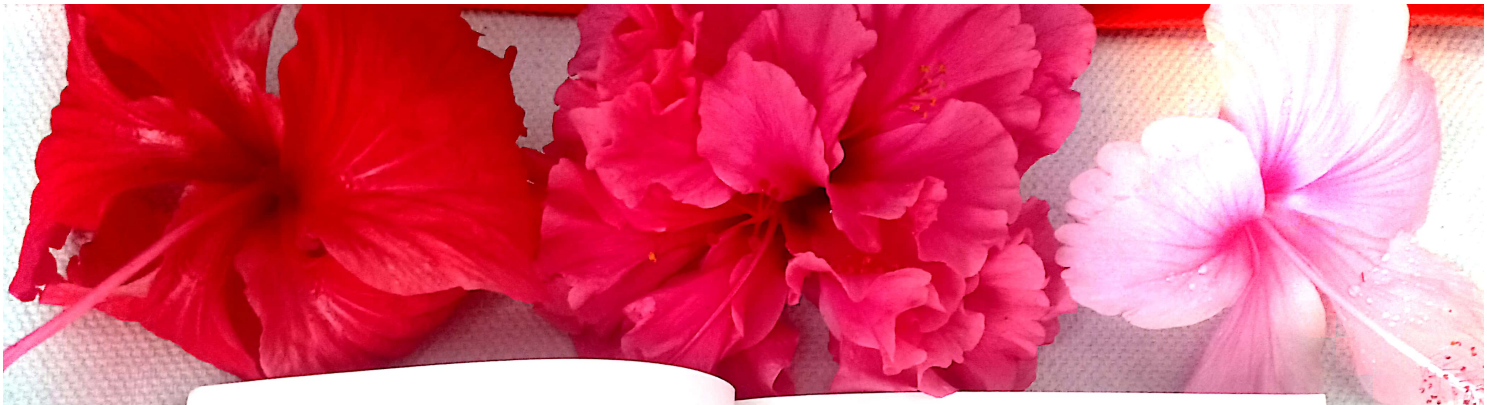

- **आकाशपवनदहनतोयभूमिषु यथासंख्यमेकोत्तरपरिवृद्धाः शब्द-स्पर्शरूपरसगन्धाः।** सु.सू. 42.3

ख (आकाश), वायु, अग्नि, आप (जल) और क्षिति (पृथिवी) ये पञ्चमहाभूत हैं। इनके क्रमशः गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गन्ध हैं। ये भूतों के नैसर्गिक गुण हैं।

महाभूतों का परस्परानुप्रवेश से गुण (*Gunas of mahabhutas due to Paraspara anupravesha*)

महाभूत	गुण
आकाश	शब्द
वायु	शब्द एवं स्पर्श
अग्नि	शब्द, स्पर्श एवं रूप
जल	शब्द, स्पर्श, रूप एवं रस
पृथिवी	शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गन्ध

महाभूत एवं दोष सम्बन्ध (*Relation between Mahabhuta and Dosha*)

महाभूत	दोष
वायु एवं आकाश	वायु
अग्नि	पित्त
जल एवं पृथिवी	कफ

महाभूत एवं त्रिगुण का सम्बन्ध (*Relation between Mahabhuta and Triguna*)

महाभूत	त्रिगुण
आकाश	सत्त्व
वायु	रज
अग्नि	सत्त्व एवं रज
जल	सत्त्व एवं तम
पृथिवी	तम

महाभूतों के गुण एवं लक्षण (*Guna and lakshana of Mahabhutas*)

महाभूत	गुण संख्या	गुण	लक्षण
आकाश	6	-शब्द-संख्या- परिमाण- पृथक्त्व- संयोग- विभाग	अप्रतीघात
वायु	9	-स्पर्श- संख्या- परिमाण- पृथक्त्व-संयोग- विभाग- परत्व- अपरत्व- वेग	चलत्व
अग्नि	11	-रूप- स्पर्श- संख्या- परिमाण-पृथक्त्व- संयोग- विभाग- परत्व- अपरत्व- द्रवत्व- संस्कार	उष्णत्व
जल	14	-स्पर्श- संख्या- परिमाण- पृथक्त्व- संयोग- विभाग- परत्व- अपरत्व- स्नेह- द्रवत्व- गुरुत्व- रूप- रस- संस्कार	द्रवत्व
पृथिवी	14	-स्पर्श- संख्या- परिमाण- पृथक्त्व- संयोग-विभाग- परत्व- अपरत्व- वेग- द्रवत्व- गुरुत्व- रूप- रस- गन्ध	खरत्व

आकाश निरूपण (Akasha)

लक्षण (*Features*)

- **तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः सम्भूतः।** तैत्तिरीयो।
  सर्वप्रथम आकाश महाभूत की उत्पत्ति हुई।
- **आकाशस्य तु विज्ञेयः शब्दो वैशेषिको गुणः।** कारिकावली।
  आकाश का वैशेषिक गुण शब्द है।
- **शब्दगुणकमाकाशम्। तच्चैकं विभु नित्यं च।** तर्कसंग्रह
  आकाश वह है जिसमें समवाय सम्बन्ध से शब्द रूप गुण विद्यमान हो। वह आकाश एक है, व्यापक है और नित्य है।
- **निष्क्रमणं प्रवेशनमित्याकाशस्य लिंगम्।** वै.द. 2/1/20
  निकलना और प्रवेश करना यह आकाश का चिह्न है।

गुण (*Guna - qualities*)

- 6: - शब्द- संख्या- परिमाण- पृथक्त्व- संयोग- विभाग

आकाशात्मक भाव (*Akashatmaka Bhava*)

- **तत्रास्याकाशात्मकं शब्दः श्रोत्रं लाघवं सौक्ष्म्यं विवेकश्च।** च.शा. 4/12
  शब्द, श्रोत्रेन्द्रिय, लाघव, सौक्ष्म्य और विवेक ये सब शरीरस्थ आकाशात्मक भाव हैं।

वायु निरूपण (Vayu)

लक्षण (Features)

- **आकाशाद् वायुः।** तैत्तिरीयो

  आकाश से वायु महाभूत की उत्पत्ति होती है।

- **आकाशस्तु विकुर्वाणः स्पर्शमात्रं संसर्ज ह।**
  वायुरुत्पद्यते तस्मात् तस्य स्पर्शो गुणो मतः।। विष्णुपुराण

  आकाश की उत्पत्ति के पश्चात् शब्द तन्मात्रा की उत्पत्ति हुई, जिससे स्पर्श गुणवाला वायु उत्पन्न हुआ।

- **अपाकजोऽनुष्णशीतस्पर्शस्तु पवने मतः।**
  तिर्यग्गमनवानेष ज्ञेयः स्पर्शादिलिंगकः।।
  पूर्ववन्नित्यताद्युक्तं देहव्यापि त्वगिन्द्रियम्।
  प्राणादिस्तु महावायुपर्यन्तो विषयो मतः।। मुक्तावली।

  अपाकज तथा अनुष्णाशीत स्पर्श गुण वायु में होता है। यह वायु स्पर्श लक्षण वाला होता है तथा तिर्यक् गमन करनेवाला होता है।

- **स्पर्शवान् वायुः।** वै.द. 2/1/4

  स्पर्श गुणयुक्त वायु है।

- **रूपरहितः स्पर्शवान् वायुः। स द्विविधः- नित्याऽनित्यश्च।** तर्कसंग्रह।

  रूप रहित एवं स्पर्श लक्षण वाले द्रव्य को वायु कहते हैं।

भेद (*Classification*)

- 2
  1. परमाणु रूप (नित्य) तथा
  2. कार्य रूप (अनित्य)।

इसमें अनित्य के 3 भेद होते हैं-

1. शरीर संज्ञक
2. इन्द्रिय संज्ञक
3. विषय संज्ञक

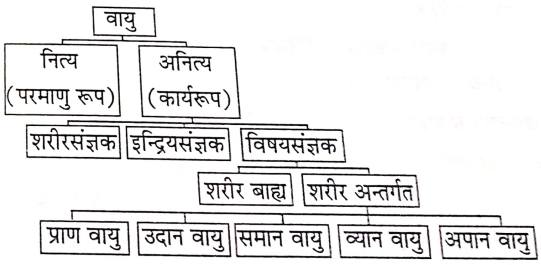

आयुर्वेदानुसार शरीरान्तर्गत वायु के 5 प्रकार (*Classification of Vayu according to Ayurveda*)

वायु का नाम	स्थान
प्राणवायु	हृदय
अपानवायु	गुद
समानवायु	नाभि
उदानवायु	कण्ठ
व्यानवायु	समग्र शरीर

स्पर्श: अपाकज अनुष्णाशीत

रूप: रूपरहित

गुण: 9 - स्पर्श - संख्या - परिमाण - पृथक्त्व - संयोग - विभाग - परत्व - अपरत्व - वेग

वाय्वात्मक भाव (*Vayvatmaka Bhava*)

- **वाय्वात्मकं स्पर्शः स्पर्शनं रौक्ष्यं प्रेरणं धातुव्यूहनं चेष्टाश्च शारीर्यः।**

च.शा. 4/12

स्पर्श, त्वक्, रौक्ष्य, प्रेरण, धातुव्यूहन अर्थात् धातु रचना तथा धातु वहन और शारीरिक चेष्टायें वाय्वात्मक हैं।

अग्नि निरूपण (Agni)

लक्षण (*Features*)

- **वायोरग्निः।** तैत्तिरीयो

वायु से अग्नि महाभूत की उत्पत्ति होती है।

- **तेजो रूप स्पर्शवत्।** वै.द. 2/3/1

रूप और स्पर्श तत्त्व वाले को अग्नि कहते हैं।

- **उष्णस्पर्शवत्तेजः। तच्च द्विविधं नित्यमनित्यं च।** तर्कसंग्रह।

तेज अर्थात् अग्नि का स्पर्श उष्ण होता है तथा वह दो प्रकार का होता है।

- **सत्त्वरजोबहुलोऽग्निः।** सु.शा. 1/20

सत्त्व एवं रजो गुण बहुल अग्नि है।

- **उष्णः स्पर्शस्तेजसस्तु स्यादूपं शुक्लभास्वरम्।**
  नैमित्तिकं द्रवत्वं तु नित्यतादि च पूर्ववत्।।
  इन्द्रियं नयनं वह्निः स्वर्णादि विषयो मतः।। मुक्तावली

तेज अर्थात् अग्नि स्पर्श में उष्ण है। इसका रूप भास्वर शुक्ल है तथा द्रवत्व इसका नैमित्तिक गुण है। पूर्व द्रव्य की भाँति ही इसके नित्य

अनित्य भेद होते हैं। तेज का इन्द्रिय संज्ञक रूप नयन तथा विषय संज्ञक स्वर्णादि है।

भेद (*Classification*)

- 2
  1. परमाणु रूप (नित्य)
  2. कार्य रूप (अनित्य)।

अनित्य के 3 भेद —

1. शरीर संज्ञक
2. इन्द्रिय संज्ञक
3. विषय संज्ञक

तैजस विषय के 4 भेद-

1. भौम
2. दिव्य
3. उदर्य
4. आकरज

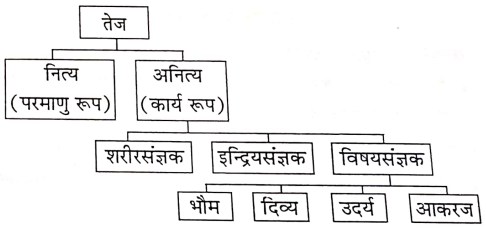

स्पर्श: उष्ण

रूप: भास्वर शुक्ल

गुण: 11 - रूप - स्पर्श - संख्या - परिमाण - पृथक्त्व - संयोग - विभाग - परत्व - अपरत्व - द्रवत्व - संस्कार

अग्न्यात्मक भाव (*Agnyatmaka Bhava*)

- **अग्न्यात्मकं रूपं दर्शनं प्रकाशः पक्तिरौष्ण्यं च।** च.शा. 4/12

  अग्न्यात्मक रूप दर्शन (अर्थात् चक्षुरिन्द्रिय), प्रकाश (अर्थात् दीप्ति), पंक्ति (अर्थात् परिपाक) तथा औष्ण्य (अर्थात् परिताप) है।

विद्युत (Vidyuta)

व्युत्पत्ति (*Etymological derivation*)

- वि + द्युत् + क्विप्। वि उपसर्ग द्युत् धातु में क्विप् प्रत्यय लगाकर विद्युत् शब्द बनता है।

पर्याय (*Synonym*)

- **तड़ित् सौदामिनी विद्युच्चञ्चला चपला इति।** अमरकोष

लक्षण (*Features*)

- **'विशिष्टा द्युत् दीप्तिः'** अर्थात् जिसकी विशेष दीप्ति हो वह विद्युत है।

भेद (*Classification*)

- 4
  1. कपिल
  2. लोहित
  3. पीत
  4. असित

जल निरूपण (Jala)

लक्षण (*Features*)

- **अग्नेरापः।** तैत्तिरीयो

अग्नि से जल महाभूत की उत्पत्ति होती है।

- **रूपरसस्पर्शवत्य आपोः द्रवाः स्निग्धाः।** वै.द. 2/1/20

रूप, रस, स्पर्श गुणवाले द्रव्य को जल कहते हैं।

- **वर्णः शुक्लो रसस्पर्शो जले मधुरशीतलौ।**
  स्नेहस्तत्र, द्रवत्वं तु सांसिद्धिक- मुदाहृतम्।।
  नित्यतादि पूर्ववत्तु किन्तु देहमयोनिजम्।
  इन्द्रियं रसनं सिन्धुर्हिमादिर्विषयो मतः।। मुक्तावली

जल का वर्ण शुक्ल है तथा उसमें मधुर रस और शीतल स्पर्श ये दो गुण विद्यमान हैं। स्नेह और द्रवत्व उसके सांसिद्धिक गुण हैं। नित्य और अनित्य भेद पृथिवी के समान हैं किन्तु जलीय शरीर अयोनिज ही होता है, जो वरुण लोक में है। इन्द्रिय संज्ञक रसना है और सिन्धु आदि विषय संज्ञक हैं।

भेद (*Classification*)

- 2
  1. परमाणु रूप (नित्य)
  2. कार्य रूप (अनित्य)

अनित्य के 3 भेद —

1. शरीर संज्ञक (वरूण लोक)
2. इन्द्रिय संज्ञक (जिह्वाग्र)
3. विषय संज्ञक (समुद्रादि)

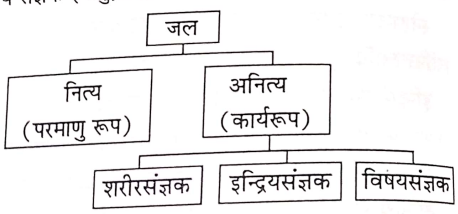

रस: मधुर

स्पर्श: शीतल

सांसिद्धिक गुण: 2 - स्नेह - द्रवत्व

अवस्था: 4 - अम्भ - मरीची - मर - अप्

रूप: शुक्ल

गुण: 14 - स्पर्श - संख्या - परिमाण - पृथक्त्व - संयोग - विभाग - परत्व - अपरत्व - स्नेह - द्रवत्व - गुरुत्व - रूप - रस - संस्कार

अप्यात्मक भाव (*Apyatmaka Bhava*)

- **अबात्मकं रसो रसनं शैत्यं मार्दवं स्नेहः क्लेदश्च।** च.शा. 4/12
  रस, रसन (रसनेन्द्रिय), शैत्य, मार्दव, स्नेह तथा क्लेद ये शरीरस्थ अप्यात्मक भाव हैं।

पृथिवी निरूपण (*Prthvi*)

लक्षण (*Features*)

- **अद्भ्यः पृथिवी।** तैत्तिरीयो
  जल महाभूत से पृथिवी की उत्पत्ति होती है।
- **अद्भ्यो गन्धगुणाः भूमिः।** मनु
  जल से गन्ध गुणवाली भूमि अर्थात् पृथिवी उत्पन्न होती है।
- **रूपरसगन्धस्पर्शवती पृथिवी।** वै द 2/1/9
  रूप, रस, गन्ध और स्पर्श गुणवाले तत्त्व को पृथिवी कहते हैं।
- **तत्र क्षितिर्गन्धहेतुर्नानारूपवती मता।**
  षड्विधस्तु रसस्तत्र गन्धस्तु द्विविधो मतः।।
  स्पर्शस्तस्यास्तु विज्ञेयो ह्यनुष्णाशीतपाकजः।
  नित्यानित्या च सा द्वेधा नित्या स्यादणुलक्षणा।।

अनित्या तु तदन्या स्यात् सैवावयवयोगिनी।
सा च त्रिधा भवेत् देहमिन्द्रियं विषयस्तथा।। सिद्धान्त मुक्तावली

नाना रूप वाली पृथिवी गन्ध का हेतु है। उसमें षड्रस तथा दो प्रकार के गन्ध होते हैं। इसका अनुष्णाशीत पाकज स्पर्श है। नित्य और अनित्य भेद से वह दो प्रकार की है। परमाणु रूप नित्य एवं तद्विपरीत अवयव रूप (कार्य रूप) अनित्य है। पुनः वह देह, इन्द्रिय तथा विषय भेद से तीन प्रकार की है।

भेद (*Classification*)

- 2
  1. परमाणु रूप (नित्य)
  2. कार्यरूप (अनित्य)।

अनित्य के पुनः 3 भेद हैं -

1. शरीर संज्ञक
2. इन्द्रिय संज्ञक
3. विषय संज्ञक

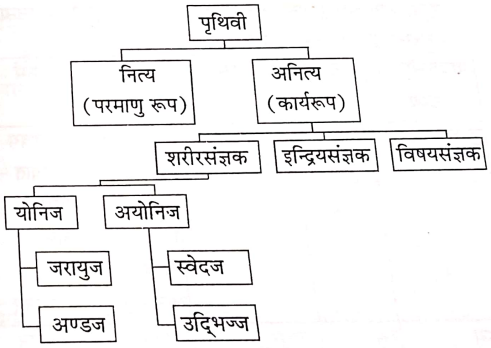

रसः षड् रसात्मक
गन्धः 2 - सुगन्ध - दुर्गन्ध
स्पर्शः अनुष्णाशीत पाकज
गुणः 14- स्पर्श - संख्या - परिमाण- पृथक्त्व- संयोग-विभाग- परत्व- अपरत्व- वेग- द्रवत्व- गुरुत्व- रूप- रस- गन्ध

पृथिव्यात्मक भाव (*Prthvyatmaka Bhava*)

- **पृथिव्यात्मकं गन्धो घ्राणं गौरवं स्थैर्यं मूर्तिश्चेति।** च.शा. 4/12

गन्ध, घ्राण अर्थात् नासा, गौरव, स्थैर्य तथा मूर्तिः अर्थात् काठिन्य शरीरस्थ पृथिव्यात्मक भाव हैं।

पाञ्चभौतिक द्रव्य	इन्द्रियार्थ	रस	गुण	कर्म
पार्थिव	गन्ध	-मधुर - कषाय	-गुरु- खर- कठिन- मन्द- स्थिर- विषद- सान्द्र- स्थूल	- उपचय - संघात - गौरव - स्थैर्य - बल - अधोगमन
आप्य	रस	-मधुर - ईषत् कषायाम्ललवण	-द्रव- स्निग्ध- शीत- मन्द-मृदु- पिच्छिल- स्तिमित- सर	- क्लेदन - स्नेहन - बन्धन - विष्यन्दन - मार्दव - प्रह्लादन

पाञ्चभौतिक द्रव्य	इन्द्रियार्थ	रस	गुण	कर्म
तैजस	रूप	-कटु - ईषत् अम्ल - लवण	-उष्ण- तीक्ष्ण- सूक्ष्म- लघु- रूक्ष- विशद- खर	- दहन - पचन - प्रभा - वर्ण - प्रकाशन - दारण - तापन - ऊर्ध्वगमन
वायव्य	स्पर्श	-कषाय - ईषत् तिक्त	-लघु- शीत- रूक्ष- खर- विशद- सूक्ष्म- विकासी- व्यवायी	- विरुक्षण - विचारण - ग्लपन - वैशद्यकर - लाघवकर - कर्शन - आशुकारी

पाञ्चभौतिक द्रव्य	इन्द्रियार्थ	रस	गुण	कर्म
आकाशीय	शब्द	अव्यक्त	- मृदु - लघु - श्लक्ष्ण - सूक्ष्म - व्यवायी - विशद - विविक्त	- मार्दव - सौषिर्य - लाघव - विवरण

काल निरूपण (*Kala*)

निरुक्ति (*Etymological derivation*)

- **या कलनात् सर्वभूतानां स कालः परिकीर्तितः।**

  जो समस्त जीव सृष्टि का संकलन करता है, वह काल है।

लक्षण (*Features*)

- **स सूक्ष्मामपि कलां न लीयते इति कालः।** सु.सू. 6

  जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म कला में भी लीन या विलीन नहीं होता है वह काल है।

- **संकलयति कालयति वा भूतानीति कालः।** सु.सू. 6/3

  जो सृष्टि के सम्पूर्ण प्राणियों का संकलन करता है वह काल है।

- **अपरस्मिन्नपरं युगपच्चिरं क्षिप्रमिति काललिंगानि।** वै.द. 2/2/6

  अल्प वयस्कादि में अल्पायुष्क होने का ज्ञान, एक साथ, देर से एवं शीघ्र ये काल के लक्षण हैं।

- **काल पुनः परिणाम उच्यते।** च.सू. 11/42

  काल का अर्थ परिमाण है।

- **कालश्चक्रवद् भ्रमणेनाविरतगमनशीलस्वभावः।**

  जल्पकल्पतरू टीका

  काल चक्र की भाँति भ्रमण करते रहने से सतत् गमन शील स्वभाव वाला होता है।

भेदः (*Classification*)

काल दो प्रकार का होता है -

- **कालः पुनः संवत्सरश्चातुरावस्था च।** च.वि. 8.125

  1. संवत्सर
  2. आतुर की अवस्था

- **कालः पुनः संवत्सरश्चातुरावस्था च। तत्र संवत्सरो द्विधा, त्रिधा, षोढा, द्वादशधा, भूयश्चाप्यतः प्रविभज्यते तत्तत्कार्यमभिसमीक्ष्य।** च.वि. 8.125

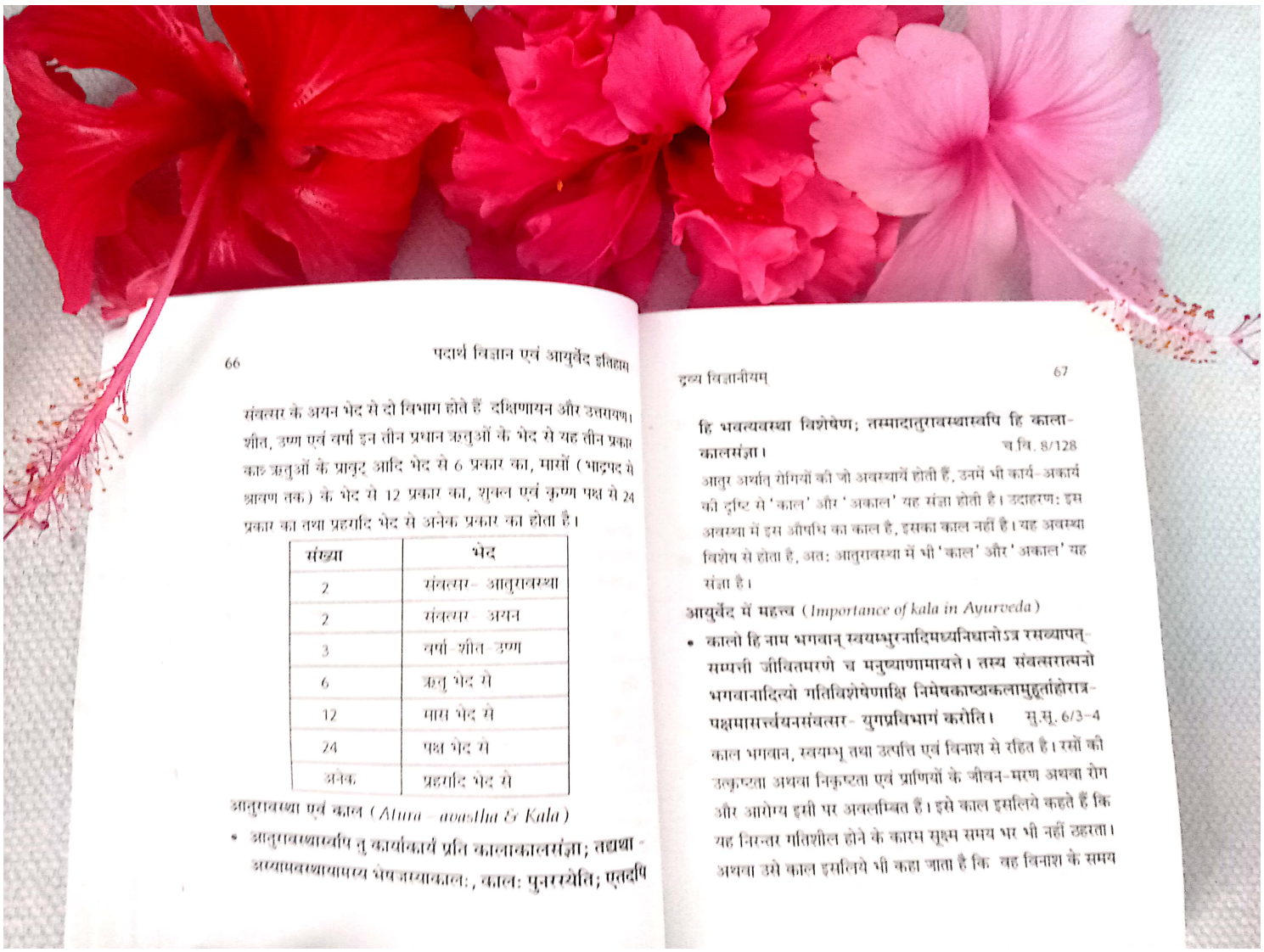

संवत्सर के अयन भेद से दो विभाग होते हैं दक्षिणायन और उत्तरायण। शीत, उष्ण एवं वर्षा इन तीन प्रधान ऋतुओं के भेद से यह तीन प्रकार का ऋतुओं के प्रावृट् आदि भेद से 6 प्रकार का, मासों (भाद्रपद से श्रावण तक) के भेद से 12 प्रकार का, शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष से 24 प्रकार का तथा प्रहरादि भेद से अनेक प्रकार का होता है।

संख्या	भेद
2	संवत्सर- आतुरावस्था
2	संवत्सर- अयन
3	वर्षा-शीत-उष्ण
6	ऋतु भेद से
12	मास भेद से
24	पक्ष भेद से
अनेक	प्रहरादि भेद से

आतुरावस्था एवं काल (*Atura - avastha & Kala*)

- **आतुरावस्थास्वपि तु कार्याकार्यं प्रति कालाकालसंज्ञा; तद्यथा - अस्यामवस्थायामस्य भेषजस्याकाल:, काल: पुनरस्येति; एतदपि**

हि भवत्यवस्था विशेषेण; तस्मादातुरावस्थास्वपि हि काला-कालसंज्ञा। च.वि. 8/128

आतुर अर्थात् रोगियों की जो अवस्थायें होती हैं, उनमें भी कार्य-अकार्य की दृष्टि से 'काल' और 'अकाल' यह संज्ञा होती है। उदाहरण: इस अवस्था में इस औषधि का काल है, इसका काल नहीं है। यह अवस्था विशेष से होता है, अत: आतुरावस्था में भी 'काल' और 'अकाल' यह संज्ञा है।

आयुर्वेद में महत्त्व (*Importance of kala in Ayurveda*)

- **कालो हि नाम भगवान् स्वयम्भुरनादिमध्यनिधानोऽत्र रसव्यापत्-सम्पत्ती जीवितमरणे च मनुष्याणामायत्ते। तस्य संवत्सरात्मनो भगवानादित्यो गतिविशेषेणाक्षि निमेषकाष्ठाकलामुहूर्ताहोरात्र-पक्षमासर्त्वयनसंवत्सर- युगप्रविभागं करोति।** सु.सू. 6/3-4

काल भगवान, स्वयम्भू तथा उत्पत्ति एवं विनाश से रहित है। रसों की उत्कृष्टता अथवा निकृष्टता एवं प्राणियों के जीवन-मरण अथवा रोग और आरोग्य इसी पर अवलम्बित हैं। इसे काल इसलिये कहते हैं कि यह निरन्तर गतिशील होने के कारम सूक्ष्म समय भर भी नहीं ठहरता। अथवा उसे काल इसलिये भी कहा जाता है कि वह विनाश के समय

सृष्टि मात्र को समेट लेता है अथवा प्राणियों को सुख-दुःख से संयुक्त करता है।

दिशा निरूपण (Disha)

लक्षण (*Features*)

- **इत इदमिति यतस्तद्दिश्यं लिंगम्।** वै.द. 2/2/10

  जिससे इसकी अपेक्षा यह दूर और यह समीप है, इस प्रकार का ज्ञान होता है वह दिक् है।

- **प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्। सा चैका। नित्या विभ्वी च।** तर्कसंग्रह

  प्राची (पूर्व दिशा) आदि व्यवहार के कारण को 'दिशा' या 'दिक्' कहते हैं। यह एक, नित्य और विभु है।

- **दिशत्युपदिशति लोकानयमस्मात् पूर्वः पश्चादयमस्मादित्या-दिरूपेण याभिस्तादिश इति।** जल्पकल्पतरू टीका

  जिससे यह उपदेश होता है कि यह इससे पूर्व और यह इससे पश्चिम है, वह दिशा है।

पर्याय (*Synonym*)

- **दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः।**
  प्राच्यवाची प्रतीतच्यस्ता पूर्वदक्षिणपश्चिमाः।।

उत्तरा दिगुदीची स्याद् दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवेत्। अमरकोष

- ककुभ
- काष्ठा
- आशा
- हरित

गुण (*Guna*)

- 5
  - संख्या
  - परिमाण
  - पृथक्त्व
  - संयोग
  - विभाग

भेद (*Classification*)

- दिशा यद्यपि एक है पर उपाधि भेद से अनेक प्रकार की है।
  - पूर्व *(east)*
  - पश्चिम *(west)*
  - उत्तर *(north)*
  - दक्षिण *(south)*
  - ऊर्ध्व *(upward)*
  - अधः *(downward)*
  - ईशानः पूर्व एवं उत्तर के मध्य *(north-east)*
  - आग्नेयः दक्षिण एवं पूर्व के मध्य *(south-east)*
  - नैर्ऋत्यः दक्षिण एवं पश्चिम के मध्य *(south-west)*
  - वायव्यः उत्तर एवं पश्चिम के मध्य भाग *(north-west)*

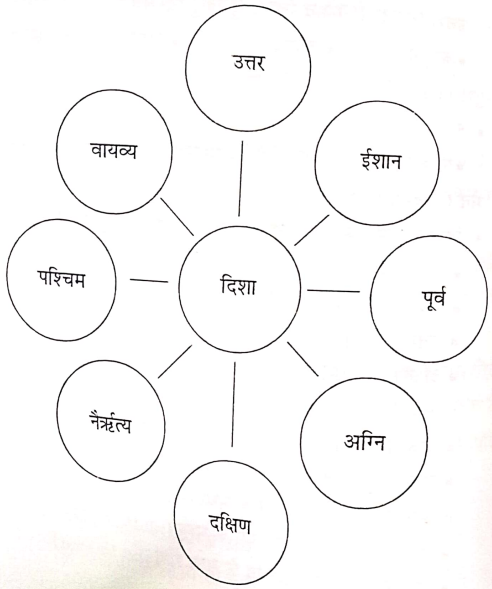

मन निरूपण (*Mana*)

निरुक्ति (*Etymological derivation*)

- **मन्यते अवबुध्यते ज्ञायते अनेन इति मनः।**
  जिसके द्वारा मनन किया जाये, सोचा या समझा जाये और ज्ञान किया जाये वह मन है।
- **मननात् मनः।**
  मनन करने की क्षमता वाला मन है।

लक्षण (*Features*)

- **लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव च।**
  सति ह्यात्मेन्द्रियार्थानां सन्निकर्षे न वर्तते।।
  वैवृत्त्यान्मनसो ज्ञानं सान्निध्यात्तच्च वर्तते।। च.शा. 1.18-19
  एक साथ (युगपत्) ज्ञान का अभाव (न होना) और भाव (होना) मन का लक्षण है।
  आत्मा, इन्द्रिय और अर्थों का संयोग होने पर भी मन का सान्निध्य (संयोग) न हो तो ज्ञान नहीं होता।
- **आत्मेन्द्रियार्थसन्निकर्षे ज्ञानस्य भावोऽभावश्च मनसः लिंगम्।**
  वै.द. 3/2/1

आत्मा, इन्द्रियों और इन्द्रियों के विषय के सन्निकर्ष में ज्ञान का भाव और अभाव होना मन का लक्षण है।

- **युगपत्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्।** न्या.द.
  एक साथ अनेक विषयों का ज्ञान न होना मन का लक्षण है।
- **सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः।**
  तच्च प्रत्यात्मनियतत्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च। तर्कसंग्रह
  सुख आदि के ज्ञान का साधन इन्द्रिय मन है। वह प्रत्येक जीवात्मा के साथ नियत होने से अनन्त, परमाणु रूप तथा नित्य है।

गुण (*Guna*)

- **अणुत्वमथ चैकत्वं द्वौ गुणौ मनसः स्मृतौ।** च.शा.1/19
  2
  - अणुत्व
  - एकत्व

पर्याय (*Synonym*)

- **अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्त्वसंज्ञकं, 'चेतः' इत्याहुरेके...।।** च.सू. 8.4
  मन के 3 पर्याय हैं - अतीन्द्रिय - सत्त्व- चेतस्

- अमरसिंह मतेन अतिरिक्त पर्याय हैं - चित्त- स्वान्त - हृदय

मन के विषय (*Subjects of Manas*)

- **मनसस्तु चिन्त्यमर्थः।** च.सू. 8/16
- **चिन्त्यं विचार्यमूह्यं च ध्येयं संकल्प्यमेव च।**
  यत् किञ्चिन्मनसो ज्ञेयं तत् सर्वं ह्यर्थसंज्ञकम्।। च.शा. 1/20
  - चिन्त्य (जो कुछ सोचा जाय)
  - विचार्य (जो कुछ गुण या दोष की दृष्टि से विचारा जाय)
  - ऊह्य (जो कुछ युक्ति द्वारा तर्कणा की जाय)
  - ध्येय (जिसका ध्यान किया जाय)
  - संकल्प्य (जो कुछ कर्तव्याकर्तव्य की कल्पना का निश्चय किया जाय) तथा
  - अन्य जो भी मन से ज्ञेय हैं

मन के कर्म (*Karma of Manas*)

- **इन्द्रियाभिग्रहः कर्म मनसः स्वस्य निग्रहः।**
  ऊहो विचारश्च, ततः परं बुद्धिः प्रवर्त्तते।। च.शा. 1/21
  - इन्द्रियों को नियन्त्रित करना अर्थात् हानिकारक विषयों से हटाना (अभिग्रह)

- धृति की सहायता से स्वयं अपना निग्रह करना (नियन्त्रण)
- इन्द्रियों के द्वारा विषयों का प्रत्यक्षीकरण (ऊह)
- विकल्प का विचार करना अर्थात् यह वस्तु हितकर और गुणयुक्त होने से ग्राह्य है तथा अहितकर एवं दोषयुक्त होने से त्याज्य है

मन के विषय च.शा. 8.16	मन के कर्म च.शा. 1.21
चिन्त्यम्	इन्द्रियाभिग्रह
विचार्यम्	निग्रह
ऊह्यम्	ऊहः
ध्येय	विचार
संकल्प्य	

अधिष्ठान (*Adhishthana – site of Manas*)

- **षडंगमगं विज्ञानमिन्द्रियाण्यर्थपञ्चकम्।**
  आत्मा च सगुणश्चेतश्चिन्त्यं च हृदि संश्रितम्।। च.सू. 30/4

विभिन्न मतों के अनुसार मन के स्थान

चरक संहिता	हृदय
सुश्रुत संहिता	हृदय
भेल संहिता	शिर तालु प्रदेश
अष्टांग संग्रह	वक्षस्थ हृदय
अष्टांग हृदय	वक्षस्थ हृदय
शार्गंधर संहिता	वक्षस्थ हृदय

व्याधि अधिष्ठान एवं मन (*Disease site and Manas*)

- **शरीरं सत्त्वसंज्ञं च व्याधिनामाश्रयो मतः।** च.सू. 1/55

  व्याधि के 2 अधिष्ठान: 1. शरीर एवं 2. मन। इनमें मानसिक व्याधियों का आश्रय अर्थात् अधिष्ठान मन है।

आत्मा निरूपण (*Atma*)

निरुक्ति (*Etymological derivation*)

- **'अत सातत्यगमने'** धातु से **'सतिभ्यां मनिन् मनिणौ'** द्वारा आत्मा शब्द की निरुक्ति होती है।

  जो निरन्तर गतिशील हो उसे आत्मा कहते हैं।

- आत्मा शब्द 'अत्' (सतत चलना) या 'अप्' (व्याप्त होना) धातु से बनता है।

  आत्मा सर्वदा चलती रहती है और यह सर्वत्र व्याप्त है।

भेद (*Classification*)

2

- जीवात्मा (शरीरबद्ध)
  - अतिवाहिक या सूक्ष्मशरीर युक्त आत्मा
  - स्थूल चेतन शरीर या कर्मपुरुष
- परमात्मा (शरीरमुक्त)

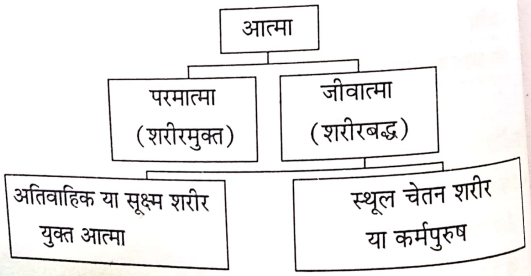

पर्याय (*Synonym*)

आत्मा के 12 पर्यायवाची शब्द कहे जाते हैं-

- ब्रह्म
- इन्द्र
- वायु
- अग्नि
- मन
- धृति
- धर्म
- कीर्ति
- यश
- श्री
- शरीर
- शरीरी

लक्षण (*Features*)

- **निर्विकारः परस्त्वात्मा सत्त्वभूतगुणेन्द्रियैः।**
  चैतन्ये कारणं नित्यो द्रष्टा पश्यति हि क्रियाः।। च.सू. 1.56

  आत्मा निर्विकार है, पर है, यह मन, भूत गुण तथा इन्द्रियों के साथ ही चेतनता में कारण होता है। यह नित्य तथा द्रष्टा अर्थात् साक्षी होकर समस्त क्रियाओं को देखता है।
- **प्राणायानौ निमेषाद्या जीवनं मनसो गतिः।**
  इन्द्रियान्तरसंचारः प्रेरणं धारणं च यत्।।
  देशान्तरगतिः स्वप्ने पञ्चत्वग्रहणं तथा।
  दृष्टस्य दक्षिणेनाक्ष्णा सव्येनावगमस्तथा।।
  इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं प्रयत्नश्चेतना धृतिः।
  बुद्धिः स्मृतिरहंकारो लिंगानि परमात्मनः।। च.शा. 1/70-72

प्राण, अपान, निमेष, उन्मेष, जीवन, मन की गति, मन का एक इन्द्रिय से दूसरी इन्द्रिय में जाना, प्रेरणा करना, धारण करना, स्वप्न में दूसरे देश में जाना, मरण, दाहिनी ऑख से देखी हुयी वस्तु का बाईं ऑख से 'वही है' यह ज्ञान करना, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, प्रयत्न, चेतना, धृति, बुद्धि, स्मृति और अहंकार ये सूक्ष्म आत्मा परम आत्मा के लिंग हैं।

- **तस्य सुखदुःखे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नः प्राणापानावुन्मेषनिमेषौ बुद्धिर्मनःसंकल्पो विचारणा स्मृतिर्विज्ञानमध्यवसायो विषयोपलब्धिश्च गुणाः।** सु.शा. 1.17

  सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, प्राण, अपान, उन्मेष, निमेष, बुद्धि, मनः संकल्प, विचारणा, स्मृति, विज्ञान, अध्यवसाय और विषयोपलब्धि ये पुरुष अर्थात् आत्मा के लक्षण हैं।

- **प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः, सुख-दुःखेच्छा- द्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिंगानि।** वै.सू. 3.2.4
- **इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिंगानि।** न्यायसूत्र. 1.10
- **ज्ञानाधिकरणमात्मा। स च द्विविधः- जीवात्मा परमात्मा चेति।** तर्कसंग्रह

  ज्ञान का अधिकरण आत्मा है तथा यह दो प्रकार का है - जीवात्मा और परमात्मा।

आयुर्वेद शास्त्र में आत्मा पद से तीन प्रकार का अर्थ किया जाता है

- परम आत्मा
- आतिवाहिक या सूक्ष्म शरीरयुक्त आत्मा
- स्थूल चेतन शरीर या कर्म पुरुष

परम आत्मा (*Parama Atma*)

- **अव्यक्तात्मा क्षेत्रज्ञः शाश्वतो विभुरव्ययः।** च.शा. 1.61

  चरक ने इस परम आत्मा को अव्यक्त (इन्द्रियों से अज्ञेय), क्षेत्रज्ञ, शाश्वत (उत्पत्ति एवं विनाश से रहित) एवं विभु (सर्वव्यापक) कहा है।

आत्मा के गुण (*Gunas of Atma*)

- 14

बुद्धि	द्वेष	संख्या	विभाग
सुख	प्रयत्न	परिमाण	भावना
दुःख	धर्म	पृथक्त्व	
इच्छा	अधर्म	संयोग	

पुरुष (*Purusha*)

लक्षण (*Features*)

- **पुरि शेते, पुरौ शेते, पुर्याम् शेते, इति पुरुषः।**
  जो भौतिक शरीर में रहता है, उसे पुरुष कहते हैं।

प्रकार (*Classification*)

- 2
  1. शुद्ध पुरुष
  2. कर्म पुरुष

धातु भेद से पुरुष (*Purusha – as per dhatu bheda*)

1. एकधात्वात्मक पुरुष (*Eka – dhatwatmaka Purusha*)
   - चेतना धातुरप्येकः स्मृतः पुरुषसंज्ञकः। च.शा. 1.16
     शुद्ध पुरुष केवल चेतना धातु से उत्पन्न होता है।
2. द्विधात्वात्मक पुरुष (*Dwi – dhatwatmaka Purusha*)
   - अग्नि + सोम
   - क्षेत्र + क्षेत्रज्ञ

3. **त्रिधात्वात्मक पुरुष** (*Tri – dhatwatmaka Purusha*)
   - त्रिगुणात्मक पुरुष — सत्व + रज + तम
   - त्रिदोषात्मक पुरुष — वात + पित्त + कफ
   - त्रिदण्डात्मक पुरुष — सत्व + आत्मा + शरीर
4. **पञ्चधात्वात्मक पुरुष** (*Pancha – dhatwatmaka Purusha*)
   - **महाभूतानि खं वायुरग्निरापः क्षितिस्तथा।** च.शा. 1.27
     आकाश + वायु + अग्नि + जल + पृथिवी
5. **षड्धात्वात्मक पुरुष / कर्म पुरुष/ चिकित्स्य पुरुष** (*Shad – dhatwatmaka Purusha/ Karma Purusha/ Chikitsya Purusha*)
   - **'पञ्चमहाभूतशरीरिसमवायः पुरुषः' (सू.अ.1) इति; स एष कर्मपुरुषश्चिकित्साधिकृतः।** सु.शा. 1.16
     पञ्चमहाभूत + आत्मा
   - **खादयश्चेतना षष्ठा धातवः पुरुषः स्मृतः।** च.शा. 1.16
     पञ्चमहाभूत + चेतना
   - **तत्र गर्भस्य पितृज मातृज रसजात्मज सत्वज सात्म्यजानि।** सु.शा. 3.33

मातृज भाव + पितृज भाव + रसज भाव + आत्मज भाव + सत्वज भाव + सात्म्यज भाव

6. सप्तधात्वात्मक पुरुष (*Sapta – dhatwatmaka Purusha*)

- रस + रक्त + मांस + मेद + अस्थि + मज्जा + शुक्र

7. द्वादशधात्वात्मक पुरुष (*Dwadasha – dhatwatmaka Purusha*)

- आत्मेन्द्रियमनोर्थानां योऽयं पुरुषसंज्ञकः। च.सू. 25.4

आत्मा + इन्द्रिय (पञ्च ज्ञानेन्द्रिय) + मन + अर्थ (शब्दादि)

8. त्रयोदशधात्वात्मक पुरुष (*Trayodha – dhatwatmaka Purusha*)

- दोषधातुमलमूलं हि शरीरम्। सु.सू. 15.3

दोष (3) + धातु (7) + मल (3)

9. सप्तदशधात्वात्मक पुरुष (*Saptadasha – dhatwatmaka Purusha*)

- आत्मेन्द्रियमनोर्थानां योऽयं पुरुषसंज्ञकः। च.सू. 25.4

आत्मा + इन्द्रिय (10) + मन + अर्थ (5)

10. चतुर्विंशति धात्वात्मक पुरुष/ राशि पुरुष (*Chaturvimshati – dhatwatmaka Purusha*)

- पुनश्च धातुभेदेन चतुर्विंशतिकः स्मृतः।
  मनो दशेन्द्रियाण्यर्थाः प्रकृतिश्चाष्टधातुकी।। च.शा. 1.17
- बुद्धीन्द्रियमनोऽर्थानां विद्याद्योगधरं परम्।
  चतुर्विंशतिको ह्येष राशिः पुरुषसंज्ञकः।। च.शा. 1.35

प्रकृति (अव्यक्त + महान् + अहंकार + पञ्चतन्मात्रा) + विकार (मन + 5 ज्ञानेन्द्रिय + 5 कर्मेन्द्रिय + 5 महाभूत)

11. पञ्चविंशति धात्वात्मक पुरुष (*Panchavimshati – dhatwatmaka Purusha*)

- प्रकृति (8) + विकार (16) + आत्मा

आत्मा का देहान्तरगमन (*Dehantara gamana of Atma*)

- भूतैश्चतुर्भिः सहितः सुसूक्ष्मैर्मनोजवो देहमुपैति देहात्।
  कर्मात्मकत्वान्न तु तस्य दृश्यं दिव्यं विना दर्शनमस्ति रूपम्।।
  च.शा. 2/31

आत्मा व्यापक होते हुए भी कर्म के कारण स्वरूप आकाश रहित इतर

चारों सूक्ष्म भूतों के साथ मन की गति से गति युक्त हो, म्रियमाण देह से उत्पद्यमान देह को जाता है। दिव्य दृष्टि बिना इसके रूप का दर्शन नहीं होता है।

आत्मा की उत्पत्ति

- **प्रभवो न ह्यनादित्वाद्विद्यते परमात्मनः।**
  पुरुषो राशिसंज्ञस्तु मोहेच्छाद्वेष- कर्मजः।। च.शा. 1.53

  आत्मा की उत्पत्ति का कोई भी कारण नहीं है।

❖❖❖

Section B

3. गुण विज्ञानीयम्
(*Guna - Quality*)

निरुक्ति (*Etymological derivation*)

- **गुण्यते आमन्त्र्यते लोक अनेन इति गुणाः।**

  जिसके द्वारा लोग द्रव्य की ओर आकर्षित होते हैं वह गुण है।

परिभाषा (*Definition*)

- **समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः।** च.सू. 1.51

  जो समवाय सम्बन्ध वाला हो, चेष्टारहित हो और ग्रहण में कारण हो उसे गुण कहते हैं।

- **द्रव्याश्रयगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्।**
  वै.द. 1.1.16

गुण वह है जो द्रव्य में आश्रित हो (द्रव्याश्रयी), गुणरहित हो, कर्मरहित या कर्म से भिन्न हो और स्वसमान गुणान्तर की उत्पत्ति में कारण हो।

- **अथ द्रव्याश्रिता ज्ञेयाः निर्गुणाः निष्क्रिया गुणाः।** कारिकावलि

गुण द्रव्य के आश्रित रहता है और वह निर्गुण तथा निष्क्रिय होता है।

संख्या (*Number*)

- आयुर्वेद मतेन: 41
- योगीन्द्रनाथ सेन मतेन: 42/46
- वैशेषिक दर्शन मतेन: 17
- प्रशस्तपाद मतेन: 24
- न्याय दर्शन मतेन: 24
- तर्कसंग्रह मतेन: 24
- सांख्य दर्शन मतेन: 3

आयुर्वेद मतेन गुण (*Gunas as per Ayurveda*)

सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः। गुणाः प्रोक्ताः॥

च सू 1.49

- सार्था/ इन्द्रिय/ वैशेषिक गुण: 5
- गुर्वादि/ सामान्य/ शारीर/ द्रव्य गुण: 20

- अध्यात्म/ आत्म गुण: 6
- परादि/ सामान्य गुण: 10

सार्थ गुण (*Sartha gunas*)

पर्याय: इन्द्रिय गुण/ वैशेषिक गुण

संख्या: 5 1.शब्द 2. स्पर्श 3. रूप 4. रस 5. गन्ध

पाँच महाभूतों के प्रधान गुण होने के कारण ये 'वैशेषिक गुण' कहे जाते हैं।

1. **शब्द** (*Shabda*)

- **श्रोत्रग्राह्यो गुणः शब्दः।** तर्कभाषा

श्रोत्रेन्द्रिय द्वारा जिस गुण का ग्रहण होता है वह शब्द है।

- **संयोगाद्विभागात् शब्दाच्च शब्दनिष्पत्तिः।** वै.द. 2.2.31

संयोग, विभाग और शब्द से शब्द की उत्पत्ति होती है।

- प्रकार: 2 1. ध्वन्यात्मक
  2. वर्णात्मक

2. **स्पर्श** (*Sparsha*)

- **स्पर्शः त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो विशेषगुणः।** तर्कभाषा

  त्वगिन्द्रिय मात्र से जिस गुण का ग्रहण होता है, उसे 'स्पर्श' कहते हैं।

- प्रकार: 3
  1. शीत (जल में)
  2. उष्ण (तेज में)
  3. अनुष्णाशीत (पृथिवी और वायु में)

3. **रूप** (*Rupa*)

- **चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्।** तर्कसंग्रह

  केवल चक्षु अर्थात् नेत्रेन्द्रिय द्वारा ग्राह्य गुण को रूप कहते हैं।

- प्रकार: 7
  1. शुक्ल
  2. नील
  3. पीत
  4. रक्त
  5. हरित

  6. कपिश
  7. चित्र

- पृथिवी में उपरोक्त सातों रूप रहते हैं।
- जल में अभास्वर शुक्ल (न चमकनेवाला शुक्ल) रूप रहता है।
- तेज में भास्वर शुक्ल (चमकनेवाला शुक्ल) रूप रहता है।

4. **रस** (*Rasa*)

- **रसनग्राह्यो गुणो रसः।** तर्कसंग्रह

  रसना इन्द्रिय से ग्राह्य गुण को रस कहते हैं।

- प्रकार: 6
  1. मधुर
  2. अम्ल
  3. लवण
  4. कटु
  5. तिक्त
  6. कषाय
- रस गुण पृथिवी और जल में रहता है।

- पृथिवी में उपरोक्त 6 रस रहते हैं।
- रस की उत्पत्ति और वैशिष्ट्य में आकाश, वायु और अग्नि कारण हैं।
- जल और पृथ्वी रस के आधार हैं।

5. गन्ध (*Gandha*)

- **घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः।** तर्कसंग्रह

  घ्राणेन्द्रिय (नासा) द्वारा ग्राह्य गुण को 'गन्ध' कहते हैं।

- प्रकार: 2
  1. सुरभि (सुगन्ध)
  2. असुरभि (दुर्गन्ध)
- गन्ध गुण केवल पृथिवी में रहता है।

गुर्वादि गुण (*Guru etc. gunas*)

पर्याय: सामान्य गुण/ शारीर गुण (कविराज गंगाधरराय मतेन)/ द्रव्य गुण

संख्या: 20

1. गुरु	2. लघु	3. शीत
4. उष्ण	5. स्निग्ध	6. रूक्ष
7. मन्द	8. तीक्ष्ण	9. स्थिर
10. सर	11. मृदु	12. कठिन

13. विशद	14. पिच्छिल	15. श्लक्ष्ण
16. खर	17. सूक्ष्म	18. स्थूल
19. सान्द्र	20. द्रव	

ये गुण पञ्चमहाभूतों में सामान्यतया रहते हैं, अतः इन्हें '**सामान्य गुण**' भी कहते हैं।

1. गुरु/ गुरुत्व (*heaviness*)

- **आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वम्।** वै.सू.

  किसी वस्तु के प्रथम पतन का जो असमवायिकारण है, वह गुरुत्व है।

- **संयोग-वेग-प्रयत्नाभावे सति गुरुत्वात् पतनमिति।** तर्कसंग्रह

  गुरु गुण संयोग, वेग अर्थात् संस्कार और प्रयत्न का विरोधी होता है।

- यह गुण पृथिवी तथा जल में रहता है।
- गुरुत्व गुण अप्रत्यक्ष होता है, जो पतन कर्म के द्वारा अनुमान से जाना जाता है।

2. लघु/ लघुत्व (*lightness*)

- **लघूनि हि द्रव्याणि वाय्वग्निगुणबहुलानि भवन्ति।** च.सू. 5.6

  वायु तथा अग्नितत्त्व की अधिकता के कारण द्रव्यों में लघु गुण उत्पन्न होता है।

- लघु गुण का आधार वायु, अग्नि और आकाश हैं।
- वैशेषिक ने लघु गुण को स्वतन्त्र गुण नहीं माना है।

3. **शीत/ शीतत्व** (*coldness*)

- शरीर में उष्णता कम करनेवाला गुण 'शीत' है।
- यह वायु और जल महाभूत में रहता है।
- यह मधुर, तिक्त और कषाय रसों में रहता है।
- वात और कफ दोषों के लक्षणों में भी यह एक है।
- यह गुण स्पर्श द्वारा ज्ञात होता है।

4. **उष्ण/ उष्णत्व** (*heatness*)

- **उष्णो भवति शीतस्य विपरीतश्च पाचनः।** भा.प्र.

  जिससे शरीर में उष्णता की वृद्धि हो तथा जो शीत गुण के विपरीत हो वह उष्ण गुण है।
- यह अग्नि महाभूत में रहता है।
- यह अम्ल, लवण और कटु रसों में रहता है।
- यह पित्त दोष के लक्षणों में गृहीत है।
- यह स्पर्श द्वारा ज्ञात होता है।

5. **स्निग्ध/ स्निग्धत्व** (*soothingness*)

- पर्यायः स्नेह
- **संग्रहहेतुर्गुणः स्नेहः।**

  पिण्डीभाव के हेतु का नाम 'स्नेह' है।
- यह जल का विशेष गुण है।
- यह मधुर, अम्ल तथा लवण रसों में रहता है।
- प्रशस्तपाद ने इसे अमूर्त्त और वैशेषिक गुण माना है।

6. **रूक्ष/ रूक्षत्व** (*dryness*) हेमाद्रि

- **यस्य शोषणे शक्तिः स रूक्षः।**

  जिसमें शोषण करने की शक्ति हो वह रूक्ष गुण है। सु.सू. 46.516
- **रूक्षस्तद्विपरीतः।**

  स्निग्ध के विपरीत गुण को रूक्ष कहते हैं।
- वैशेषिक मतेन स्नेह का अभाव ही रूक्ष है।
- यह गुण वायु तथा पृथिवी में होता है।
- यह कटु, तिक्त तथा कषया रसों में रहता है।

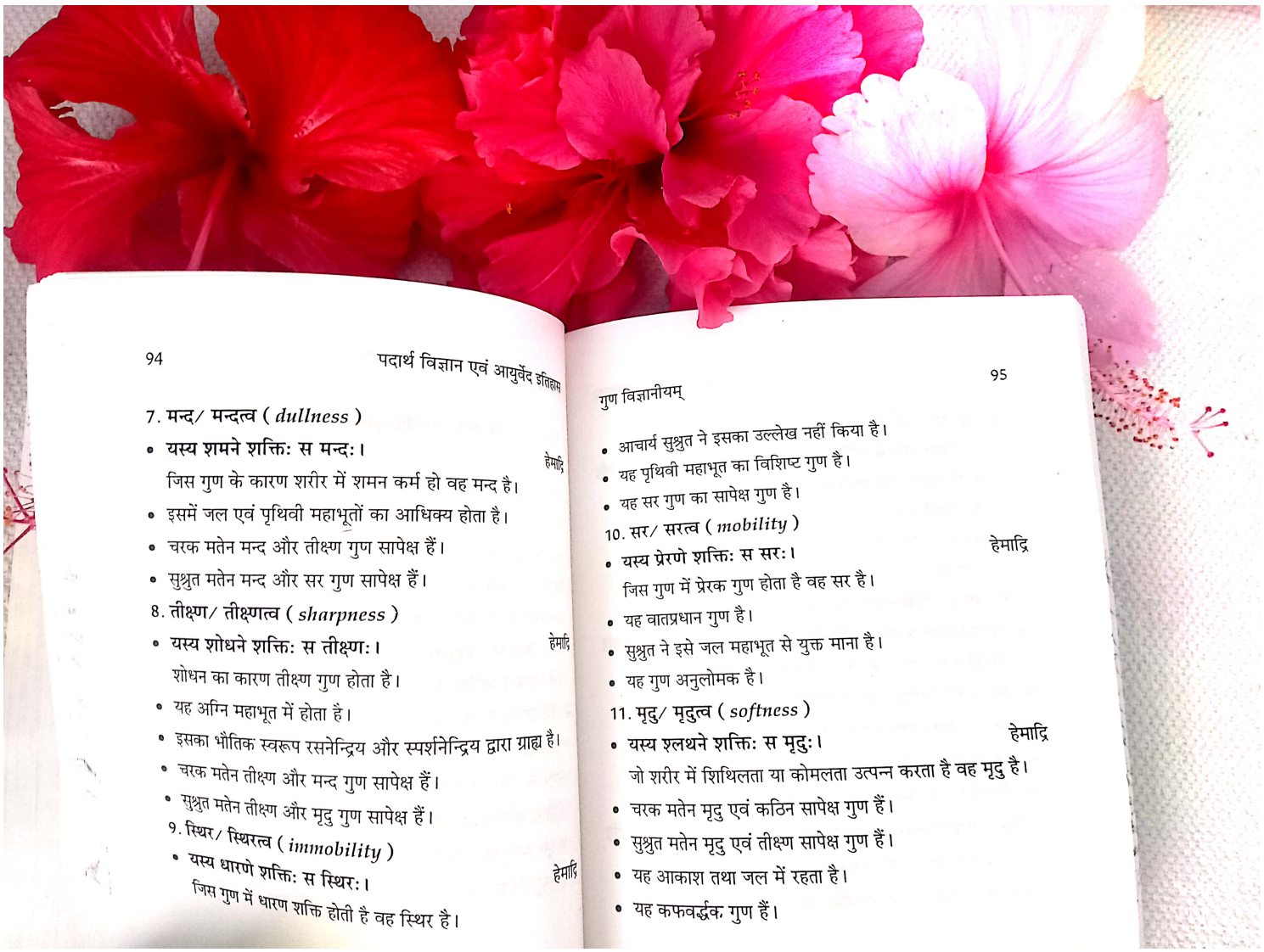

7. **मन्द/ मन्दत्व (*dullness*)**

- **यस्य शमने शक्तिः स मन्दः।** हेमाद्रि

  जिस गुण के कारण शरीर में शमन कर्म हो वह मन्द है।
- इसमें जल एवं पृथिवी महाभूतों का आधिक्य होता है।
- चरक मतेन मन्द और तीक्ष्ण गुण सापेक्ष हैं।
- सुश्रुत मतेन मन्द और सर गुण सापेक्ष हैं।

8. **तीक्ष्ण/ तीक्ष्णत्व (*sharpness*)**

- **यस्य शोधने शक्तिः स तीक्ष्णः।** हेमाद्रि

  शोधन का कारण तीक्ष्ण गुण होता है।
- यह अग्नि महाभूत में होता है।
- इसका भौतिक स्वरूप रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय द्वारा ग्राह्य है।
- चरक मतेन तीक्ष्ण और मन्द गुण सापेक्ष हैं।
- सुश्रुत मतेन तीक्ष्ण और मृदु गुण सापेक्ष हैं।

9. **स्थिर/ स्थिरत्व (*immobility*)**

- **यस्य धारणे शक्तिः स स्थिरः।** हेमाद्रि

  जिस गुण में धारण शक्ति होती है वह स्थिर है।

- आचार्य सुश्रुत ने इसका उल्लेख नहीं किया है।
- यह पृथिवी महाभूत का विशिष्ट गुण है।
- यह सर गुण का सापेक्ष गुण है।

10. **सर/ सरत्व (*mobility*)**

- **यस्य प्रेरणे शक्तिः स सरः।** हेमाद्रि

  जिस गुण में प्रेरक गुण होता है वह सर है।
- यह वातप्रधान गुण है।
- सुश्रुत ने इसे जल महाभूत से युक्त माना है।
- यह गुण अनुलोमक है।

11. **मृदु/ मृदुत्व (*softness*)**

- **यस्य श्लथने शक्तिः स मृदुः।** हेमाद्रि

  जो शरीर में शिथिलता या कोमलता उत्पन्न करता है वह मृदु है।
- चरक मतेन मृदु एवं कठिन सापेक्ष गुण हैं।
- सुश्रुत मतेन मृदु एवं तीक्ष्ण सापेक्ष गुण हैं।
- यह आकाश तथा जल में रहता है।
- यह कफवर्द्धक गुण हैं।

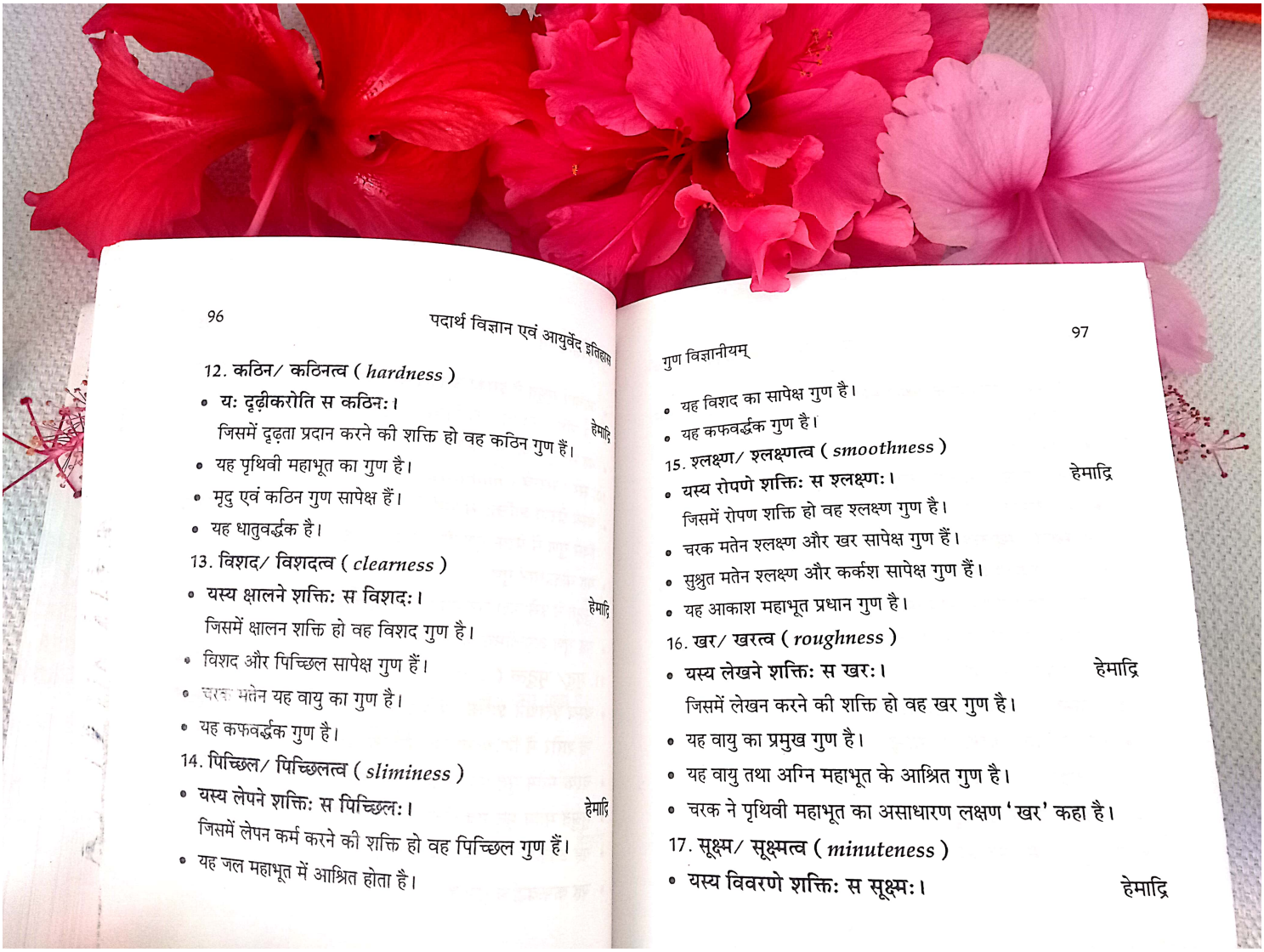

12. **कठिन/ कठिनत्व (*hardness*)**

- **यः दृढ़ीकरोति स कठिनः।** हेमाद्रि
  जिसमें दृढ़ता प्रदान करने की शक्ति हो वह कठिन गुण हैं।
- यह पृथिवी महाभूत का गुण है।
- मृदु एवं कठिन गुण सापेक्ष हैं।
- यह धातुवर्द्धक है।

13. **विशद/ विशदत्व (*clearness*)**

- **यस्य क्षालने शक्तिः स विशदः।** हेमाद्रि
  जिसमें क्षालन शक्ति हो वह विशद गुण है।
- विशद और पिच्छिल सापेक्ष गुण हैं।
- चरक मतेन यह वायु का गुण है।
- यह कफवर्द्धक गुण है।

14. **पिच्छिल/ पिच्छिलत्व (*sliminess*)**

- **यस्य लेपने शक्तिः स पिच्छिलः।** हेमाद्रि
  जिसमें लेपन कर्म करने की शक्ति हो वह पिच्छिल गुण हैं।
- यह जल महाभूत में आश्रित होता है।

- यह विशद का सापेक्ष गुण है।
- यह कफवर्द्धक गुण है।

15. **श्लक्ष्ण/ श्लक्ष्णत्व (*smoothness*)**

- **यस्य रोपणे शक्तिः स श्लक्ष्णः।** हेमाद्रि
  जिसमें रोपण शक्ति हो वह श्लक्ष्ण गुण है।
- चरक मतेन श्लक्ष्ण और खर सापेक्ष गुण हैं।
- सुश्रुत मतेन श्लक्ष्ण और कर्कश सापेक्ष गुण हैं।
- यह आकाश महाभूत प्रधान गुण है।

16. **खर/ खरत्व (*roughness*)**

- **यस्य लेखने शक्तिः स खरः।** हेमाद्रि
  जिसमें लेखन करने की शक्ति हो वह खर गुण है।
- यह वायु का प्रमुख गुण है।
- यह वायु तथा अग्नि महाभूत के आश्रित गुण है।
- चरक ने पृथिवी महाभूत का असाधारण लक्षण 'खर' कहा है।

17. **सूक्ष्म/ सूक्ष्मत्व (*minuteness*)**

- **यस्य विवरणे शक्तिः स सूक्ष्मः।** हेमाद्रि

जिसमें विवरण शक्ति अर्थात् स्रोतों को खोलने की शक्ति हो वह सूक्ष्म गुण है।

- चरक मतेन सूक्ष्म और स्थूल सापेक्ष गुण हैं।
- सुश्रुत मतेन सूक्ष्म और आशु सापेक्ष गुण हैं।
- यह आकाश, वायु एवं अग्नि के आश्रित गुण है।

18. स्थूल/ स्थूलत्व (*bulkiness*)

- **यस्य संवरणे शक्तिः स स्थूलः।** हेमाद्रि

  जो अवरोध उत्पन्न करने वाला है वह स्थूल गुण है।
- यह पृथिवी महाभूत आश्रित गुण है।
- यह कफवर्द्धक गुण है।

19. सान्द्र/ सान्द्रत्व (*solidity*)

- **यस्य प्रसादने शक्तिः स सान्द्रः।** हेमाद्रि

  जो प्रसादन करने वाला होता है वह सान्द्र गुण है।
- सान्द्र एवं द्रव सापेक्ष गुण हैं।
- यह पृथिवी महाभूत आश्रित गुण है।

20. द्रव/ द्रवत्व (*fluidity*)

- **यस्य विलोडने शक्तिः स द्रवः।** हेमाद्रि

  जिसमें विलोडन अर्थात् व्याप्त होने की शक्ति हो वह द्रव गुण है।
- यह तेज, जल एवं पृथिवी आश्रित गुण है।
- प्रकारः 2
  - सांसिद्धिक (जल महाभूत में)
  - नैमित्तिक (तेज एवं पृथिवी महाभूत में)

गुर्वादि 20 गुणों का आधुनिक शब्द एवं उनका भौतिक संगठन

गुण	आधुनिक	भौतिक संगठन
गुरु	*Heaviness*	पृथिवी एवं जल
लघु	*Lightness*	वायु, आकाश एवं अग्नि
स्निग्ध	*Soothingness*	जल
रूक्ष	*Dryness*	पृथिवी, अग्नि एवं वायु
द्रव	*Fluidity*	जल
सान्द्र	*Solidity*	पृथिवी
शीत	*Cold*	जल

गुण	आधुनिक	भौतिक संगठन
उष्ण	*Hot*	अग्नि
मन्द	*Dullness*	पृथिवी एवं जल
तीक्ष्ण	*Sharpness*	अग्नि
स्थिर	*Immobility*	पृथिवी
सर	*Mobility*	जल
मृदु	*Softness*	जल एवं आकाश
कठिन	*Hardness*	पृथिवी
विशद	*Clearness*	पृथिवी, वायु, तेज एवं आकाश
पिच्छिल	*Sliminess*	जल
श्लक्ष्ण	*Smoothness*	अग्नि
खर	*Roughness*	वायु
स्थूल	*Bulkiness*	पृथिवी
सूक्ष्म	*Minuteness*	अग्नि, वायु एवं आकाश

अध्यात्म गुण (*Adhyatma gunas*)

पर्याय: आत्म गुण

संख्या: 6

1. बुद्धि
2. इच्छा
3. द्वेष
4. सुख
5. दु:ख
6. प्रयत्न

1. बुद्धि (*Buddhi*)

- **सर्वव्यवहारहेतुर्गुणोबुद्धिर्ज्ञानम्।** तर्कसंग्रह

  सभी प्रकार के व्यवहार में जो गुण कारण होता है, वह बुद्धि है।

- **बुद्धिस्तूहापोहज्ञानम्।** चक्रपाणि

  ऊहापोह स्वरूप ज्ञान बुद्धि है।

- पर्याय: - बुद्धि - उपलब्धि - ज्ञान
- भेद: 2
  1. स्मृति
     - यथार्थ (प्रमाजन्य)
     - अयथार्थ (अप्रमाजन्य)
  2. अनुभव
     - यथार्थ अनुभव (प्रमा)
       - प्रत्यक्ष
       - अनुमिति

- उपमिति
- शब्दज
- अयथार्थ अनुभव (अप्रमा)
  - संशय
  - विपर्यय
  - तर्क

2. **इच्छा** (*Iccha*)

- **इच्छा कामः।** तर्कसंग्रह
  कामना ही इच्छा है।
- यह आत्मा का गुण है।
- पर्यायः काम
- भेदः 2
  - फलेच्छा
  - उपायेच्छा

3. **द्वेष** (*Dwesha*)

- **प्रज्वलनात्मको द्वेषः। यस्मिन् सति प्रज्वलितमिवात्मनं मन्यते स द्वेषः।** प्रशस्तपाद

जिसके कारण व्यक्ति अपने आप को प्रज्वलित की भाँति मानता है, वह द्वेष है। तर्कसंग्रह

- **क्रोधो द्वेषः।**
  क्रोध ही द्वेष है।

4. **सुख** (*Sukha*)

- **सुखसंज्ञकमारोग्यम्।** च.सू. 9.4
  आरोग्य अर्थात् स्वास्थ्य ही सुख है।
- **सर्वेषामनुकूलवेदनीयं सुखम्।** तर्कसंग्रह
  जो सभी के अनुकूल ज्ञान का विषय है, वह सुख है।

5. **दुःख** (*Duhkha*)

- **विकारो दुःखमेव च।** च.सू. 9.4
  विकार अर्थात् व्याधि अवस्था ही दुःख है।
- **प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम्।** तर्कसंग्रह
  जो सभी के प्रतिकूल ज्ञान का विषय है, वह दुःख है।

6. **प्रयत्न** (*Prayatna*)

- **कृतिः प्रयत्नः।** तर्कसंग्रह

वस्तु के सम्पादनार्थ जो क्रिया या चेष्टा की जाती है वह प्रयत्न है।

- पर्याय: - संरम्भ - उत्साह
- प्रकार: 3
  1. प्रवृत्ति
  2. निवृत्ति
  3. जीवन योनि

परादि गुण (*Para etc. gunas*)

पर्याय: सामान्य गुण/ चिकित्सा सिद्धयुपाय गुण

संख्या: 10

1. परत्व	2. अपरत्व	3. युक्ति
4. संख्या	5. संयोग	6. विभाग
7. पृथक्त्व	8. परिणाम	9. संस्कार
10. अभ्यास		

1. **परत्व** (*Paratva*)

- **तच्च परत्वं प्रधानत्वम्।** चक्र. च.सू. 26.31 पर

परत्व प्रधान को कहते हैं। एक ही प्रकार के अनेक द्रव्यों में जो श्रेष्ठतम है वह पर कहलाता है।

- प्रकार: 2
  1. दिक्कृत्
  2. कालकृत्

2. **अपरत्व** (*Aparatva*)

- **अपरत्वं अप्रधानत्वम्।** चक्र. च.सू. 26.31 पर

अपर का अर्थ अप्रधान है। एक समान जाति के द्रव्यों में जो निकृष्टतम द्रव्य होता है, वह अपर कहलाता है।

- प्रकार: 2
  1. दिक्कृत्
  2. कालकृत्

3. **युक्ति** (*Yukti*)

- **युक्तिश्च योजना या तु युज्यते।** च.सू. 26.31

योजना को युक्ति कहते हैं।

4. **संख्या** (*Samkhya*)

- **संख्या स्याद्गणितम्।** च.सू. 26.32

एक, दो, तीन आदि करके जो गणना की जाती है, वह संख्या है।

- **एकत्वादिव्यवहारहेतुः संख्या।**

  एक - दो - तीन आदि संज्ञायें जो व्यवहार का कारण हैं, वे ही संख्या कहलाती हैं। तर्कसंग्रह

5. **संयोग** (*Sanyoga*)

- **योगः सह संयोग उच्यते। द्रव्याणां द्वन्द्वसर्वैककर्मजोऽनित्य एव च।।** च.सू. 26.32

  दो या अधिक द्रव्यों का योग अर्थात् साथ में मिलना संयोग कहा जाता है।

- प्रकार: 3

  1. द्वन्द्वकर्मज संयोग
  2. सर्वकर्मज संयोग
  3. एककर्मज संयोग

6. **विभाग** (*Vibhaga*)

- **विभागस्तु विभक्तिः स्याद्वियोगो भागशो ग्रहः।** च.सू. 26.33

  द्रव्यों के विभाजन अथवा संयोग के नाश के कारण को विभाग कहते हैं।

- प्रकार: 3

  1. द्वन्द्वकर्मज संयोग
  2. सर्वकर्मज संयोग
  3. एककर्मज संयोग

7. **पृथक्त्व** (*Prthaktva*)

- **पृथक्त्वं स्यादसंयोगो वैलक्षण्यमनेकता।** च.सू. 26.33

  एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य से अलग करनेवाले गुण को पृथक्त्व कहते हैं।

- प्रकार: 3

  1. असंयोगज
  2. वैलक्षण्य
  3. अनेकता

8. **परिणाम** (*Parinama*)

- **परिमाणं पुनर्मानम्।** च.सू. 26.34

  किसी वस्तु को माप कर या तौल कर जो उसका मान लिया जाता है, वह परिमाण है।

- प्रकार: 4

  1. अणु

2. महत्
3. ह्रस्व
4. दीर्घ

- अमरकोष मतेन 3 प्रकार
  1. पौतव
  2. द्रुवय
  3. पाय्य

9. संस्कार (*Samskara*)

- **संस्कारः करणं मतम्।** च.सू. 26.34

जिसके कारण द्रव्य के स्वाभाविक गुण में परिवर्तन लाया जाये, वह 'संस्कार' है।

- भेदः 3 (वैशेषिक तथा न्याय मतेन)
  1. वेग
  2. स्थितिस्थापक
  3. भावना

10. अभ्यास (*Abhyasa*)

- **भावाभ्यसनमभ्यासः शीलनं सततक्रिया।** च.सू. 26.34

किसी द्रव्य विशेष का निरन्तर सेवन 'अभ्यास' है।

- पर्यायः – अभ्यसन – शीलन – सततक्रिया

वैशेषिक दर्शन मतेन गुण (*Gunas as per Vaisheshika darshan*)

संख्याः 17

1. रूप	2. रस	3. गन्ध
4. स्पर्श	5. संख्या	6. परिमाण
7. पृथक्त्व	8. संयोग	9. विभाग
10. परत्व	11. अपरत्व	12. बुद्धि
13. सुख	14. दुःख	15. इच्छा
16. द्वेष	17. प्रयत्न	

प्रशस्तपाद मतेन गुण (*Gunas as per Prashastapada*)

संख्याः 24

1. रूप	2. रस	3. गन्ध
4. स्पर्श	5. संख्या	6. परिमाण
7. पृथक्त्व	8. संयोग	9. विभाग
10. परत्व	11. अपरत्व	12. बुद्धि
13. सुख	14. दुःख	15. इच्छा

	16. द्वेष	17. प्रयत्न	18. गुरुत्व
	19. द्रवत्व	20. स्नेह	21. संस्कार
	22. धर्म	23. अधर्म	24. शब्द

न्याय दर्शन मतेन गुण (*Gunas as per Nyaya darshan*)

संख्या: 24	1. रूप	2. रस	3. गन्ध
	4. स्पर्श	5. संख्या	6. परिमाण
	7. पृथक्त्व	8. संयोग	9. विभाग
	10. परत्व	11. अपरत्व	12. गुरुत्व
	13. द्रवत्व	14. स्नेह	15. शब्द
	16. बुद्धि	17. सुख	18. दु:ख
	19. इच्छा	20. द्वेष	21. प्रयत्न
	22. धर्म	23. अधर्म	24. संस्कार

❖❖❖

4. कर्म विज्ञानीयम्
(Karma - action)

निरुक्ति(*Etymological derivation*)

- क्रियते इति कर्म।

पर्याय(*Synonym*)

- प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्था; सैव क्रिया, कर्म, यत्नः, कार्यसमारम्भश्च।। च.वि. 8.77
  - चेष्टा
  - क्रिया
  - कर्म
  - यत्न
  - कार्य समारम्भ

लक्षण (*Features*)

- प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते। च.सू. 1/49

प्रयत्न आदि चेष्टाओं को कर्म कहा जाता है।

- **संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम्।**
  कर्त्तव्यस्य क्रिया कर्म, कर्म नान्यदपेक्षते।। च.सू. 1/52

  जो संयोग और विभाग में अनपेक्ष (स्वतन्त्र) कारण हो तथा द्रव्य में आश्रित हो उसे कर्म कहते हैं। कर्त्तव्य की क्रिया को कर्म कहते हैं। पूर्वोक्त संयोग और विभाग के लिए कर्म किसी अन्य साधन की अपेक्षा नहीं रखता।

- **एकद्रव्यमगुणं संयोग विभागेष्वनपेक्षकारणमिति कर्मलक्षणम्।** वै.द. 1/17

  एक द्रव्य के आश्रित रहनेवाला, अगुण (गुण रहित) तथा संयोग - विभाग का निरपेक्ष (अन्य की अपेक्षा न रखते वाला) कारण कर्म कहलाता है।

- **कर्मवाङ्मनः शरीरप्रवृत्तिः।** च.सू. 11/39

  वाणी, मन और शरीर की चेष्टाओं को कर्म कहते हैं।

- **द्रव्याश्रय्यगुणवत् संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमन्यापेक्षं समवायिकारणं कर्म।** जल्पकल्पतरू टीका

- **चलनात्मकं कर्म।** तर्कसंग्रह

भेद(*Types*)

2 भेदः

1. लौकिक कर्म
2. आध्यात्मिक कर्म

लौकिक कर्म के 5 भेद हैं:

(1) उत्क्षेपण (*upward motion*)

(2) अपक्षेपण (*downward motion*)

(3) आकुञ्चन (*contraction*)

(4) प्रसारण (*expansion*)

(5) गमन (*locomotion*)

गमन (*locomotion*) के उपभेदः

(अ) भ्रमण (*walking*)

(ब) रेचन (*evacuation*)

(क) स्पन्दन (*flow*)

(ड) ऊर्ध्वज्वलन (*flaming up*)

(इ) तिर्यग्गमन (*slanting*)

आयुर्वेदोक्त कर्म (*Action in Ayurveda*)

1. प्रथम भेद

   पञ्चकर्म (5): - 1. वमन 2. विरेचन 3. शिरोविरेचन 4. निरूह बस्ति 5. अनुवासन बस्ति

2. द्वितीय भेद

   शल्यकर्म सम्बन्धित कर्म (3):- 1. पूर्वकर्म 2. प्रधानकर्म 3. पश्चात्कर्म

3. तृतीय भेद

   शस्त्रकर्म (8): - 1. छेदन 2. भेदन 3. लेखन 4. वेधन 5. ऐषण 6. आहरण 7. विस्रावण 8. सीवन

4. चतुर्थ भेद

   यन्त्रकर्म (24)

❖❖❖

5. सामान्य विज्ञानीयम् (Samanya - generality/ community)

पर्याय (*Synonym*)

- जाति

लक्षण(*Features*)

- **सर्वदा सर्वभावानां सामान्यं वृद्धिकारणम्।** च.सू. 1.44

  सर्वदा सभी भावों या विषयों की वृद्धि करने वाला सामान्य (*generality/ community*) होता है।

- **सामान्यमेकत्वकरम्।** च.सू. 1.45

  सामान्य एकत्व अर्थात् अनेक पदार्थों में एकत्व स्थापित करने वाला है।

- **तुल्यार्थता हि सामान्यम्।** च.सू. 1.45

  सामान्य तुल्य अर्थ (अर्थात् दो विषयों में सदृशता का ज्ञान) बतलाने वाला होता है।

- **नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्।** तर्कसंग्रह

  सामान्य वह है जो नित्य है और एक होने पर भी नानाविध पदार्थों में रहता है।

भेद (*Types*)

(1) प्रथम भेद: 3

1. पर सामान्य
2. अपर सामान्य
3. परापर सामान्य

(2) द्वितीय भेद: द्रव्य, गुण और कर्म भेद से 3

1. द्रव्य सामान्य: यह वृद्धि का कारण होता है।
2. गुण सामान्य: यह एकत्व का बोध कराने वाला होता है।
3. कर्म सामान्य: यह समान कार्य करानेवाला होता है।

(3)आचार्य भट्टारहरिश्चन्द्र मतेन: 3

1. अत्यन्त सामान्य

2. मध्य सामान्य
3. एकदेश सामान्य

(4) आचार्य चक्रपाणि मतेन: 2

1. उभयवृत्ति सामान्य
2. एकवृत्ति सामान्य

❖❖❖

6. विशेष विज्ञानीयम्
(Vishesha - particularity)

लक्षण (*Features*)

- **ह्रासहेतुर्विशेषश्च, प्रवृत्तिरुभयस्य तु।** च.सू. 1.44
  विशेष (*particularity*) यह ह्रास का कारण है।
- **विशेषस्तु पृथक्त्वकृत्।** च.सू. 1.45
  विशेष का लक्षण पृथक्त्व है।
- **विशेषस्तु विपर्ययः।** च.सू. 1.45
  विशेष सामान्य के विपरीत लक्षणों से युक्त होता है।
- **नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तका विशेषाः।** तर्कसंग्रह
  विशेष वह है जो नित्य द्रव्यों में रहते हुए दूसरों को व्यावृत्त (*exclusive*) करे।

भेद (*Types*)

- 3 प्रकार:
  1. द्रव्य विशेष: यह ह्रास का कारण होता है।
  2. गुण विशेष: यह पार्थक्य का बोध कराने वाला होता है।
  3. कर्म विशेष: यह सामान्य के विपरीत होता है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य (*Facts*)

- विशेष पदार्थ का उल्लेख विशिष्ट रूप में करने के फलस्वरूप ही कणादकृत दर्शन का नाम 'वैशेषिक दर्शन' हुआ।
- सामान्य अनुवृत्त्यात्मक (*inclusive*) होता है और विशेष व्यावृत्त्यात्मक (*exclusive*) है।
- वैशेषिक ने सामान्य और विशेष को बुद्ध्यपेक्ष पदार्थ कहा है: **'सामान्यं विशेषं इति बुद्ध्यपेक्ष्यम्।'** वै.द. 1.2.3

❖❖❖

7. समवाय विज्ञानीयम्
(Samavaya - inherence)

सम्बन्ध (*Sambandha*)

वैशेषिक मतेन दो प्रकार का होता है:

1. संयोग सम्बन्ध
2. समवाय सम्बन्ध

समवाय लक्षण (*Features*)

- **नित्य सम्बन्धः समवायः।**

  नित्य सम्बन्ध को समवाय (*inherence*) कहा जाता है।

- **समवायोऽपृथग्भावो भूम्यादीनां गुणैर्मतः।**
  स नित्यो यत्र हि द्रव्यं न तत्रानियतो गुणः।। च.सू. 1.50

भूमि आदि आधार द्रव्यों के साथ गुर्वादि आधेय गुणों का जो अपृथग्भाव (अलग न रहने का) सम्बन्ध है उसे ही समवाय कहते हैं। यह नित्य (*universal*) है, और जहाँ भी द्रव्य है वहाँ निश्चित रूप से गुण रहता ही है।

- **इहेदमिति यतः कार्यकारणयोः स समवायः।** वै.द. 7.2.25
- **घटादीनां कपालादौ द्रव्येषु गुणकर्मणोः।**
  तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्तितः।। कारिकावलि
- **अयुतसिद्धानामाधार्याधारभूतानां यः सम्बन्ध इहेति प्रत्ययहेतुः स समवायः।** प्रशस्तपाद

संख्या(*Number*)

- **समवायस्त्वेक एव।** तर्कसंग्रह

अयुतसिद्ध (*Ayuta siddha - inseparable entity*)

समवाय अयुतसिद्ध पदार्थों में पाया जाता है।

- **ययोर्द्वयोर्मध्ये एकमविनश्यदवस्थमपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुत-सिद्धौ।** तर्कसंग्रह

जिन दो पदार्थों के बीच एक अविनाश की अवस्था में रहता हुआ दूसरे के आश्रित रहता है, वे दोनों अयुतसिद्ध कहे जाते हैं।

Ayurveda Ek Vikalp Foundation

- All ayurvedic books store
- India's biggest Ayurveda union.
- For Ayurvedic E- book follow, subscribe us on

Telegram-
https://t.me/ayurvedaekvikalpfoundation

Facebook-
https://m.facebook.com/ayurvedaekvikalp/?ref=bookmarks

E-mail- ayurvedaekvikalp@gmail.com

Website- ayurvedaekvikalp.org

For WhatsApp group msg-
9561788826

become member and explore the Ayurveda

- अयुतसिद्ध सम्बन्ध निम्न वस्तुओं में पाया जाता है —
  1. अवयव और अवयवी (उदा: कागज और पुस्तक)
  2. गुण और गुणी/द्रव्य (उदा: औष्ण्य और अग्नि)
  3. क्रिया और द्रव्य (उदा: गति और वायु)
  4. जाति और व्यक्ति (उदा: मनुष्यत्व और मनुष्य)
  5. विशेष और नित्य द्रव्य (उदा: एकपरमाणु और दूसरा परमाणु)

❖❖❖

8. अभाव विज्ञानीयम् (Abhava-negation/Non-existence)

लक्षण(*Features*)

- **प्रतियोगिज्ञानाधीनविषयत्वमभावत्वम्।** सिद्धान्त चन्द्रोदय

जिस विषय का ज्ञान प्रतियोगी (अर्थात् विरोधी) के ज्ञान के अधीन हो, उसे अभाव कहते हैं।

- **निषेधमुखप्रमाणगम्योऽभावरूपः सप्तमः पदार्थः प्रतिपाद्यते।** तर्कभाषा

जिस पदार्थ का उल्लेख नकारात्मक रूप से किया जाता है, वही अभाव है।

- **असत् अभावरूपम्।** चरकोपस्कार

असत् ही अभाव का लक्षण है।

भेद(*Classification*)

अभाव के दो भेद होते हैं:

1. **संसर्गाभाव**
2. **अन्योन्याभाव**

संसर्गाभाव के पुनः तीन भेद होते हैं:

(1) प्रागभाव

(2) प्रध्वंसाभाव

(3) अत्यन्ताभाव

1. **संसर्गाभाव** (*Negation of relation*): जिसमें दो वस्तुओं के सम्बन्ध का निषेध किया जाता है, वह संसर्गाभाव (*Negation of relation*) है। उदाहरण: क ख में नहीं है।

इसके पुनः तीन भेद होते हैं:

1. **प्रागभाव** (*Prior negation*): उत्पत्ति से पहले किसी वस्तु का अभाव होना प्रागभाव (*Prior negation*) है। उदाहरण: जन्म से पूर्व व्यक्ति का अभाव।

2. **प्रध्वंसाभाव** (*Posierior negation*): किसी वस्तु की उत्पत्ति के

बाद उस वस्तु का अपने समवायिकारण में अभाव होना प्रध्वंसाभाव (*Posterior negation*) है। उदाहरण: मृत्यु के पश्चात् व्यक्ति अभाव।

3. **अत्यन्ताभाव** (*Absolute negation*): जो अभाव भूत, भविष्यत् और वर्तमान इन तीनों कालों में रहे, वह अत्यन्ताभाव (*Absolute negation*) है। उदाहरण: रूप का वायु में अभाव या शीत का अग्नि में अभाव।

2. **अन्योन्याभाव** (*Mutual negation/ negation of being*): एक वस्तु का दूसरी वस्तु के रूप में अभाव होना अन्योन्याभाव (*Mutual negation*) है। उदाहरण: क ख नहीं है।

❖❖❖

Paper II

Section A

1. परीक्षा/प्रमाण (Pariksha / Pramana)

बुद्धि (Buddhi)

- **सर्वव्यवहारहेतुर्गुणो बुद्धिर्ज्ञानम्।** तर्कसंग्रह

  सभी प्रकार के व्यवहार में जो गुण कारण होता है, वह बुद्धि है।

- **बुद्धिस्तूहापोहज्ञानम्।** चक्रपाणि

  ऊहापोह स्वरूप ज्ञान बुद्धि है।

- पर्याय: - बुद्धि - उपलब्धि - ज्ञान

- **भेद: सा द्विविधा स्मृतिऽनुभवश्च।** तर्कसंग्रह

2

1. स्मृति
   - यथार्थ (प्रमाजन्य)

   - अयथार्थ (अप्रमाजन्य)

2. अनुभव
   - यथार्थ अनुभव (प्रमा)
     - प्रत्यक्ष
     - अनुमिति
     - उपमिति
     - शब्दज
   - अयथार्थ अनुभव (अप्रमा)
     - संशय
     - विपर्यय
     - तर्क

स्मृति (*Smruti*)

परिभाषा (*Definition*)

- **दृष्टश्रुतानुभूतानां स्मरणात्स्मृतिरुच्यते।** च.शा. 1.149

  पूर्व में देखे, सुने या अनुभूत विषयों का पुन: स्मरण होना स्मृति है।

- **आत्ममनसोः संयोगविशेषात् संस्काराच्च स्मृतिः।** वैशेषिक 9/2/6

  आत्मा एवं मन के विशेष संयोग और संस्कार से स्मृति का ज्ञान होता है।

- **संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः।** तर्कसंग्रह

  संस्कार मात्र से उत्पन्न ज्ञान स्मृति है।

प्रकार *(Types of Smruti)*

- **स्मृतिरपि द्विविधा - यथार्था अयथार्था च। प्रमाजन्या यथार्था, अप्रमा जन्या अयथार्था।** तर्कसंग्रह
  - यथार्थ (प्रमाजन्य)
  - अयथार्थ (अप्रमाजन्य)

स्मृति के कारण *(Reasons for smruti)*

- **वक्ष्यन्ते कारणान्यष्टौ स्मृतिर्यैरुपजायते।**
  निमित्तरूपग्रहणात् सादृश्यात् सविपर्ययात्।।
  सत्वानुबन्धादभ्यासाज्ज्ञानयोगात्पुनः श्रुतात्।। च.शा. 148-149
  1. निमित्त
  2. रूपग्रहण

3. सादृश्य
4. सविपर्यय
5. सत्वानुबन्ध
6. अभ्यास
7. ज्ञान योग
8. पुनःश्रुत

- न्याय दर्शन में स्मृति के 24 कारण कहे गये हैं।

अनुभव *(Anubhava)*

लक्षण *(Definition of Anubhava)*

- **तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः।** तर्कसंग्रह

  स्मृति से भिन्न ज्ञान को अनुभव कहते हैं।

भेद *(Classification)*

- **स द्विविधः - यथार्थोऽयथार्थश्च।** तर्कसंग्रह
  - यथार्थ अनुभव (प्रमा)
    - प्रत्यक्ष
    - अनुमिति

- उपमिति
- शब्दज

- अयथार्थ अनुभव (अप्रमा)
  - संशय
  - विपर्यय
  - तर्क

यथार्थ अनुभव (*Yathartha anubhava*)

- लक्षण: **तद्वति तत्प्रकारकानुभवो यथार्थः।** तर्कसंग्रह
  जिसमें जो है, वहाँ उसका जो अनुभव है, उसे यथार्थ अनुभव कहते हैं।
- पर्याय: प्रमा
- भेद: 4
  - प्रत्यक्ष
  - अनुमिति
  - उपमिति
  - शब्दज

अयथार्थ अनुभव (*Ayathartha anubhava*)

- लक्षण: **तदभाववति। तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः।** तर्कसंग्रह
  जिसमें जो नहीं है, वहाँ उसका जो अनुभव है, उसे अयथार्थ अनुभव कहते हैं।
- पर्याय: अप्रमा
- भेद: 3
  - संशय
  - विपर्यय
  - तर्क

प्रमा (Prama)

लक्षण (*Features*)

- **तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः। (यथा–रजते इदं रजतमिति ज्ञानम्।) सैव प्रमेत्युच्यते।** तर्कसंग्रह
  जिसमें जो है, वहाँ उसका जो अनुभव है, उसे यथार्थ अनुभव कहते हैं और इसे ही प्रमा भी कहते हैं।
- **यत्र यदस्ति तत्र तस्यानुभवः प्रमा।** तत्त्वचिन्तामणि

जो वस्तु जैसी है उसमें उसी प्रकार का ज्ञान होना प्रमा कहलाता है।

भेद (*Classification*)

- 4
  - प्रत्यक्ष
  - अनुमिति
  - उपमिति
  - शब्दज

प्रमा के करण (*Karana of Prama*)

- 4
  - प्रत्यक्ष
  - अनुमान
  - उपमान
  - शब्द

प्रमा के आधार (*Adhara of Prama*)

- 3
  - प्रमेय

  - प्रमाता
  - प्रमाण

अप्रमा (Aprama) तर्कसंग्रह

- **अयथार्थनुभवोऽप्रमा।**

जिसमें जो नहीं है, वहाँ उसका जो अनुभव है, उसे अयथार्थ अनुभव कहते हैं। यही अप्रमा भी कहलाता है।

प्रमेय (Prameya) वात्स्यायन

- **योऽर्थः प्रमीयते तत्प्रमेयम्।**

यथार्थ ज्ञान के विषय या अनुभव को प्रमेय कहते हैं।

- **प्रमाणेन प्रमीयते यत् तत् प्रमेयम्।** गंगाधर

जिनका प्रमाणों के द्वारा अनुभव किया जा सके वह प्रमेय है।

- संख्या
  - न्यायदर्शन मतेन: 12
  - **आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनःप्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदुःखा-पवर्गाः प्रमेयाः।** गौ.सू.1/1/9
  - आत्मा - शरीर - इन्द्रिय - अर्थ - बुद्धि - मन - प्रवृत्ति - दोष - प्रेत्यभाव - फल - दुःख - अपवर्ग

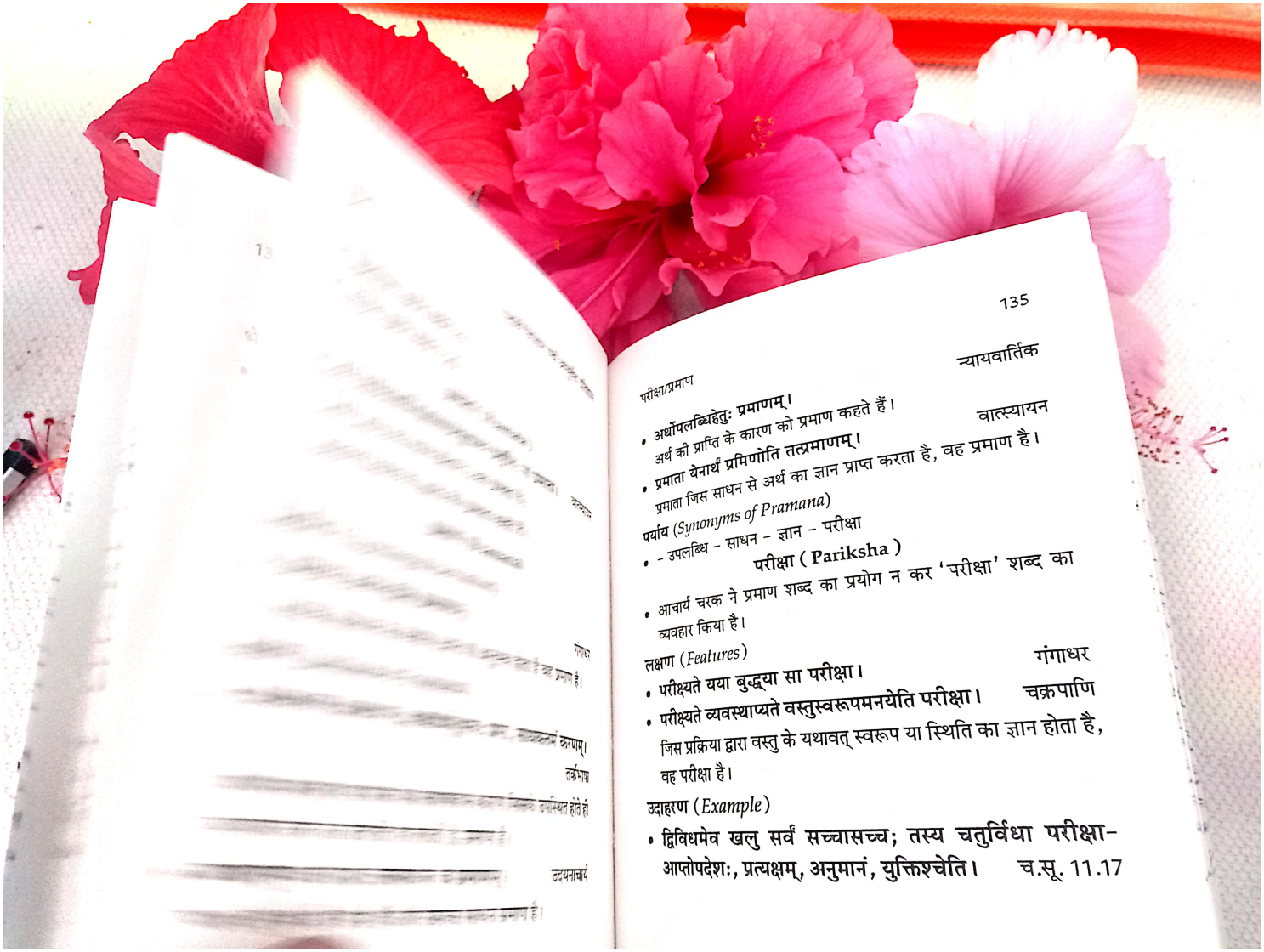

135
परीक्षा/प्रमाण
न्यायवार्तिक
• अर्थोपलब्धिहेतुः प्रमाणम्।
अर्थ की प्राप्ति के कारण को प्रमाण कहते हैं।
वात्स्यायन
• प्रमाता येनार्थं प्रमिणोति तत्प्रमाणम्।
प्रमाता जिस साधन से अर्थ का ज्ञान प्राप्त करता है, वह प्रमाण है।
पर्याय (Synonyms of Pramana)
• - उपलब्धि - साधन - ज्ञान - परीक्षा
परीक्षा (Pariksha)
• आचार्य चरक ने प्रमाण शब्द का प्रयोग न कर 'परीक्षा' शब्द का व्यवहार किया है।
लक्षण (Features)
गंगाधर
• परीक्ष्यते यया बुद्ध्या सा परीक्षा।
• परीक्ष्यते व्यवस्थाप्यते वस्तुस्वरूपमनयेति परीक्षा।
चक्रपाणि
जिस प्रक्रिया द्वारा वस्तु के यथावत् स्वरूप या स्थिति का ज्ञान होता है, वह परीक्षा है।
उदाहरण (Example)
• द्विविधमेव खलु सर्वं सच्चासच्च; तस्य चतुर्विधा परीक्षा- आप्तोपदेशः, प्रत्यक्षम्, अनुमानं, युक्तिश्चेति। च.सू. 11.17

- **द्विविधा तु खलु परीक्षा ज्ञानवतां - प्रत्यक्षम्, अनुमानं च। एतद्धि द्वयमुपदेशश्च परीक्षा स्यात्। एवमेषा द्विविधा परीक्षा, त्रिविधा वा सहोपदेशेन।।** च.वि. 8/83

संख्या (*Number*)

दर्शन	संख्या	नाम
चार्वाक दर्शन	1	→ प्रत्यक्ष
वैशेषिक दर्शन, बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन	2	→ प्रत्यक्ष → अनुमान
सांख्य दर्शन एवं योग दर्शन	3	→ प्रत्यक्ष → अनुमान → शब्द
न्याय दर्शन	4	→ प्रत्यक्ष → अनुमान → शब्द → उपमान
प्रभाकर मीमांसक	5	→ प्रत्यक्ष → अनुमान → शब्द → उपमान → अर्थापत्ति
भट्ट मीमांसक एवं वेदान्त दर्शन	6	→ प्रत्यक्ष → अनुमान → शब्द → उपमान → अर्थापत्ति → अभाव

दर्शन	संख्या	नाम
पौराणिक	8	→ प्रत्यक्ष → अनुमान → शब्द → उपमान → अर्थापत्ति → अभाव → सम्भव → ऐतिह्य
तान्त्रिक	9	→ प्रत्यक्ष → अनुमान → शब्द → उपमान → अर्थापत्ति → अभाव → सम्भव → ऐतिह्य → चेष्टा
अन्य	10	→ प्रत्यक्ष → अनुमान → शब्द → उपमान → अर्थापत्ति → अभाव → सम्भव → ऐतिह्य → चेष्टा → परिशेष

सन्दर्भ (*References*)

- **प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्दाः प्रमाणानि।** गौ.न्या.सू. 1/1/13
- **द्विविधमेव सर्वं सच्चासच्च। तस्य चतुर्विधा परीक्षा- आप्तोपदेशः, प्रत्यक्षम्, अनुमानं, युक्तिश्च।** च.सू. 11/17

- **त्रिविधं खलु रोगविशेषविज्ञानं भवति। तद्यथा- आप्तोपदेशः प्रत्यक्षं अनुमानञ्चेति।** च.वि. 4/3
- **द्विविधा तु खलु परीक्षा ज्ञानवतां - प्रत्यक्षमनुमानं च। एतद्धि द्वयमुपदेशश्च परीक्षा स्यात्। एवमेषा द्विविधा परीक्षा, त्रिविधा वा सहोपदेशेन।** च.वि. 8/83
- **तस्यांगवरमाद्यम् प्रत्यक्षागमानुमानोपमानैरविरुद्धम्** सु.सू. 1/16
- **दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च।** सांख्यकारिका
- **तत्र प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि।** योगदर्शन

अष्टविध प्रमाणों का त्रिविध प्रमाणों में समावेश (*Inclusion of eight pramanas in three Pramanas*)

- प्रत्यक्ष प्रमाण में: ⟶ उपमान / अर्थापत्ति / सम्भव / अनुपलब्धि का
- अनुमान प्रमाण में: ⟶ चेष्टा का
- आप्तोपदेश प्रमाण में: ⟶ ऐतिह्य का

❖❖❖

2. आप्तोपदेश परीक्षा (Aptopadesha)

आप्तोपदेश प्राधान्य (*Importance of Aptopadesha*)

- आयुर्वेद ने त्रिविध प्रमाणों में आप्तोपदेश प्रमाण को प्रधान माना है।

यथा

त्रिविधेन खल्वनेन ज्ञानसमुदायेन पूर्वं परीक्ष्य रोगं सर्वथा सर्वमथोत्तरकाल- मध्यवसानमदोषं भवति,

न हि ज्ञानावयवेन कृत्स्ने ज्ञेये ज्ञानमुत्पद्यते। त्रिविधे त्वस्मिन् ज्ञानसमुदये पूर्वमाप्तोपदेशाज्ज्ञानं,

ततः प्रत्यक्षानुमानाभ्यां परीक्षोपपद्यते। किं ह्यनुपदिष्टं पूर्वं यत्तत् प्रत्यक्षानुमानाभ्यां परीक्षमाणो विद्यात्।

तस्मादिद्विविधा परीक्षा ज्ञानवतां प्रत्यक्षम्, अनुमानं च; त्रिविधा वा सहोपदेशेन।। च.वि. 4.5

पर्याय (*Synonym*)

- आप्तोपदेश
- आप्त वचन
- आप्त श्रुति
- शब्द
- आगम

लक्षण (*Features*)

- **तत्राप्तोपदेशो नामाप्तवचनम्।** च.वि. 4/4

  आप्त पुरुषों के वचन आप्तोपदेश कहलाते हैं।

- **आप्तश्रुतिः आप्तवचनं तु।** सांख्यकारिका 5

  आप्तश्रुति आप्त वचन है।

- **आप्तोपदेशः शब्दः।** न्या.द. 1/7

  आप्त पुरुषों का उपदेश 'शब्द' प्रमाण है।

- **आप्तवाक्यं शब्दः। आप्तस्तु यथाऽर्थवक्ता।** तर्कसंग्रह

  यथार्थ कहनेवाले **'आप्त'** होते हैं और उनके वाक्य शब्द नामक प्रमाण।

भेद (*Classification*)

- 2
  - दृष्टार्थ
  - अदृष्टार्थ
- 2 (चक्रपाणि मतेन)
  - परमाप्तब्रह्मादि प्रणीत
  - लौकिकाप्त प्रणीत

आप्त (Apta - Authority)

लक्षण (*Features*)

- **आप्तास्तावत् –**

  रजस्तमोभ्यां निर्मुक्तास्तपोज्ञानबलेन ये।
  येषां त्रिकाल्ममलं ज्ञानमव्याहतं सदा।।
  आप्ताः शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्।
  सत्यं, वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः।। च.सू. 11/18-19

जो अपनी तपस्या और ज्ञान के बल से रज एवं तम दोषों से नि:शेषरूप से निर्मुक्त हैं, जिनको भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल का ज्ञान है; जिनका ज्ञान सदा अव्याहत आकुण्ठित है, वे ही आप्त, शिष्ट तथा विबुद्ध हैं। उनके वचन नि:सन्देह सत्य हैं। कारण यह है, कि वे रजोगुण तथा तमोगुण इन दोनों दोषों से निर्मुक्त होने के कारण असत्य भाषण क्यों करेंगे।

- **आप्ता ह्यवितर्कस्मृतिविभागविदो निष्प्रीत्युपतापदर्शिनश्च। तेषामेवंगुण- योगाद्यद्वचनं तत् प्रमाणम्।** च.वि. 4.4

आप्त वे हैं जिनके वचन किसी तर्क से असत्य सिद्ध न हो सकें, जो स्मृतिसम्पन्न हों, जो उचित एवं अनुचित के भेद को सम्यक् रूपेण जानते हों और जो प्रीति अथवा उपताप (द्वेष) से रहित हों।

पर्याय (*Synonym*)

- *शिष्ट*
- *विबुद्ध*

ऐतिह्य (Aitihya)

- **अथैतिह्यम्- ऐतिह्यं नामाऽऽप्तोपदेशो वेदादि:।** च वि 8.41

आप्त पुरुषों के जो उपदेश हैं, उन्हें ऐतिह्य कहते हैं। उदाहरण: वेदादि।

- **अलौकिकाप्तोपदेश ऐतिह्यपदेनोच्यते।** चक्रपाणि

जो अलौकिक आप्तोपदेश वेदादि हैं, वे ऐतिह्य हैं।

शब्द (Shabda)

- **आप्तोपदेश: शब्द:।** न्यायवार्तिक

आप्त के उपदेश को शब्द कहते हैं।

- **आप्तवाक्यं शब्द:।** तर्कसंग्रह

आप्त के वचन शब्द हैं।

- **अथ शब्द:-शब्दो नाम वर्णसमाम्नाय:।** च.वि. 8.38

वर्ण को मिलाने वाला समूह शब्द है।

- भेद
  - 2
    - लौकिक शब्द
    - अलौकिक शब्द
- चरक मतेन शब्द के प्रकार
  - 4
    - दृष्टार्थ

- अदृष्टार्थ
- सत्य
- अनृत

शास्त्र (Shastra)

- **शिष्यतेऽनेनेति शास्त्रम्, शास् + ष्ट्रान्।**
  शासन करने वाले को शास्त्र कहते हैं। वाचस्पत्यम्
- **शंसनाद्वा शास्त्रम्।**
  किसी गूढ़तत्त्व का शंसन (प्रतिपादन) करने वाला शास्त्र कहा जाता है। निरुक्तम्

निघण्टु (Nighantu)

- **ॐ समाम्नायः समाम्नातः। स व्याख्यातव्यः। तमिमं समाम्नायं निघण्टवः इत्याचक्षते।** निरुक्त 1.1.1
  वैदिक शब्दों का समुदाय, जिसका मर्यादापूर्वक ज्ञानोपार्जन किया जाता है उसे व्याख्येय कहते हैं, तथा इसी को निघण्टु भी कहते हैं।

वाक्य (Vakya)

लक्षण (*Features*)

- **वाक्यं पदसमूहः।** तर्कभाषा

पदों के समूह को वाक्य कहा जाता है।

- **वाक्यं त्वाकाङ्क्षायायोग्यतासन्निधिमतां पदनां समूहः।** तर्कभाषा
  आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि से युक्त पदों का समूह वाक्य है।

वाक्यार्थ बोधक वृत्तियाँ (*Vrttis for Vakyartha Bodha*)

- 4

1. अभिधा (पद का अपने अर्थ को सीधे प्रकट करना)
2. लक्षणा (पद का उसकी निरुक्ति के अनुसार ज्ञान न होकर दूसरे अर्थ का ज्ञान होना)

- भेदः 2
  1. गौणी
  2. शुद्धा
     1. जहल्लक्षणा
     2. अजहल्लक्षणा

3. व्यञ्जना (व्यंग्यात्मक वृत्ति)
4. तात्पर्याख्या (अनेकार्थ शब्दों या पदों का प्रकरण आदि के अनुसार अर्थ लगाना)

वाक्यार्थ ज्ञान के हेतु या कारण (*Hetu/ karana for Vakyartha jnana*)

- 3

1. **आकांक्षा** (पद का दूसरे पद के अभाव से जहाँ शाब्दबोध की जनकता नहीं होती)
2. **योग्यता** (वाक्य के अर्थ का बाधित न होना)
3. **सन्निधि** (पदों का बिना विलम्ब के उच्चारण करना)

शक्तिग्रह (Shaktigraha)

- पर्याय: संकेतग्रह
- लक्षण: पद की शक्ति उसके विषयों में होती है, इस शक्ति को प्राप्त करने के साधन को 'शक्तिग्रह' कहते हैं।
- साधन: 8

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोषाप्तवाक्यात् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषात् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः।।

1. व्याकरण
2. उपमान
3. कोष
4. आप्तवाक्य
5. व्यवहार
6. वाक्यशेष
7. विवृत्ति (विवरण)
8. सान्निध्य

❖❖❖

3. प्रत्यक्ष परीक्षा
(Pratyaksha Pariksha)

लक्षण (*Features*)

- **आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते।**
  व्यक्ता तदात्वे या बुद्धिः प्रत्यक्षं सा निरुच्यते।। च.सू. 11/20

आत्मा, इन्द्रिय (ज्ञानेन्द्रियों) मन तथा इन्द्रियार्थों (शब्दादि) के सन्निकर्ष से जो बुद्धि (ज्ञान) व्यक्त होती है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं।

- **अथ प्रत्यक्षं- प्रत्यक्षं नाम तद्यदात्मना चेन्द्रियैश्च स्वयमुपलभ्यते; तत्रात्मप्रत्यक्षाः सुखदुःखेच्छाद्वेषादयः, शब्दादयस्त्विन्द्रियप्रत्यक्षाः।।**

च.वि. 8/39

प्रत्यक्ष वह है जो आत्मा तथा ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्वयं जाना जाता है

- **इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।** तर्कसंग्रह

इन्द्रिय और अर्थ के सन्निकर्ष अर्थात् सम्बन्ध से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है।

- **इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानं अव्यपदेश्यं अव्यभिचारी व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।** न्या.द.

इन्द्रिय और अर्थ के संयोगा से उत्पन्न ज्ञान जो अटल, यथार्थ और निश्चयात्मक रूप है, वह प्रत्यक्ष है।

भेद (*Classification*)

- 2

1. निर्विकल्पक (**तत्र निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम्। यथा किञ्चिदिदमिति।** *तर्कसंग्रह*)
2. सविकल्पक (**सप्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्। यथा डित्थोऽयं ब्रह्मणोऽयं श्यामोऽयमिति।** *तर्कसंग्रह*)

- लौकिक प्रत्यक्ष
  - बाह्य लौकिक प्रत्यक्ष
    - 1. घ्राणज प्रत्यक्ष
    - 2. रासन प्रत्यक्ष
    - 3. चाक्षुष प्रत्यक्ष
    - 4. स्पार्शन प्रत्यक्ष
    - 5. श्रोत्रिय प्रत्यक्ष
  - आभ्यन्तर लौकिक प्रत्यक्ष
- अलौकिक प्रत्यक्ष
  - सामान्यलक्षण प्रत्यासत्ति
  - ज्ञानलक्षण प्रत्यासत्ति
  - योगज
    - युक्त
    - युञ्जान

इन्द्रिय (*Indriya*)

लक्षण (*Features*)

- **इन्द्रियमिन्द्रलिंगमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा।** पा सू 5.2.93

इन्द्र का लक्षण (लिंग), इन्द्र से देखा गया (दृष्ट), इन्द्र से सृजित (सृष्ट) किया गया, इन्द्र से युक्त (जुष्ट) होना और इन्द्र से दिया

(दत्त) जाना, इन्द्रिय का लक्षण है। यहाँ पर इन्द्रिय शब्द से आत्मा का ग्रहण होता है।

तथ्य (*Facts*)

- ज्ञान का साधन इन्द्रिय है।
- स्पर्शनेन्द्रिय व्यापक इन्द्रिय है।
- चक्षुरिन्द्रिय श्रेष्ठ इन्द्रिय है।
- वैदेह जनक के अनुसार गर्भ में सर्व प्रथम इन्द्रिय उत्पन्न होता है।
- चरक, सुश्रुत, वैशेषिक, न्याय तथा वेदान्त मतेन इन्द्रिय भौतिक हैं।
- सांख्य मतेन इन्द्रिय अभौतिक अर्थात् अहंकारिक हैं।
- इन्द्रिय धारण का कार्य प्राणवायु करता है।
- सुश्रुत मतेन गर्भ में इन्द्रिय
  - तृतीय मास → सूक्ष्म
  - चतुर्थ मास → प्रव्यक्त
  - सप्तम मास → प्रव्यक्ततर

इन्द्रिय संख्या (*Number of indriyas*)

- कुल संख्या: 11

- ज्ञानेन्द्रियः 5
- कर्मेन्द्रियः 5
- उभयेन्द्रियः 1

इन्द्रिय वर्गीकरण (*Classification of Indriyas*)

- **ज्ञानेन्द्रिय** (*Jnanendriya*)
  - वागिन्द्रिय
  - स्पर्शनेन्द्रिय
  - चक्षुरिन्द्रिय
  - घ्राणेन्द्रिय
  - रसनेन्द्रिय
- **कर्मेन्द्रिय** (*Karmendriya*)
  - वाक्
  - पाणि
  - पाद
  - पायु
  - उपस्थ

मन (Mana)

- पर्याय: – अतीन्द्रिय – उभयेन्द्रिय
- मन ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाविधि में कारण है।
- मूल स्थान: हृदय
- कार्य का स्थान: शिर
- सञ्चरण स्थान: सर्व शरीर
- गुण: अणु एवं एक
- विषय
  - चिन्त्यम्
  - विचार्य
  - ऊह्यम्
  - ध्येय
  - संकल्प्यम्
- कर्म:
  - इन्द्रियाभिग्रह
  - निग्रह

- ऊह
- विचार

इन्द्रिय पञ्चपञ्चक *(Indriay Pancha - Panchaka)*

इन्द्रिय	इन्द्रिय द्रव्य	इन्द्रिय अधिष्ठान	इन्द्रिय अर्थ	इन्द्रिय बुद्धि
श्रोत्र	आकाश	कर्ण	शब्द	शब्द ज्ञान
स्पर्शन	वायु	त्वक्	स्पर्श	स्पर्श ज्ञान
चक्षु	अग्नि	नेत्र	रूप	रूप ज्ञान
रसना	जल	जिह्वा	रस	रस ज्ञान
घ्राण	पृथिवी	नासिका	गन्ध	गन्ध ज्ञान

इन्द्रिय ज्ञान *(Jnana of Indriya)*

- अनुमान जन्य होता है।

वागिन्द्रिय (Vagindriya)

- पर्याय: – रसना – जिह्वा – जिह्विका – रसनेन्द्रिय
- इन्द्रिय अधिष्ठान: जिह्वा
- इन्द्रिय द्रव्य: रस

- इन्द्रियार्थ: रसार्थ
- इन्द्रिय बुद्धि: रस बुद्धि
- संख्या: एक
- उत्पत्ति:
  - **कफशोणितमांसानां साराज्जिह्वा प्रजायते।** सु.शा. 4.28
    कफ शोणित एवं मांस के सार भाग से।
- महाभूत: जल
- आश्रय: – प्राण वायु – उदान वायु – बोधक कफ

घ्राणेन्द्रिय (Ghranendriya)

- पर्याय: – नासा – नासिका – घ्राण – गन्धेन्द्रिय
- इन्द्रिय अधिष्ठान: नासा
- इन्द्रिय द्रव्य: गन्ध
- इन्द्रियार्थ: गन्धार्थ
- इन्द्रिय बुद्धि: गन्ध बुद्धि
- संख्या· एक
- महाभूत: पृथ्वी
- आश्रय: कफ

स्पर्शनेन्द्रिय (Sparshanendriya)

- इन्द्रिय अधिष्ठान: त्वचा
- इन्द्रिय द्रव्य: स्पर्श
- इन्द्रियार्थ: स्पर्शार्थ
- इन्द्रिय बुद्धि: स्पर्श बुद्धि
- संख्या: 1
- महाभूत: वायु

चक्षुरिन्द्रिय (Chakshurindriya)

- पर्याय: – अक्षि – चक्षु – दृष्टि – दर्शनेन्द्रिय
- इन्द्रिय अधिष्ठान: चक्षु
- इन्द्रिय द्रव्य: रूप
- इन्द्रियार्थ: रूपार्थ
- इन्द्रिय बुद्धि: रूप बुद्धि
- संख्या: दो
- महाभूत: तेज

श्रवणेन्द्रिय (Shravanendriya)

- पर्याय: – कर्ण– श्रुति– श्रोत्रेन्द्रिय
- इन्द्रिय अधिष्ठान: कर्ण
- इन्द्रिय द्रव्य: शब्द
- इन्द्रियार्थ: शब्दार्थ
- इन्द्रिय बुद्धि: शब्द बुद्धि
- संख्या: दो
- महाभूत: आकाश

कर्मेन्द्रिय (Karmendriya)

- संख्या: 5
- हस्त → ग्रहण कर्म
- पाद → गमन कर्म
- गुदा → मल विसर्जन
- उपस्थ → मूत्र विसर्जन
- वाक् → वाणी

त्रयोदश करण (*Thirteen Karanas*)

- ज्ञानेन्द्रिय: 5
- कर्मेन्द्रिय: 5
- मन
- बुद्धि
- अहंकार

अन्त:करण (*Antah karana*)

- 3
  1. मन
  2. बुद्धि
  3. अहंकार

अन्त: करण की वृत्तियाँ (*Vrttis of Antah karana*)

- मन: संकल्प
- बुद्धि: अध्यवसाय
- अहंकार: अभिमान

सन्निकर्ष (*Sannikarsha*)

लक्षण (*Features*)

- **सन्निकर्षो नाम सम्बन्धः।**

सन्निकर्ष सम्बन्ध को कहते हैं।

भेद (*Classification*)

- 6

1. संयोग
2. संयुक्तसमवाय
3. संयुक्तसमवेतसमवाय
4. समवाय
5. समवेतसमवाय
6. विशेषण-विशेष्य भाव

प्रत्यक्ष प्रमाण की अल्पता (*Meagerness of Pratyaksha pramana*)

- **प्रत्यक्षं ह्यल्पम्; अनल्पमप्रत्यक्षमस्ति, यदागमानुमानयुक्तिभिरुपलभ्यते; यैरेव तावदिन्द्रियैः प्रत्यक्षमुपलभ्यते, तान्येव सन्ति चाप्रत्यक्षाणि।**

च.सू. 11/7

प्रत्यक्ष बाधक भाव (*Factors interrupting Pratyaksha*)

- **अतिदूरात् समीप्यात् इन्द्रियघातात् मनोऽनवस्थानात्। सौक्ष्म्यात् व्यवधानात् अभिभवात् समानाभिहाराच्च।।** सां का 7
- **सतां च रूपाणामतिसन्निकर्षादतिविप्रकर्षादावरणात् करणदौर्बल्यान्मनोऽनवस्थानात् समानाभिहारादभिभवादतिसौक्ष्म्याच्च प्रत्यक्षानुपलब्धिः।** च.सू. 11/8

1. अतिसन्निकर्ष
2. अतिविप्रकर्ष
3. आवरण
4. करण दौर्बल्य
5. मनोऽनवस्थान
6. समानाभिहार
7. अभिभव
8. अतिसौक्ष्म्य

प्रत्यक्ष प्रमाण की आयुर्वेद में उपयोगिता (*Importance of Pratyaksha in Ayurveda*)

- **प्रत्यक्षतस्तु खलु रोगतत्त्वं बुभुत्सुः सर्वैरिन्द्रियैः सर्वानिन्द्रियार्थानातुरशरीरगतान् परीक्षेत्, अन्यत्र रसज्ञानात्।** च.वि. 4/7

❖❖❖

4. अनुमान परीक्षा
(Anumana Pariksha)

ज्ञान प्रकार (*Types of Jnana*)

- 2

1. प्रत्यक्ष ज्ञान (इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष जन्य)
2. अप्रत्यक्ष ज्ञान (अनुमान, उपमान एवं शब्द प्रमाण द्वारा ज्ञात)

अनुमान (*Anumana*)

निरुक्ति (*Etymological derivation*)

- **अनु पश्चात् मीयते ज्ञायते इति अनुमानम्।**
  जिससे बाद में या जिसका बाद में ज्ञान प्राप्त होता है वह अनुमान है।
- **अनुपूर्वं हेतुं दृष्टा पश्चान्मीयते इत्यनुमानम्।**

प्रथम कारण को देखकर पश्चात् उसके आधार पर परोक्ष स्थित विषय का ज्ञान प्राप्त किया जाना अनुमान है।

लक्षण (*Lakshana*)

- **प्रत्यक्षपूर्वं त्रिविधं त्रिकालं चानुमीयते।**
  वह्निर्निगूढो धूमेन मैथुनं गर्भदर्शनात्।।
  एवं व्यवस्यन्त्यतीतं बीजात् फलमनागतम्।
  दृष्ट्वा बीजात् फलं जातमिहैव सदृशं बुधाः।। च.सू. 11/21-22
  अनुमान प्रत्यक्षपूर्वक होता है। जिसका प्रत्यक्ष हुआ रहता है, उसी का अनुमान होता है। यह तीन प्रकार का तथा त्रैकालिक होता है।
  उदाहरण: धूम से गूढ़ वह्नि का अनुमान वर्तमानकालिक, गर्भ दर्शन से मैथुन का अनुमान भूतकालिक तथा बीज से उत्पन्न होने वाले फल का अनुमान भविष्यत् कालीन है।
- **अनुमानं खलु तर्को युक्त्यपेक्षः।** च.वि. 4/4
  युक्ति की अपेक्षा रखने वाला तर्क ही अनुमान है।
- **अनुमानं नाम तर्को युक्त्यपेक्षः; यथा- अग्निं जरणशक्त्या, बलं व्यायामशक्त्या, श्रोत्रादीनि शब्दादिग्रहणेनेत्येवमादि।**
  च.वि. 8.40

युक्ति की अपेक्षा रखनेवाले तर्क को अनुमान कहते हैं।

उदाहरण:

- पाचन शक्ति से जाठराग्नि का अनुमान
- व्यायाम शक्ति से बल का अनुमान
- शब्दादि ग्रहण शक्ति से श्रोत्रादि इन्द्रियों का अनुमान

- **वस्तु यत् परोक्षं तदनुप्रत्यक्षात् पश्चाद् यन्मीयते ज्ञायते तदनुमानम्।**
  कविराज गंगाधर

प्रत्यक्ष पश्चात् परोक्ष स्थित वस्तु का जो ज्ञान किया जाता है, वह अनुमान है।

- **अनु पश्चादव्यभिचारिलिंगाल्लिंगीमीयते ज्ञायते येन तदनुमानम्।**
  डल्हणाचार्य

पश्चात् अव्यभिचारी (निर्दुष्ट) लक्षण से लिंगी का ज्ञान जिससे होता है, वह अनुमान है।

- **अनुमितिकरणमनुमानम्।** तर्कसंग्रह

अनुमिति के करण (असाधारण कारण) को 'अनुमान' कहते हैं।

अनुमिति (*Anumiti*)

- **परामर्शजन्यं ज्ञानमनुमितिः।**
  परामर्श से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति कहते हैं।

परामर्श (*Paramarsha*)

- **व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः। यथा 'वह्निव्याप्य धूमवानयं पर्वत' इति ज्ञानं परामर्शः। तज्जन्य पर्वतो वह्निमानिति ज्ञान-मनुमितिः।** तर्कसंग्रह
  व्याप्ति सहित पक्ष धर्मता के ज्ञान को परामर्श कहते हैं।

व्याप्ति (*Vyapti*)

- **यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति साहचर्यनियमो व्याप्तिः।** तर्कसंग्रह
  जहाँ - जहाँ धुआँ है, वहाँ - वहाँ अग्नि है। इस प्रकार के साहचर्य नियम को व्याप्ति कहते हैं।
- भेद
  - 2
    1. अन्वय व्याप्ति (**अन्वयेन निरूपिता व्याप्तिः अन्वयव्याप्तिः।**)
    2. व्यतिरेक व्याप्ति (**व्यतिरेकेण या व्याप्तिः निरूप्यते सा व्यतिरेक व्याप्तिः।**)

व्याप्य (*Vyapya*)

- **यः व्याप्यते स व्याप्यः।**

  जो व्याप्त किया जाता है, वह व्याप्य है।

- **वह्निना धूमो व्याप्यते। यतः यत्र धूमस्तत्र वह्नि विद्यते एव। अतः धूम व्याप्यः।**

  वह्नि से धूम व्याप्त किया जाता है, अतः धूम व्याप्य है।

व्यापक (*Vyapaka*)

- **यः व्याप्नोति स व्यापकः। वह्निः धूमं व्याप्नोति, अतो वह्निर्व्यापकः।**

  जो व्याप्य होता है, वह व्यापक है। अग्नि धूम में व्याप्त होती है, अतः अग्नि व्यापक है।

अयुतसिद्ध (*Ayutasiddha*)

- **यर्योर्द्वयोर्मध्ये एकमपराश्रितमेवाऽवतिष्ठते तावयुतसिद्धौ।**

  जिन दोनों के बीच में एक नष्ट न होने तक दूसरे का आश्रित रहता है, वैसे दोनों पदार्थ अयुतसिद्ध कहलाते हैं।

पक्षधर्मता (*Pakshadharmata*)

- **व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तित्वं 'पक्षधर्मता'।** तर्कसंग्रह

व्याप्य अर्थात् धूम का पर्वतादि में रहना पक्षधर्मता है।

पक्ष (*Paksha*)

- **सन्दिग्धसाध्यवान् 'पक्षः', यथा-धूमानुमाने पर्वतः 'पक्षः'।** तर्कसंग्रह

  जिसमें साध्य अर्थात् वह्नि आदि का सन्देह होता है, वह पक्ष है।

  उदाहरणः पर्वतादि।

सपक्ष (*Sapaksha*)

- **निश्चितसाध्यवान् 'सपक्षः', यथा- धूमानुमाने महानसः सपक्षः।** तर्कसंग्रह

  जिसमें साध्य का निश्चय हो, उसे 'सपक्ष' कहते हैं। उदाहरणः वहाँ ही, अर्थात् 'पर्वतोवह्निमान्' पर्वत अग्नियुक्त है।

विपक्ष (*Vipaksha*)

- **निश्चितसाध्याऽभाववान् 'विपक्षः', यथा- जलाशयः।** तर्कसंग्रह

  जिसमें साध्य के अभाव का निश्चय हो, वह विपक्ष है। उदाहरणः 'पर्वतो वह्निमान् धूमात्' यहाँ साध्य जो वह्नि है, उस स्थल में जलाशय आदि विपक्ष हैं।

अनुमान के भेद (*Types of anumana*)

आयुर्वेद मतेनः 3

1. अतीत अनुमान
2. वर्तमान अनुमान
3. अनागत अनुमान

न्याय दर्शन मतेन: 3

- **अथ तत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत् सामान्यतोदृष्टञ्च।** न्या.द. 1.5

1. पूर्ववत् अनुमान (कारण से कार्य का अनुमान)
2. शेषवत् अनुमान (कार्य से कारण का अनुमान)
3. सामान्यतोदृष्ट अनुमान (एक स्थान पर किसी वस्तु को देखने से उत्पन्न तत्समान ही वस्तुओं का अनुमान)

तर्कसंग्रह मतेन: 2

- **अनुमानं द्विविधं, स्वार्थं परार्थञ्च।** तर्कसंग्रह

1. स्वार्थानुमान (**स्वार्थं स्वानुमिति हेतुः।**)
2. परार्थानुमान (**यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमाय परं प्रतिबोधयितुं पञ्चावयववाक्यं प्रयुज्यते तत्परार्थानुमानम्।**)

पञ्चावयव (*Panchavayava*)

परार्थानुमान में पाँच अवयवों द्वारा विषय को समझाने का उल्लेख किया गया है। ये पञ्चावयव हैं:

1. प्रतिज्ञा
2. हेतु
3. उदाहरण या दृष्टान्त
4. उपनय
5. निगमन

- आचार्य चरक ने इन पाँचों का समावेश 44 वाद मार्ग में किया है।

प्रतिज्ञा (*Pratijna*)

- **अथ प्रतिज्ञा- प्रतिज्ञा नाम साध्य वचनम्, यथा - नित्यः पुरुष इति।** च.वि. 8/30

जिस विषय को सिद्ध करना हो वह प्रतिज्ञा है। उदाहरण: पुरुष नित्य है।

हेतु (*Hetu*)

- **अथ हेतुः- हेतुर्नामोपलब्धिकारणं; तत् प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, ऐतिह्यम्, औपम्यमिति; एभिर्हेतुभिर्यदुपलभ्यते तत् तत्त्वम्।** च.वि. 8.33

उपलब्धि के कारण को हेतु कहते हैं। उदाहरण: प्रत्यक्ष, अनुमान, ऐतिह्य तथा औपम्य इन चारों कारणों से जिस विषय का ज्ञान होगा वही तत्त्वज्ञान होगा।

- भेद
  - 2
    - यथार्थ हेतु
    - अयथार्थ हेतु

उदाहरण या दृष्टान्त (*Udaharana/ Drshtanta*)

- **अथ दृष्टान्तः- दृष्टान्तो नाम यत्र मूर्खविदुषां बुद्धिसाम्यं, यो वर्ण्यं वर्णयति। यथा - अग्निरुष्णः, द्रवमुदकं, स्थिरा पृथिवी, आदित्यः प्रकाशक इति; यथा आदित्यः प्रकाशकस्तथा सांख्यज्ञानं प्रकाशकमिति।**

च.वि. 8.34

दृष्टान्त उसको कहते हैं जिससे मूर्खों तथा विद्वानों की समक्ष में उक्त विषय ठीक-ठीक प्रकार से आ जाये। तथा जो वर्णनीय विषय का दूसरे ही शब्दों में वर्णन करता है वह दृष्टान्त या उदाहरण है। उदाहरण: अग्नि उष्ण है, उदक अर्थात् जल द्रव है, पृथिवी स्थिर है और सूर्य प्रकाशक है।

- भेद (*Types*)
  - 2
    - साधर्म्य दृष्टान्त
    - वैधर्म्य दृष्टान्त

उपनय (*Upanaya*)

- **उदाहरणापेक्षस्तथेत्युपसंहारो न तथेति वा साध्यस्योपनयः।** न्या.द. 1/38

उदाहरण के अनुसार साध्य का समर्थन करना उपनय है।

निगमन (*Nigamana*)

- **हेत्वपदेशात् प्रतिज्ञायाः पुनर्वचनम् निगमनम्।** न्या.द. 1/39

उपनय के बाद निष्कर्ष रूप में अपनी प्रतिज्ञा का पुनः वचन निगमन है।

लिंग परामर्श (*Linga Paramarsha*)

- **स्वार्थानुमितिपरार्थानुमित्योर्लिंगपरामर्श एव करणम्। तस्माल्लिंग-परामर्शोऽनुमानम्।** तर्कसंग्रह

स्वार्थानुमिति और परार्थानुमिति दोनों का असाधारण कारण रूप करण लिंग परामर्श।

इस कारण लिंग परामर्श ही अनुमान है।

लिंग के भेद (*Types of Linga*)

- 3
  - अन्वयव्यतिरेकि (**अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमदन्वव्यतिरेकि।** तर्कसंग्रह)
  - केवलान्वयि (**अन्वयमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि। यथा घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् पटवत्।** तर्कसंग्रह)
  - केवलव्यतिरेकि (**व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं केवलव्यतिरेकि।** तर्कसंग्रह)

हेत्वाभास (Hetvabhasa - Fallacy)

पर्याय (*Synonym*)

- असद् हेतु
- अहेतु
- असिद्ध हेतु

लक्षण (*Features*)

- **अनुमितितत्करणाऽन्यतरप्रतिबन्धकज्ञानविषयत्वं हेत्वाभासत्वम्।**

अनुमिति और उसका करण, इनमें एक के प्रतिबन्धक ज्ञान विषय को 'हेत्वाभास' कहते हैं।

भेद (*Classification*)

- **सव्यभिचार विरुद्धसत्प्रतिपक्षासिद्धबाधिताः पञ्च हेत्वाभासाः।** तर्कसंग्रह

5

1. सव्यभिचार (अनैकान्तिक)
   - साधारण
   - असाधारण
   - अनुपसंहारी
2. विरुद्ध
3. सत्प्रतिपक्ष
4. असिद्ध
   - आश्रयासिद्ध
   - स्वरूपासिद्ध
   - व्याप्यत्वासिद्ध
5. बाधित

1. सव्यभिचार हेत्वाभास (*Savyabhichara hetvabhasa*)

पर्यायः अनैकान्तिक हेत्वाभास

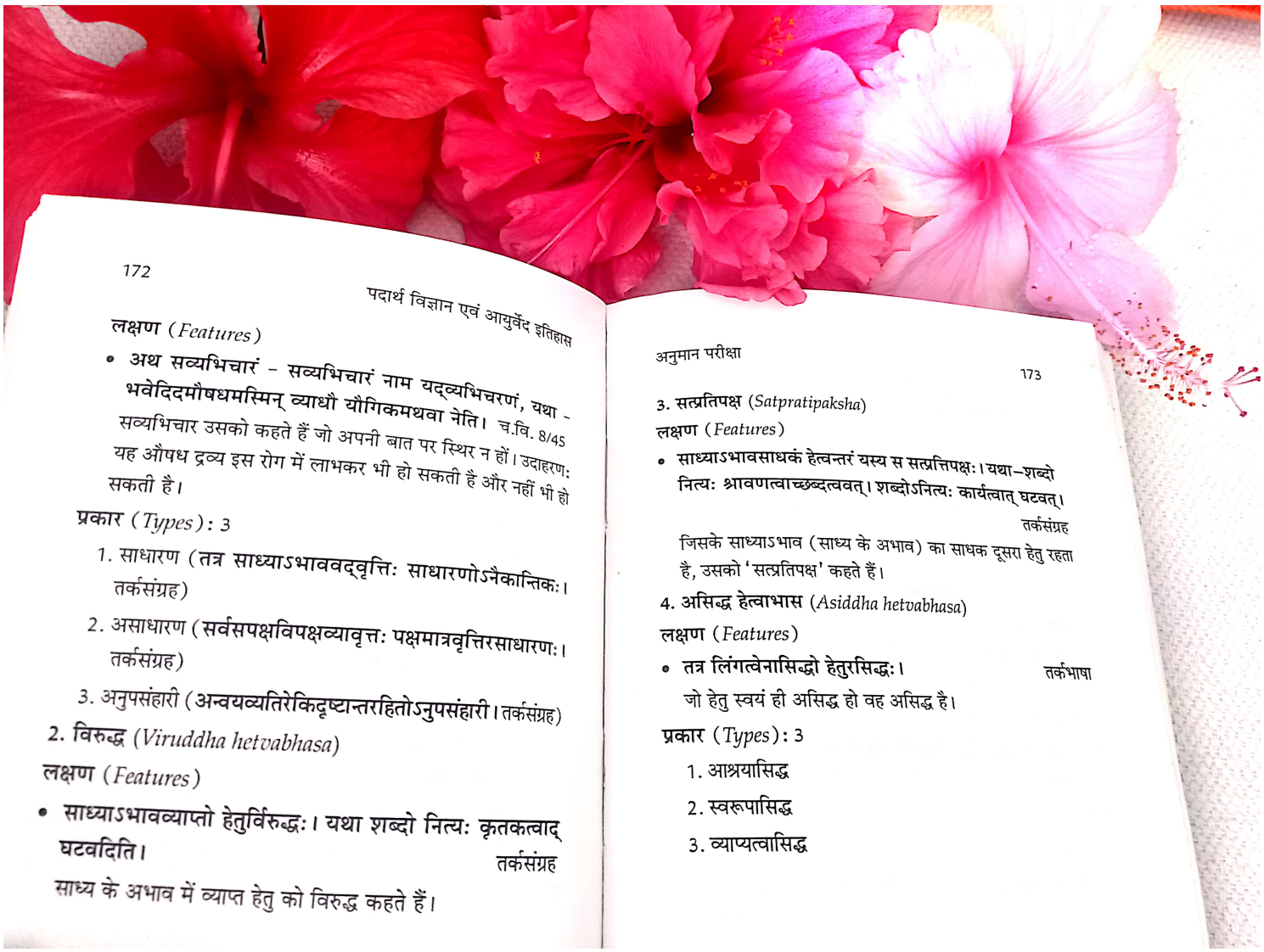

लक्षण (*Features*)

- **अथ सव्यभिचारं - सव्यभिचारं नाम यद्व्यभिचरणं, यथा - भवेदिदमौषधमस्मिन् व्याधौ यौगिकमथवा नेति।** च.वि. 8/45

सव्यभिचार उसको कहते हैं जो अपनी बात पर स्थिर न हों। उदाहरण: यह औषध द्रव्य इस रोग में लाभकर भी हो सकती है और नहीं भी हो सकती है।

प्रकार (*Types*): 3

1. साधारण (**तत्र साध्याऽभाववद्वृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः।** तर्कसंग्रह)
2. असाधारण (**सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिरसाधारणः।** तर्कसंग्रह)
3. अनुपसंहारी (**अन्वयव्यतिरेकिदृष्टान्तरहितोऽनुपसंहारी।** तर्कसंग्रह)

2. विरुद्ध (*Viruddha hetvabhasa*)

लक्षण (*Features*)

- **साध्याऽभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः। यथा शब्दो नित्यः कृतकत्वाद् घटवदिति।** तर्कसंग्रह

साध्य के अभाव में व्याप्त हेतु को विरुद्ध कहते हैं।

3. सत्प्रतिपक्ष (*Satpratipaksha*)

लक्षण (*Features*)

- **साध्याऽभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य स सत्प्रतिपक्षः। यथा–शब्दो नित्यः श्रावणत्वाच्छब्दत्ववत्। शब्दोऽनित्यः कार्यत्वात् घटवत्।** तर्कसंग्रह

जिसके साध्याऽभाव (साध्य के अभाव) का साधक दूसरा हेतु रहता है, उसको 'सत्प्रतिपक्ष' कहते हैं।

4. असिद्ध हेत्वाभास (*Asiddha hetvabhasa*)

लक्षण (*Features*)

- **तत्र लिंगत्वेनासिद्धो हेतुरसिद्धः।** तर्कभाषा

जो हेतु स्वयं ही असिद्ध हो वह असिद्ध है।

प्रकार (*Types*): 3

1. आश्रयासिद्ध
2. स्वरूपासिद्ध
3. व्याप्यत्वासिद्ध

5. बाधित हेत्वाभास (*Badhita hetvabhasa*)

लक्षण (*Features*)

- **यस्य साध्याऽभावः प्रमाणान्तरेण पक्षे निश्चितः स बाधितः। यथा वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वादिति।** तर्कसंग्रह

जिस हेत्वाभास के साध्य का अभाव अन्य प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो वह बाधित है।

उदाहरण: अग्नि में उष्णता नहीं है, क्योंकि वह द्रव्य नहीं है।

सम्भाषा (*Sambhasha*)

लक्षण (*Features*)

- **भिषक् भिषजा सह सम्भाषेत।** च.वि. 8.15

एक भिषक् को दूसरे भिषक् के साथ सम्भाषा करनी चाहिए।

भेद (*Classification*)

- **द्विविधा तु खलु तद्विद्यसम्भाषा भवति- सन्धाय सम्भाषा, विगृह्य सम्भाषा च।** च.वि. 8/16
- 2
  1. सन्धाय सभाषा
  2. विगृह्य सम्भाषा

वाद (Vada)

लक्षण (*Features*)

- **तत्र वादो नाम स यत् परेण सह शास्त्रपूर्वकं विगृह्य कथयति। स च द्विविधः संग्रहेण - जल्पः, वितण्डा च।** च.वि. 8/28

प्रतिपक्षी के साथ शास्त्रानुसार अपने अपने पक्ष को कहते हुए विगृह्य सम्भाषा के रूप में जो वार्त्तालाप किया जाता है, उसे वाद कहते हैं।

संख्या (*Number*)

- 2
  1. जल्प (**तत्र पक्षाश्रितयोर्वचनं जल्पः।** च.वि. 8/28)
  2. वितण्डा (**जल्पविपर्ययो वितण्डा।** च.वि. 8/28)

निग्रहस्थान (Nigrahasthana)

लक्षण (*Features*)

- **अथ निग्रहस्थानं - निग्रहस्थानं नाम पराजयप्राप्तिः।** च.वि. 8/65

पराजय प्राप्ति का हेतु निग्रहस्थान है।

- **विप्रतिपत्तिरप्रतिपत्तिश्च निग्रहस्थानम्।** न्या.द. 1.60

विप्रतिपत्ति (विपरीत प्रवृत्ति और ज्ञान) और अप्रतिपत्ति को निग्रहस्थान कहते हैं।

संख्या (*Number*)

- चरक मतेन: 15
- न्याय दर्शन मतेन: 22

तर्क (Tarka)

लक्षण (*Features*)

- **अविज्ञाततत्त्वेऽर्थे कारणोपपत्तिस्तत्त्वज्ञानार्थमूहस्तर्कः।**

न्यायसूत्र 1/1/40

अविज्ञात तत्त्व अर्थ में कार्य - कारण का उपपत्तिपूर्वक तत्त्व ज्ञान के लिए जो ऊहापोह किया जाता है, वह तर्क है।

- **व्याप्यारोपेण व्यापकारोस्तर्कः।** तर्कसंग्रह

व्याप्य के आरोप (आहार्यज्ञान) से व्यापक के आरोप को तर्क कहते हैं।

उदाहरण (*Example*)

- **यदि वह्निर्न स्यात्तर्हि धूमोऽपि न स्यात्।** तर्कसंग्रह

'यदि वह्नि नहीं होगा तो धूम भी नहीं होगा'। यहाँ पर व्याप्यारोप (वह्न्यभाव) से व्यापकारोप (धूमाभाव) के होने से यह तर्क का उदाहरण है।

भेद (*Classification*)

- 5
  1. आत्माश्रय
  2. अन्योन्याश्रय
  3. चक्रक
  4. अनावस्था
  5. अन्यबाधितार्थप्रसंग

तर्क का उद्देश्य (*Uddhesha of Tarka*)

- 3
  1. उद्देश
  2. लक्षण
  3. परीक्षा

संशय (Samshaya)

लक्षण (*Features*)

- **संशयो नाम सन्देहलक्षणानुसन्दिग्धेष्वर्थेषु अनिश्चयः।**

च.वि. 8.43

संदेह के लक्षणों से युक्त होने से संदेह युक्त विषयों में निश्चय का न होना संशय है।

- **एकस्मिन् धर्मिणी विरुद्धनानार्थावमर्शः संशयः। एकत्र विरुद्धा-नेककोट्यवगाहि ज्ञानं संशयः।** तर्कभाषा

एक ही स्थान में अनेक विरुद्ध धर्मों की उपस्थिति प्रतीत होने पर उसे संशय कहते हैं।

उदाहरण (*Example*)

- **स्थाणुर्वा पुरुषो वेति।** तर्कसंग्रह

यह स्थाणु (ठूँठा पेड़) है या कोई पुरुष है। इस प्रकार का ज्ञान संशय है।

भेद (*Classification*)

- 3
  1. समानधर्मदर्शनजन्य
  2. विप्रतिपत्तिजन्य
  3. असाधारणधर्मजन्य

आयुर्वेद में वर्णित अनुमान के कतिपय उदाहरण (*Examples of anumana – as per Ayurveda*)

- **इमे तु खल्वन्येऽप्येवमेव भूयोऽनुमानज्ञेया भवन्ति भावाः। तद्यथा-**

अग्निं जरणशक्त्या परीक्षेत, बलं व्यायामशक्त्या, श्रोत्रादीनि शब्दाद्यर्थग्रहणेन, मनोऽर्थाव्यभिचरणेन, विज्ञानं व्यवसायेन, रजः संगेन, मोहमविज्ञानेन, क्रोधमभिद्रोहेण, शोकं दैन्येन, हर्षमामोदेन, प्रीतिं तोषेण, भयं विषादेन, धैर्यमविषादेन, वीर्यमुत्थानेन, अवस्थानमविभ्रमेण, श्रद्धामभिप्रायेण, मेधां ग्रहणेन, संज्ञां नामग्रहणेन, स्मृतिं स्मरणेन, ह्रियमपत्रपणेन, शीलमनुशीलनेन, द्वेषं प्रतिषेधेन, उपधिमनुबन्धेन, धृतिमलौल्येन, वश्यतां विधेयतया, वयोभक्तिसात्म्यव्याधिसमुत्थानानि कालदेशोपशयवेदनाविशेषेण, गूढलिंगं व्याधिमुपशयानुपशयाभ्यां, दोषप्रमाणविशेषमपचार-विशेषेण, आयुषः क्षयमरिष्टैः, उपस्थितश्रेयस्त्वं कल्याणा-भिनिवेशेन, अमलं सत्त्वमविकारेण, ग्रहण्यास्तु मृदुदारुणत्वं स्वप्न-दर्शनमभिप्रायं द्विष्टेष्टसुखदुःखानि चातुरपरिप्रश्नेनैव विद्यादिति।

च.वि. 4.8

अग्नि का अनुमान	जरण शक्ति से	बल का अनुमान	व्यायाम शक्ति से	ज्ञानेन्द्रियों का अनुमान	तत् तत् विषय ग्रहण से
मन का अनुमान	नियत विषयों के ग्रहण से	विज्ञान का अनुमान	यथार्थ व्यवसाय से	रज का अनुमान	आसक्ति से

मोह का अनुमान	अविज्ञान से	क्रोध का अनुमान	अभिद्रोह से	शोक का अनुमान	दीनता से
हर्ष का अनुमान	आमोद से	प्रीति का अनुमान	तोष से	भय का अनुमान	विषाद से
धैर्य का अनुमान	अविषाद से	वीर्य का अनुमान	उत्थान से	अवस्थान का अनुमान	अविभ्रम से
श्रद्धा का अनुमान	अभिप्राय से	मेधा का अनुमान	ग्रहण से	संज्ञा का अनुमान	नामग्रहण से
स्मृति का अनुमान	स्मरण से	ह्रिय का अनुमान	अपत्रपण से	शील का अनुमान	अनुशीलन से
द्वेष का अनुमान	प्रतिषेध से	उपाधि का अनुमान	अनुबन्ध से	धृति का अनुमान	अलौल्य से
वश्यता का अनुमान	अनुकूल व्यवहार से	वय का अनुमान	काल से	भक्ति का अनुमान	देश विशेष से
सात्म्य का अनुमान	उपशय से	व्याधि समुत्थान का अनुमान	वेदना विशेष से	गूढ़लिंग का अनुमान	उपशय व अनुपशय से

दोष प्रमाण विशेष का अनुमान	आचार विशेष से	आयु क्षय का अनुमान	अरिष्ट लक्षणों से	मांगलिक काल का अनुमान	श्रेयस्कर मार्ग के अनुष्ठान से
निर्मल सत्त्व का अनुमान	विकार राहित्य से				

❖❖❖

5. युक्ति परीक्षा
(Yukti Pariksha)

लक्षण *(Features)*

- **बुद्धिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्।**
  युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया।। च.सू. 11/25

  जो बुद्धि अनेक कारणों के योग से उत्पन्न हुए भावों को देखती है, वह युक्ति है। यह युक्ति त्रैकालिक होती है और इसके द्वारा त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ तथा काम इन तीनों की सिद्धि होती है।

- **युक्तिश्च योजना या तु युज्यते।** च.सू. 26/31

  किसी योजना को युक्ति कहते हैं।

उदाहरण *(Examples)*

- **जल-कर्षण-बीजर्तुसंयोगात् सस्यसम्भवः।**

युक्तिः षड्धातुसंयोगाद् गर्भाणां सम्भवस्तथा।।
मथ्यमन्थनमन्थानसंयोगादग्निसम्भवः।
युक्तियुक्ता चतुष्पादसम्पद् व्याधिनिबर्हणी।। च.सू. 11/23-24

- जल, भूमि, कर्षण (कर्षणसंकृतभूमिः), बीज और ऋतु के संयोग से सस्योत्पत्ति होना
- षड्धातु, पञ्चमहाभूत और आत्मा के संयोग से गर्भ की उत्पत्ति होना
- मथ्य, मन्थक तथा मन्थान संयोग से अग्नि की उत्पत्ति होना
- युक्ति से युक्त वैद्य, उपस्थाता, रोग और भेषज प्रशस्त गुणता अर्थात् सादगुण्य से व्याधि का नाश होना

तथ्य *(Facts)*

- युक्ति को प्रमाण का दर्जा केवल चरकाचार्य ने दिया है।
- चरकसंहिता के प्रसिद्ध टीकाकार, जैसे - चक्रपाणि, गंगाधर राय, योगीन्द्रनाथ सेन आदि ने इसे अनुमान में ही समाविष्ट किया है।
- **अनुमानं खलु तर्को युक्त्यपेक्षः।** च.वि. 4.4

  इस सूत्र द्वारा चरक ने अनुमान एवं युक्ति में सम्बन्ध स्थापित किया है।

❖❖❖

6. उपमान परीक्षा
(Upamana pariksha)

पर्याय *(Synonym)*

- औपम्य

निरुक्ति *(Etymological derivation)*

- **उपमीयते अनेनेति उपमानम्।**

किसी प्रसिद्ध वस्तु के सादृश से जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसे उपमिति कहते हैं। इस उपमिति ज्ञान का साधन उपमान है।

लक्षण *(Features)*

- **औपम्यं नाम यदन्येन अन्यस्य सादृश्यमधिकृत्य प्रकाशनम्।**

च.वि. 8/42

किसी प्रसिद्ध वस्तु के सादृश्य से अप्रसिद्ध वस्तु का सादृय मिलान करके उसे प्रकट करना उपमान कहलाता है।

उदाहरण:

- **दण्डेन दण्डकस्य, धनुषा धनुःस्तम्भस्य, इष्वासेनाऽऽरोग्यदस्येति।**

च.वि. 8.42

दण्ड को देखकर दण्डक नामक व्याधि का और धनुष को देखकर धनुस्तम्भ नामक व्याधि का तथा कुशल धनुर्धर को देखकर आरोग्यदाता वैद्य का ज्ञान उपमान है।

- **प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनमुपमानम्।** न्यायदर्शन 1/1/6

प्रसिद्ध पदार्थ के सादृश्य से साध्य के साधनों को उपमान कहते हैं।

- **प्रसिद्ध वस्तुसाधर्म्यात् अप्रसिद्धस्य साधनम्।**
  उपमानं समाख्यातं यथा गोर्गवयस्तथा।। षड्दर्शन संग्रह

प्रसिद्ध वस्तु के साधर्म्य से अप्रसिद्ध वस्तु का साधन करना उपमान कहलाता है।

उदाहरण: गो के साधर्म्य से अप्रसिद्ध गवय का साधन करना।

- **उपमितिकरणमुपमानम्। संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानमुपमितिः। तत्करणं सादृश्यज्ञानम्।** तर्कसंग्रह

उपमिति का करण (असाधारण कारण) उपमान है। संज्ञा - संज्ञि के सम्बन्ध का ज्ञान उपमिति है। उसका कारण सादृश्य ज्ञान है।

भेद (*Classification*)

त्रिविध भेदः

1. **साधर्म्योपमानः** किसी ज्ञात वस्तु के आधार पर किसी अज्ञात वस्तु का ज्ञान करना।
2. **वैधर्म्योपमानः** किसी ज्ञात वस्तु की विषमता के आधार पर किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना।
3. **धर्ममात्रोपमानः** किसी वस्तु का ज्ञान उसकी विचित्रताओं और विशेषताओं के आधार पर करना।

तथ्य (*Facts*)

- न्याय दर्शन ने इसे स्वतन्त्र प्रमाण माना है।
- मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन में इसे स्वतन्त्र प्रमाण माना गया है लेकिन इसकी व्याख्या भिन्न की है।
- अन्य दर्शनकारों ने इसे प्रत्यक्ष आदि त्रिविध प्रमाणों में समाविष्ट किया है।

- सुश्रुत ने भी इसे स्वतन्त्र प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है, लेकिन व्याख्या नहीं की है।
- डल्हण ने इसकी व्याख्या की है (**प्रसिद्धसाधर्म्यात् सूक्ष्मव्यवहित-विप्रकृष्टार्थस्य साधनमुपमानम्।**)।
- चरक ने इसे स्वतन्त्र प्रमाण न मान, 44 वादमार्गों में समाविष्ट किया है।

❖❖❖

7. कार्य कारण सिद्धान्त
(*Karya – karana siddhanta: Theory of Cause and Effect*)

करण (*Karana*)

लक्षण (*Features*)

- **करणं पुनस्तद् यदुपकरणायोपकल्पते कर्तुः कार्याभिनिर्वृत्तौ प्रयतमानस्य।** च.वि. 8.70

  किसी कार्य की अभिनिवृति के उद्देश्य से यत्न करते हुए कर्त्ता के उस सम्पाद्य कार्य में जो उपकरण उपकल्पित किया जाता है, वह करण है।

- **यत्तु कर्त्रधीनव्यापारे साधकतमं, तत् करणम्।** चक्रपाणि

  कर्त्ता के अधीन जो व्यापार है, उसमें जो साधक है, वह करण है। तात्पर्य यह है कि सम्पाद्य कार्य का उपकरण स्वरूप साधक करण है।

- **असाधारणं कारणं करणम्।** तर्कसंग्रह

  कार्य के प्रति असाधारण (विशेष) कारण करण कहा जाता है। सभी कार्यों की उत्पत्ति का असाधारण कारण ईश्वर, काल आदि है।

भेद (*Classification*)

- **तत्करणमपि चतुर्विधं-प्रत्यक्षानुमानोपमानशाब्दभेदात्।** तर्कसंग्रह

  4
  - प्रत्यक्ष
  - अनुमान
  - उपमान
  - शब्द

कारण (Cause)

लक्षण (*Features*)

- **तत्र कारणं नाम तद् यत् करोति, स एव हेतुः, स कर्त्ता।** च.वि. 8.69

  जो स्वतन्त्र रूप से किसी कार्य का सम्पादन करता है, उसे कारण कहते हैं। वही हेतु और वही कर्त्ता भी।

- **कार्यनियतपूर्ववृत्तिः कारणम्।** तर्कसंग्रह

कार्य से पूर्व निश्चित रूप से रहना 'कारण' कहा जाता है। जैसे घट उत्पत्ति के पूर्व मृत्तिका आदि का रहना।

- **अन्यथासिद्धिशून्यस्य नियता पूर्ववर्तिता। कारणत्वं भवेत्।** कारिकावली

प्रकार *(Types)*

- **कारणं त्रिविधम् - समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्।** तर्कसंग्रह

1. समवायि कारण
2. असमवायि कारण
3. निमित्त कारण

1. **समवायिकारण** *(Samavayi karana)*

- **यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। यथा तन्तवः पटस्य। पटश्च स्वगतरूपादेः।** तर्कसंग्रह

जिसमें समवाय सम्बन्ध से रहकर कार्य उत्पन्न हो वह 'समवायिकारण' होता है। जैसे - कपड़ा का समवायिकारण सूत है और कपड़ा भी अपने सफेद आदि रूप का समवायिकारण है। घट का समवायिकारण कपाल है।

- **समवायिकारणञ्च तद्यत्स्वसमवेतं कार्यं जनयति।** चक्रपाणि

समवायि कारण वह है, जो अपने को मिलाकर कार्य उत्पन्न करता है।

2. **असमवायिकारण** *(Asamavayi karana)*

- **कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतं सत् कारणमसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्य, तन्तुरूपं पटरूपस्य।** तर्कसंग्रह

असमवायिकारण वह है जो कार्य या कारण के साथ एक ही अधिकरण में समवाय सम्बन्ध से विद्यमान हो। जैसे - तन्तु संयोग पट का और तन्तु रूप पट रूप का असमवायिकारण है।

- **समवायिकारणे आसन्नं प्रत्यासन्नं कारणं द्वितीयमसमवायिकारणमित्यर्थः।** कारिकावलि

कार्य की सम्पन्नता में उत्पादक रूप से समवायि कारण में जो आसन्न अर्थात् समीप में कारण रूप से वर्तमान हो, वह उस कार्य का साधक, दूसरा कारण असमवायिकारण कहा जाता है।

3. **निमित्त कारण** *(Nimitta karana)*

- **तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणम्। यथा-तुरीवेमादिकं पटस्य।** तर्कसंग्रह

किसी उत्पन्न कार्य का समवायि और असमवायि दोनों से भिन्न कारण

निमित्त कारण कहा जाता है। उदाहरण – तुरी (सूत्र वेष्टन करने की नली) और वेमा (वायदण्ड) आदि पट के निमित्त के कारण हैं।

कार्य (Karya)

लक्षण (*Features*)

- **कार्यं तु तद्यस्याभिनिर्वृत्तिमभिसन्धाय कर्त्ता प्रवर्तते।** च.वि. 8.72

कार्य को करने वाला कर्त्ता जिस कार्य को करने के लिए अपनी कर्त्तव्यता बुद्धि को स्थिर कर प्रवृत्त होता है, वह कार्य है।

कार्य की सत्ता उत्पत्ति के पूर्व कारण में रहती है अथवा नहीं। इस सम्बन्ध में दो सिद्धान्त प्रमुख हैं –

1. सत्कार्यवाद
2. असत्कार्यवाद

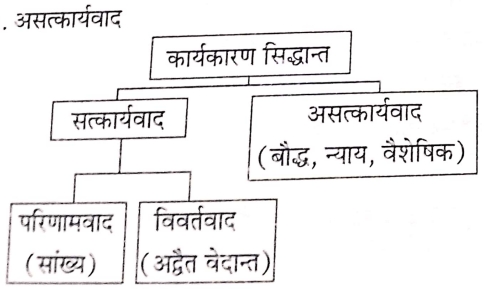

सत्कार्यवाद (Satkaryavada - theory of causation)

प्रवर्तक: सांख्य दर्शन (सांख्य ने इसे 'प्रकृति-परिणाम वाद' कहा है)

पर्याय: – परिणामवाद – कार्यकारणवाद

विचार: सत् से सत् का उत्पन्न होना ही सत्कार्यवाद है।

आयुर्वेद को सत्कार्यवाद का सिद्धान्त मान्य है।

- **तत्र कारणानुरूपं कार्य्यमिति कृत्वा सर्वं एवैते विशेषाः सत्वरजस्तमोमया भवन्ति।** सु.शा. 1.10

कारण के अनुसार ही कार्य होता है।

ईश्वरकृष्ण कृत सांख्यकारिका में सत्कार्यवाद की सिद्धि के लिए 5 युक्तियाँ दी हैं –

- **असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।**
  शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।
  सांख्यकारिका 9

1. असदकरणात्
2. उपादानग्रहणात्
3. सर्वसम्भवाभावात्
4. शक्तस्य शक्यकरणात्
5. कारणभावात्

भेद: 2

1. परिणामवाद
2. विवर्तवाद

परिणामवाद (Parinama vada-theory of transformation)

प्रवर्त्तक: सांख्य दर्शन

विचार: किसी कारण का कार्य रूप में परिणत हो जाना, उस कारण का कार्य रूप परिणाम कहा जाता है।

उदाहरण: दूध से दही बनता है। दही को दूध का परिणाम कहेंगे। आयुर्वेद को परिणाम वाद मान्य है।

उदाहरण:

- स्वभावमीश्वरं कालं यदृच्छां नियतिं तथा।
  परिणामञ्च मन्यन्ते प्रकृतिं पृथुदर्शिनः।। सु.शा. 1.11
- रसादुक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते।
  मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्ज्ञः शुक्रं तु जायते।। सु.सू. 14.10
- जाठरेणाऽग्नि योगाद्यदुदेति रसान्तरम्।
  रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः।। अ.ह.सू. 9.20

विवर्त्तवाद (Vivartavada)

प्रवर्त्तक: अद्वैत वेदान्त दर्शन

विचार: जिस वस्तु से जिस तत्त्व का परिज्ञान होना चाहिए, वह न होकर मिथ्या ज्ञान होना ही विवर्त्तवाद है।

उदाहरण: रज्जु में सर्प की प्रतीति।

शांकर वेदान्त विवर्त्तवाद का प्रतिपादक है। उनके मत में जगत् ब्रह्मा का विवर्त्त है –

- **ब्रह्मैव सज्जगदिदं तु विवर्त्तरूपम्।**
  मायेशशक्तिरखिलं जगदातनोति।।
  ब्रह्म ही सत्य है और यह जगत् विवर्त्त रूप है। माया की शक्ति के कारण सम्पूर्ण जगत् सत् स्वरूप दिखाई पड़ता है।
  आयुर्वेद को यह वाद आंशिक रूप से मान्य है।

असत्कार्यवाद (Asatkaryavada)

प्रवर्त्तक: – न्याय दर्शन – वैशेषिक दर्शन – बौद्ध दर्शन

पर्याय: आरम्भवाद

विचार: कारण में कार्य की सत्ता उत्पत्ति से पूर्व नहीं रहती।

यदि कार्य पूर्व से उपादान कारण में विद्यमान था, तो कारण और कार्य में भेद करना कठिन होगा।

आयुर्वेद में असत्कार्य के उदाहरण यत्र – तत्र प्राप्त होते हैं।

क्षणभंगुरवाद (Kshanabhanguravada)

प्रवर्त्तक: बौद्ध दर्शन

विचार: भावों की एक क्षण में उत्पत्ति, दूसरे में स्थिति और तीसरे में विनाश हो जाता है।

- *सर्वं क्षणिकम् क्षणिकम्।*

संसार में जो कुछ भी है वह क्षण क्षण में परिवर्तनशील है।

परमाणुवाद (Paramanu vada - atomism)

प्रवर्त्तक: वैशेषिक दर्शन

विचार: विश्व के सभी कार्य द्रव्य चार प्रकार के परमाणुओं (पृथ्वी, जल, तेज एवं वायु) से निर्मित होते हैं। परमाणुओं में संयोग एवं विभाग जीवों के धर्माधर्म कर्मफल एवं ईश्वर इच्छा के परिणाम स्वरूप होता है। अणुओं के संयोग से कार्य द्रव्यों की उत्पत्ति एवं उनके वियोग से कार्य द्रव्यों का विनाश होता है। इन्हीं अनित्य द्रव्यों के सृष्टि एवं लय का क्रम निर्दिष्ट करना 'परमाणुवाद' है।

- **परमाणुत्वं परिमाणवान् परमाणुः।** वै.द. 3.1

जो परम अणु परिमाणवाला हो, उसे परमाणु कहते हैं।

आयुर्वेद में परमाणुवाद के सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। उदाहरण:

- **शरीरावयवास्तु परमाणुभेदेनापरिसंख्येया भवन्ति, अतिबहुत्वा-दतिसौक्ष्म्यादतीन्द्रियत्वाच्च। तेषां संयोगविभागे परमाणूनां कारणं वायुः कर्मस्वभावश्च।** च.शा. 7.17

पीलुपाक (Pilu paka)

प्रवर्त्तक: वैशेषिक दर्शन

विचार:

- पीलु का शाब्दिक अर्थ परमाणु है।
- इसके अनुसार सीधा अवयवी में पाक न होकर परमाणु में पाक होता है।
- आधुनिक मतेन: *Chemical change*

पिठरपाक (Pithara paka)

प्रवर्त्तक: न्याय दर्शन

विचार:

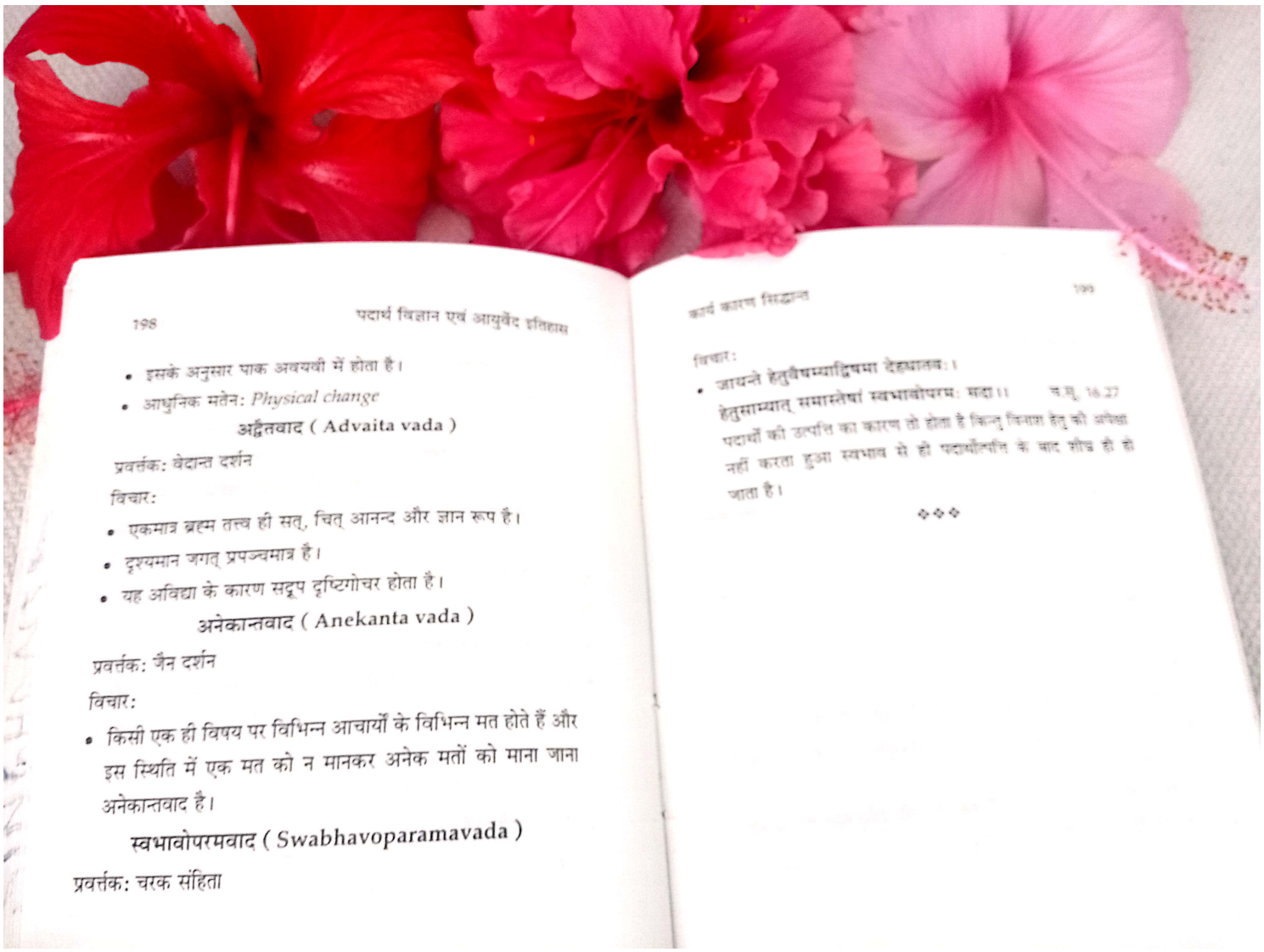

- इसके अनुसार पाक अवयवी में होता है।
- आधुनिक मतेन: *Physical change*

अद्वैतवाद (Advaita vada)

प्रवर्तक: वेदान्त दर्शन

विचार:

- एकमात्र ब्रह्म तत्त्व ही सत्, चित् आनन्द और ज्ञान रूप है।
- दृश्यमान जगत् प्रपञ्चमात्र है।
- यह अविद्या के कारण सद्रूप दृष्टिगोचर होता है।

अनेकान्तवाद (Anekanta vada)

प्रवर्तक: जैन दर्शन

विचार:

- किसी एक ही विषय पर विभिन्न आचार्यों के विभिन्न मत होते हैं और इस स्थिति में एक मत को न मानकर अनेक मतों को माना जाना अनेकान्तवाद है।

स्वभावोपरमवाद (Swabhavoparamavada)

प्रवर्तक: चरक संहिता

विचार:

- जायन्ते हेतुवैषम्याद्विषमा देहधातवः।
  हेतुसाम्यात् समास्तेषां स्वभावोपरमः सदा।। च.सू. 16.27

पदार्थों की उत्पत्ति का कारण तो होता है किन्तु विनाश हेतु की अपेक्षा नहीं करता हुआ स्वभाव से ही पदार्थोत्पत्ति के बाद शीघ्र ही हो जाता है।

❖❖❖

Section B

आयुर्वेद इतिहास
(History of Ayurveda)

इतिहास (Itihaas)

निरूक्ति *(Derivation)*

इति + ह + आस् इति = ऐसा ह = निश्चय आस् = था

अर्थात् ऐसा निश्चय से था।

परिभाषा *(Definition)*

- **इतिहासः पुरावृत्तम्।** अमरकोष

  जिससे भूतकालीन विषयवस्तु का ज्ञान हो, वह इतिहास है।

- **धर्मार्थकाममोक्षणामुपदेशसमन्वितम्, पूर्ववृत्तं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते।** महाभारत

  जिससे धर्मादि से सम्बन्धित उपदेश हो, जिससे पूर्ववृत्तान्त एवं कथादि का समावेश होत्र वह 'इतिहास' है।

पर्याय *(Synonym)*

- ऐतिह्य
- प्राचीन आख्यान
- इतिस्माह
- पुरावृत्त
- इतिवृत्त
- गाथा
- परवृत्तान्त
- पुराण
- ऐतिहासिक साक्ष्य

आयुर्वेदावतरण

(Ayurvedavatarana–descent of Ayurveda)

परिभाषा: ब्रह्मा से लेकर भूलोक तक के आयुर्वेद की ज्ञान गंगा के प्रवाह को **'आयुर्वेदावतरण'** कहा जाता है।

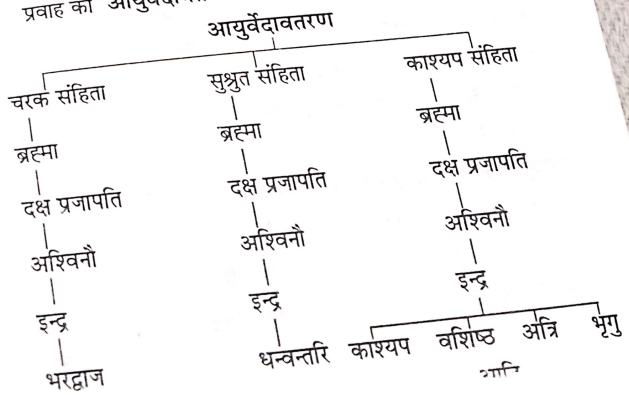

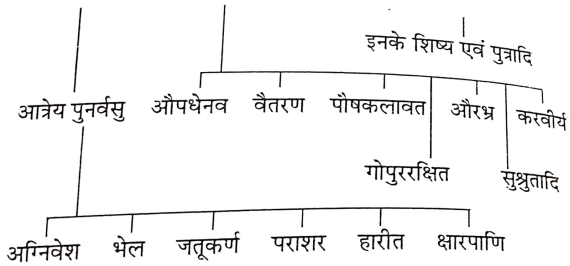

आयुर्वेद का उपवेदत्व (*Upavedatva of Ayurveda*)

- आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार: आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है
- चरणव्यूह और शुक्रनीति के अनुसार: आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है।
- ब्रह्मवैवर्तपुराण और काश्यप संहिता के अनुसार: आयुर्वेद 'पञ्चम वेद' है।

आयुर्वेद शास्त्र के प्रमुख संहिता ग्रन्थ (*Important classics of Ayruveda Shastra*)

- सुश्रुत संहिता
- चरक संहिता
- भेल संहिता
- हारीत संहिता

- काश्यप संहिता
- अष्टांग संग्रह
- अष्टांग हृदय
- माधव निदान
- शार्ंगधर संहिता
- भावप्रकाश

आत्रेयादि सम्प्रदाय (Atreya etc. Sampradaya)

- चरक संहिता में वर्णित आयुर्वेदावतरण क्रम '**आत्रेय सम्प्रदाय**' कहलाता है।
- सुश्रुत संहिता में वर्णित आयुर्वेदावतरण क्रम '**धान्वन्तर सम्प्रदाय**' के नाम से जाना जाता है।
- ब्रह्मवैवर्तपुराण में एक और विशिष्ट सम्प्रदाय का वर्णन प्राप्त होता है जिसे '**भास्कर सम्प्रदाय**' कहते हैं।

आत्रेय सम्प्रदाय (*Atreya Sampradaya*)

चरक संहिता के आयुर्वेदावतरण परम्परा में वर्णित ऋषियों के समूह को आत्रेय सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है।

आत्रेय सम्प्रदाय के ऋषि गण हैं –

- भरद्वाज
- पुनर्वसु आत्रेय
- अग्निवेश
- भेल
- जतूकर्ण
- पाराशर
- हारीत
- क्षारपाणि

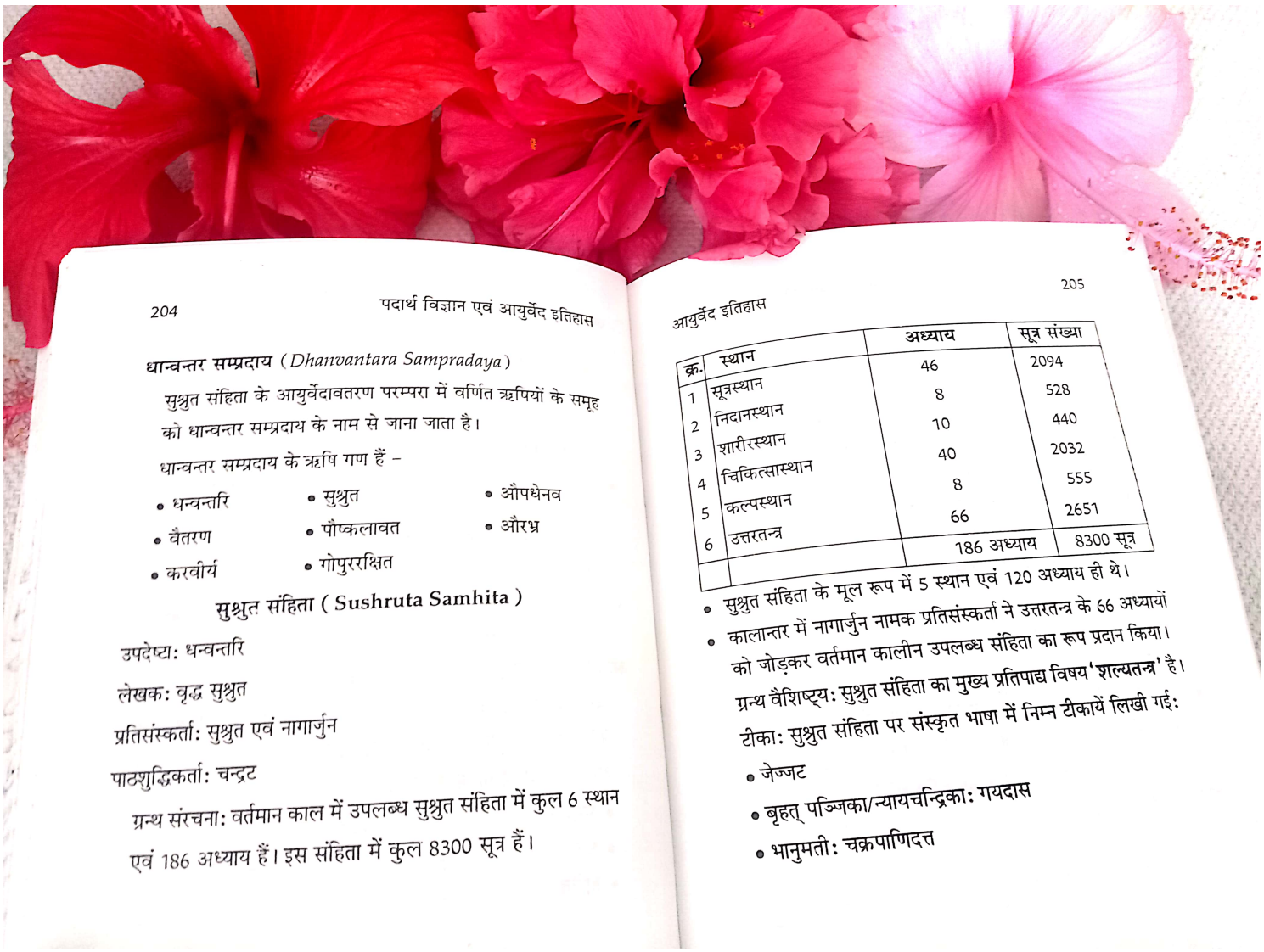

धान्वन्तर सम्प्रदाय (*Dhanvantara Sampradaya*)

सुश्रुत संहिता के आयुर्वेदावतरण परम्परा में वर्णित ऋषियों के समूह को धान्वन्तर सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है।

धान्वन्तर सम्प्रदाय के ऋषि गण हैं –

- धन्वन्तरि
- सुश्रुत
- औपधेनव
- वैतरण
- पौष्कलावत
- और्भ्र
- करवीर्य
- गोपुररक्षित

सुश्रुत संहिता (Sushruta Samhita)

उपदेष्टा: धन्वन्तरि

लेखक: वृद्ध सुश्रुत

प्रतिसंस्कर्ता: सुश्रुत एवं नागार्जुन

पाठशुद्धिकर्ता: चन्द्रट

ग्रन्थ संरचना: वर्तमान काल में उपलब्ध सुश्रुत संहिता में कुल 6 स्थान एवं 186 अध्याय हैं। इस संहिता में कुल 8300 सूत्र हैं।

क्र.	स्थान	अध्याय	सूत्र संख्या
1	सूत्रस्थान	46	2094
2	निदानस्थान	8	528
3	शारीरस्थान	10	440
4	चिकित्सास्थान	40	2032
5	कल्पस्थान	8	555
6	उत्तरतन्त्र	66	2651
		186 अध्याय	8300 सूत्र

- सुश्रुत संहिता के मूल रूप में 5 स्थान एवं 120 अध्याय ही थे।
- कालान्तर में नागार्जुन नामक प्रतिसंस्कर्ता ने उत्तरतन्त्र के 66 अध्यायों को जोड़कर वर्तमान कालीन उपलब्ध संहिता का रूप प्रदान किया।

ग्रन्थ वैशिष्ट्य: सुश्रुत संहिता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय '**शल्यतन्त्र**' है।

टीका: सुश्रुत संहिता पर संस्कृत भाषा में निम्न टीकायें लिखी गई:

- जेज्जट
- बृहत् पञ्जिका/न्यायचन्द्रिका: गयदास
- भानुमती: चक्रपाणिदत्त

- निबन्धसंग्रह: डल्हण
- सुश्रुतार्थ सन्दीपन: हाराणचन्द्र

हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं टीकायें:

- आयुर्वेदरहस्य दीपिका: डॉ. भास्कर गोविन्द घाणेकर
- आयुर्वेद तत्त्व सन्दीपन: अम्बिकादत्त शास्त्री
- सुश्रुतविमर्शिनी: डॉ. अनन्तराम शर्मा
- अत्रिदेव विद्यालंकार विरचित व्याख्या

अंग्रेजी भाषा में अनुवाद:

- कविराज कुञ्जलाल भिषग्रत्न
- आचार्य प्रियव्रत शर्मा
- डॉ. के.आर. श्रीकण्ठमूर्ति
- डॉ. जी.डी. सिंघल

- 1844 में हेसलर नामक विद्वान ने लैटिन भाषा में, वेल्लर्स ने जर्मन तथा 9 वीं शती में इस ग्रन्थ का अरबी भाषा में भी अनुवाद हुआ।

चरक संहिता (Charaka Samhita)

उपदेष्टा: पुनर्वसु आत्रेय

लेखक: अग्निवेश

प्रतिसंस्कर्ता: चरक

सम्पूरक: दृढ़बल

ग्रन्थ संरचना: वर्तमान काल में उपलब्ध चरक संहिता में कुल 8 स्थान, 120 अध्याय एवं सम्पूर्ण विषय 9295 सूत्रों में वर्णित है। इन 120 अध्यायों में से 41 अध्याय (चिकित्सास्थान के 17 अध्याय, सम्पूर्ण कल्प स्थान एवं सिद्धि स्थान) को दृढ़बल ने सम्पूरित किया।

क्र.	स्थान	अध्याय	सूत्र संख्या
1	सूत्रस्थान	30	1952 सूत्र
2	निदानस्थान	8	247 सूत्र
3	विमानस्थान	8	354 सूत्र
4	शारीरस्थान	8	382 सूत्र
5	इन्द्रियस्थान	12	378 सूत्र
6	चिकित्सास्थान	30	4904 सूत्र
7	कल्पस्थान	12	378 सूत्र
8	सिद्धिस्थान	12	700 सूत्र
	8 स्थान	120 अध्याय	9295 सूत्र

सूत्रस्थान के 30 अध्यायों को 7 चतुष्क एवं 2 संग्रहाध्यायों में विभाजित किया गया है। यथा:

सूत्रस्थान के अध्याय	चतुष्क
1 से 4 अध्याय पर्यन्त	भेषज चतुष्क
5 से 8 अध्याय पर्यन्त	स्वस्थ चतुष्क
9 से 12 अध्याय पर्यन्त	निर्देश चतुष्क
13 से 16 अध्याय पर्यन्त	कल्पना चतुष्क
17 से 20 अध्याय पर्यन्त	रोग चतुष्क
21 से 24 अध्याय पर्यन्त	योजना चतुष्क
25 से 28 अध्याय पर्यन्त	अन्नपान चतुष्क
29 एवं 30 अध्याय	संग्रह अध्याय

ग्रन्थ वैशिष्ट्य: वर्तमान काल में उपलब्ध चरक संहिता की भाषा गद्य-पद्य मिश्रित है। इस ग्रन्थ का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'काय-चिकित्सा' है।

टीका: चरक संहिता पर संस्कृत भाषा में रचित टीकायें निम्न हैं:

- चरकन्यास: भट्टारहरिचन्द्र

- चरकपञ्जिका: स्वामिकुमार
- निरन्तरपदव्याख्या: जेज्जट
- आयुर्वेददीपिका: चक्रपाणिदत्त
- तत्त्वचन्द्रिका: शिवदास सेन
- जल्पकल्पतरु: गंगाधर राय
- चरकोपस्कार: योगीन्द्रनाथ सेन
- चरक प्रदीपिका: ज्योतिषचन्द्र सरस्वती

हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं टीकाएँ:

- श्रीकृष्णलाल विरचित व्याख्या
- रामप्रसाद शर्मा विरचित व्याख्या
- जयदेव विद्यालंकार विरचित व्याख्या
- अत्रिदेव विद्यालंकार विरचित व्याख्या
- विद्योतिनी व्याख्या: काशीनाथ पाण्डेय एवं गोरखनाथ चतुर्वेदी
- वैद्यमनोरमा व्याख्या: डॉ. विद्याधर शुक्ल एवं डॉ. रविदत्त त्रिपाठी
- चरकचन्द्रिका व्याख्या: डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

अंग्रेजी भाषा में अनुवाद:

- अविनाशचन्द्र कविरत्न, कलकत्ता से 1891 में
- आचार्य प्रियव्रत शर्मा
- डॉ आर.के. शर्मा एवं वैद्य भगवान दाश
- डॉ.के.आर. श्रीकण्ठमूर्ति

- चरक संहिता का एक संस्करण अंग्रेजी एवं अनेक क्षेत्रीय भाषाओं के साथ 1949 में जामनगर से प्रकाशित हुआ।

भेल संहिता (Bhela Samhita)

लेखक: आचार्य भेल

ग्रन्थ संरचना: भेल चरक के सहपाठी थे, अत: इन्होनें भी चरक संहिता की शैली पर 8 स्थानों एवं 120 अध्यायों में विषय प्रस्तुत किया है। वर्तमान काल में उपलब्ध भेल संहिता खण्डित है। यथा:

क्र.	स्थान	अध्याय	सूत्र संख्या
1	सूत्रस्थान	30	4 से 28 अध्याय तक
2	निदानस्थान	8	2 से 8 अध्याय तक
3	विमानस्थान	8	1 से 8 अध्याय तक

4	शारीरस्थान	8	2 से 8 अध्याय तक
5	इन्द्रियस्थान	12	1 से 12 अध्याय तक
6	चिकित्सास्थान	30	1 से 30 अध्याय तक
7	कल्पस्थान	12	1 से 9 अध्याय तक
8	सिद्धिस्थान	12	1 से 8 अध्याय तक
	कुल 8 स्थान	120 अध्याय	

ग्रन्थ वैशिष्ट्य:

- वर्तमान काल में उपलब्ध भेल संहिता की भाषा त्रुटिपूर्ण है तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ अपाणिनीय प्रयोगों से भरा पड़ा है।
- इस ग्रन्थ की शैली चरक संहिता के समान है तथा विषयविभाजन भी एक जैसा ही है।

टीका: भेल संहिता पर किसी भी टीका के अस्तित्व का पता नहीं चला है।

प्रकाशन: भेल संहिता के कतिपय प्रकाशित संस्करण

- कलकत्ता विश्वविद्यालय
- गिरिजादयालु शुक्ल द्वारा सम्पादित एवं चौखम्बा द्वारा 1959 में प्रकाशित
- 1977 में वी.एस. वेंकटसुब्रह्मण्य शास्त्री एवं सी. राजराजेश्वर शर्मा

द्वारा सम्पादित तथा तञ्जोर स्थित भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान परिषद् के वाङ्मय अनुसन्धान केन्द्र द्वारा प्रकाशित

- के.एच. कृष्णमूर्ति ने भेल संहिता का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कर चौखम्बा से प्रकाशित कराया।

हारीत संहिता (Harita Samhita)

रचनाकार: हारीत

पुनर्वसु आत्रेय के शिष्य तथा अग्निवेशादि के सहपाठी

परन्तु वर्तमान काल में उपलब्ध 'हारीत संहिता' की मौलिकता तथा प्राचीनता पर विद्वानों को संदेह है।

काल: 6 शती (वर्तमान में उपलब्ध हारीत संहिता का काल 10-12 वीं शती)

ग्रन्थ पर्याय नाम: वैद्यकसर्वस्व

ग्रन्थ संरचना: हारीत संहिता में प्राचीन विषय विभाग को न मानकर नवीन पद्धति से विषय विभाग बनाया है। इस ग्रन्थ में कुल 7 स्थान एवं 103 अध्याय हैं।

क्र.	स्थान	विषय	अध्याय संख्या
1	प्रथमस्थान	अन्नपान	23 अध्याय
2	द्वितीयस्थान	अरिष्ट	9 अध्याय
3	तृतीयस्थान	चिकित्सित	58 अध्याय
4	चतुर्थ स्थान	कल्प	6 अध्याय
5	पञ्चम स्थान	सूत्र	5 अध्याय
6	षष्ठ स्थान	शारीर	1 अध्याय
7	परिशिष्टाध्याय		1 अध्याय
	कुल 7 स्थान		103 अध्याय

प्रकाशन: इसका प्रथम प्रकाशन 1887 में कलकत्ता से हुआ। एलिस रायसी ने 1974 में सूत्रस्थान का फ्रेंच भाषा में अनुवाद कर पाण्डिचेरी से प्रकाशित किया। वर्तमान काल में हरिहरप्रसाद त्रिपाठी विरचित हिन्दी व्याख्या प्राप्त होती है।

वृद्धजीवकीय तन्त्र (काश्यप संहिता)

(Vrddha Jivakiya Tantra/ Kashyapa Samhita)

उपदेष्टा: काश्यप

रचनाकार: वृद्ध जीवक

प्रतिसंस्कर्ता: वात्स्य

ग्रन्थ संरचना: वृद्ध जीवक ने चरक संहिता आदि में प्रचलित शैली को काश्यप संहिता में अपनाया। सम्पूर्ण ग्रन्थ 8 स्थानों और 120 अध्यायों में वर्णित है। कालान्तर में इस ग्रन्थ में खिलस्थान के 80 अध्यायों को जोड़ दिया गया।

क्र.	स्थान	अध्याय संख्या
1	सूत्रस्थान	30 अध्याय
2	निदानस्थान	8 अध्याय
3	विमानस्थान	8 अध्याय
4	शारीरस्थान	8 अध्याय
5	इन्द्रियस्थान	12 अध्याय
6	चिकित्सास्थान	30 अध्याय
7	सिद्धिस्थान	12 अध्याय
8	कल्पस्थान	12 अध्याय
	8 स्थान	120 अध्याय

खिलस्थान 80 अध्याय

कुल 9 स्थान 200 अध्याय

ग्रन्थ वैशिष्ट्य: काश्यप संहिता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय कौमारभृत्य है।

प्रकाशन: इस ग्रन्थ को आयुर्वेद समाज के सामने लाने का श्रेय नेपाल के राजगुरु पं. हेमराज शर्मा को जाता है। पं. हेमराज शर्माजी ने इस ग्रन्थ का सम्पादन किया तथा सत्यपाल ने इस पर 'विद्योतिनी' नामक हिन्दी भाष्य लिख कर प्रकाशित करवाया। 2002 में प्रो. प्रेमवती तिवारी जी ने इस ग्रन्थ का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कर चौखम्बा से प्रकाशित करवाया।

अष्टांग संग्रह (Ashtanga Samgraha)

ग्रन्थकर्ता: वृद्ध वाग्भट

काल: 550 ई.

ग्रन्थ संरचना: अष्टांग संग्रह में कुल 6 स्थान एवं 150 अध्याय हैं। वृद्ध वाग्भट ने गद्य पद्यात्मक पद्धति का अवलम्बन किया है जिसमें गद्य और पद्य दोनों में ग्रन्थ की रचना की है। यही पद्धति चरक, सुश्रुत आदि संहिताकारों ने भी अपनायी है।

क्र.	स्थान	अध्याय संख्या	सूत्र संख्या
1	सूत्रस्थान	40	2010
2	शारीरस्थान	12	512
3	निदानस्थान	16	750 1.2
4	चिकित्सास्थान	24	1704
5	कल्पसिद्धिस्थान	8	526
6	उत्तरस्थान	50	3732
	कुल 6 स्थान	150 अध्याय	9234 सूत्र

टीका: इन्दु विरचित 'शशिलेखा' नामक व्याख्या।

प्रकाशन: अष्टांग संग्रह का एक संस्करण इन्दु व्याख्या सहित 1888 में श्रीगणेश तर्टे ने प्रकाशित किया। 1924 में टी. रूद्रपारशव ने इसका एक संस्करण 3 भागों में त्रिचुर से प्रकाशित करवाया। पं. रामचन्द्रशास्त्री किंजवडेकर ने पुणे से कुछ अंशों को प्रकाशित करवाया।

हिन्दी भाषानुवाद निम्न विद्वानों ने किया:

- अत्रिदेव गुप्त (सम्पूर्ण 2 भागों में)
- लालचन्द्र वैद्य (सम्पूर्ण 3 भागों में)

- गोवर्धन शर्मा छांगाणी, नागपुर (सूत्रस्थान)
- रविदत्त त्रिपाठी (सूत्रस्थान)

अंग्रेजी अनुवाद

- डॉ. के.आर. श्रीकण्ठमूर्ति (सम्पूर्ण 3 भागों में)
- डॉ. एस. सुरेश बाबु (सूत्रस्थान)
- डॉ. बी. रामाराव (सूत्रस्थान)

अष्टांग हृदय (Ashtanga Hrdaya)

ग्रन्थकर्ता: लघु वाग्भट

काल: 7 वीं शती

ग्रन्थ संरचना: इस ग्रन्थ में कुल 6 स्थान और 120 अध्याय हैं। लघु वाग्भट ने नवीन पद्धति का अनुसरण किया है जिसमें केवल पद्यात्मक शैली में संपूर्ण ग्रन्थ की रचना हुई है।

क्र.	स्थान	अध्याय संख्या	सूत्र संख्या
1	सूत्रस्थान	30	1603
2	शारीरस्थान	6	457
3	निदानस्थान	16	785

4	चिकित्सास्थान	22	1975
5	कल्पसिद्धिस्थान	6	258
6	उत्तरस्थान	40	2234
	कुल 6 स्थान	120 अध्याय	7312 सूत्र

ग्रन्थ वैशिष्ट्यः

लघु वाग्भट विरचित 'अष्टांग हृदय' पद्यात्मक शैली में लिखा गया है। लघु वाग्भट स्वयं अपने ग्रन्थ के विषय में कहते हैं:

तेभ्योऽतिविप्रकीर्णेभ्यः प्रायः सारतरोच्चयः।।

क्रियतेऽष्टांगहृदयं नातिसंक्षेपविस्तरम्। अ.हृ.सू. 1.4

टीका:

- सर्वांगसुन्दरी: अरुणदत्त
- आयुर्वेद रसायन: हेमाद्रि
- पदार्थचन्द्रिका: चन्द्रनन्दन

हिन्दी भाषान्तर:

- अत्रिदेव गुप्त एवं यदुनन्दन उपाध्याय
- काशीनाथ शास्त्री

- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी विरचित 'निर्मला' व्याख्या
- लालचन्द्र वैद्य
- पं. शिवशर्मा विरचित 'शिवप्रदीपिका' व्याख्या

अंग्रेजी भाषानुवाद:

- डॉ. के.आर. श्रीकण्ठमूर्ति
- राहुल पीटर दास विरचित अंग्रेजी अनुवाद जर्मनी से प्रकाशित

8 वीं शती में इस ग्रन्थ का अनुवाद अरबी भाषा में 'अष्टांकर' नाम से हुआ। इस ग्रन्थ का तिब्बती अनुवाद भी हुआ है। 1941 में इस ग्रन्थ का जर्मन भाषा में भी अनुवाद हुआ।

माधव निदान (Madhava Nidana)

ग्रन्थकर्ता: माधवकर

काल: 700 ई.

ग्रन्थ पर्याय नाम: रोगविनिश्चय/ रूग्विनिश्चय

ग्रन्थ वैशिष्ट्य: कुल अध्याय संख्या: 69

माधव निदान में प्राचीन ग्रन्थों से विषयों का संकलन किया है तथा नवीन विषयों का समावेश कर उनका विशदीकरण भी किया है।

टीका:

- मधुकोष व्याख्या: विजयरक्षित एवं श्रीकण्ठदत्त
- आतंकदर्पण: वाचस्पति
- रोगविनिश्चय विवरण सिद्धान्त चिन्तामणि: नरसिंह कविराज

प्रकाशन: इस ग्रन्थ का अरबी भाषा में अनुवाद 8 वीं शती में हुआ था। प्रथम 5 अध्यायों का इटालियन भाषा में अनुवाद मॅरिओल्लारी ने 1913 में किया और इसका प्रकाशन फ्लोरेन्स से हुआ। 1974 में माधव निदान के 10 अध्यायों का मधुकोष एवं आतंकदर्पण व्याख्या के साथ अंग्रेजी अनुवाद डॉ. म्युलेन बेल्ड ने किया। माधव निदान के कई संस्करण खेमराज प्रकाशन, निर्णयसागर प्रेस, मोतीलाल बनारसीदास आदि संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हुये।

हिन्दी भाषा में निम्न व्याख्याओं का विवरण प्राप्त होता है:

- शारदा व्याख्या: शारदाचरण सेन (कविराज पी.के. सेन द्वारा 1932 में प्रकाशित)
- विकासिनी व्याख्या: दीनानाथ शर्मा शास्त्री (1950 में दिल्ली से प्रकाशित)

- विद्योतिनी व्याख्या: सुदर्शन शास्त्री (1953 में चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी द्वारा प्रकाशित)
- सर्वांगसुन्दरी व्याख्या: लालचन्द वैद्य
- विमला मधुधारा: आचार्य ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद निम्न दो विद्वानों किया:

- डॉ. के.आर. श्रीकृष्णमूर्ति
- डॉ. जी.डी. सिंघल

शार्गंधर संहिता (Sharangdhara Samhita)

ग्रन्थकर्ता: शार्गंधर

पिता: दामोदर

काल: 13 वीं शती

ग्रन्थ वैशिष्ट्य: शार्गंधर संहिता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'भैषज्य कल्पना' है। इस ग्रन्थ में विविध चिकित्सोपयोगी कल्पों की निर्माण प्रक्रियादि विषयों का विशद वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ में कुल 32 अध्याय हैं। यह ग्रन्थ 2600 सूत्रों में पूर्ण हुआ है। यह ग्रन्थ 3 खण्डों में विभाजित हुआ है। यथा:

खण्ड	अध्याय	विषय	
पूर्व खण्ड	7 अध्याय	1. परिभाषा 2. भैषज्याख्यानक 3. नाड़ीपरीक्षादि विधि 4. दीपन पाचन	5. कलादिकाख्यान 6. आहारादिगति 7. रोगगणना
मध्यम खण्ड	12 अध्याय	1. स्वरस 2. क्वाथ 3. फाण्ट 4. हिम 5. कल्क 6. चूर्ण	7. गुटिका 8. लेह 9. स्नेह 10. सन्धान 11. धातुशोधन 12. रस
उत्तर खण्ड	13 अध्याय	1. स्नेहपान 2. स्वेदविधि 3. वमन 4. विरेचन 5. स्नेहबस्ति 6. निरूहण 7. उत्तरबस्ति	8. नस्यविधि 9. धूमपान 10. गण्डूषादिविधि 11. लेपादिविधि 12. शोणितविस्रुति 13. नेत्रकर्म

टीका:
- दीपिका व्याख्या: आढमल्ल
- गूढ़ार्थदीपिका: काशीराम
- आयुर्वेद दीपिका: रुद्रभट्ट

प्रकाशन: शार्गधर संहिता के आढमल्ल विरचित 'दीपिका' व्याख्या और काशीराम विरचित 'गूढ़ार्थदीपिका' व्याख्या के साथ एक संस्करण पं. परशुराम शास्त्री के सम्पादकत्व में 1920 में निर्णयसागर प्रेस, बंबई से प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त चौखम्बा, वाराणसी द्वारा निम्न विद्वानों की हिन्दी व्याख्याओं के साथ भी ग्रन्थ प्रकाशन हुआ:

- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी विरचित हिन्दी व्याख्या
- दुर्गादत्त शास्त्री विरचित 'तत्त्वदीपिका' व्याख्या
- डॉ. शैलजा श्रीवास्तव विरचित 'जीवनप्रदा' हिन्दी व्याख्या

इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद डॉ. के.आर. श्रीकण्ठमूर्ति ने किया।

भावप्रकाश (Bhava Prakasha)

ग्रन्थकर्ता: भावमिश्र

पिता: लटकन मिश्र

निवास: कविराज गणनाथ सेन के अनुसार: वाराणसी/ कान्यकुब्ज तथा आचार्य प्रियव्रत शर्मा के अनुसार मगध देश।

काल: 16 वीं शती

अन्य ग्रन्थ: गुणरत्नमाला (डॉ. कैलाशपति पाण्डेय एवं डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह विरचित 'प्रकाश' नामक हिंदी व्याख्या के साथ चौखम्बा से प्रकाशित)

ग्रन्थ वैशिष्ट्य: भावमिश्र ने इस ग्रन्थ के लेखन का उद्देश्य निम्न शब्दों में स्पष्ट किया है: "प्राचीन मुनियों के निबन्धों से संग्रहीत सूक्तिमणियों के द्वारा चिकित्साशास्त्र में व्याप्त जाड्यान्धकार को दूर करने के लिये इस ग्रन्थ की रचना की है।"। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ 3 खण्डों एवं 10268 सूत्रों में पूर्ण हुआ है। इस ग्रन्थ में कुल 7 भाग एवं 80 अध्याय हैं। इस ग्रन्थ की संरचना निम्नोक्त है:

खण्ड: 3	भाग: 7	अध्याय
पूर्व खण्ड	प्रथम भाग (6 अध्याय)	आयुर्वेदावतरण सृष्टि प्रकरण गर्भ प्रकरण बाल प्रकरण दिनचर्या एवं ऋतुचर्या मिश्र प्रकरण (निघण्टु भाग)
	द्वितीय भाग (1 अध्याय)	मान परिभाषा, भेषज विधान, धात्वादि शोधन मारण, पञ्चकर्म विधि
मध्यम खण्ड	प्रथम भाग (4 अध्याय)	ज्वर से संग्रहणी प्रकरण तक
	द्वितीय भाग (25 अध्याय)	अर्श से वातरक्त प्रकरण तक
	तृतीय भाग (19 अध्याय)	शूल से भग्न प्रकरण तक
	चतुर्थ भाग (23 अध्याय)	नाडी व्रण से बालरोग प्रकरण तक
उत्तर खण्ड	2 अध्याय	वाजीकरण प्रकरण रसायन प्रकरण

भावप्रकाश में विशेष रूप से शार्गधर संहिता का अनुसरण किया गया है तथा निघण्टु भाग में मदनपाल निघण्टु का उपयोग किया गया है।

टीका: कश्मीर के महाराज रणवीरसिंह के आदेश पर जयकृष्ण के पुत्र 'जयदेव' ने "श्रीरणवीरसिंहदेवावलोकनसद्वैद्यसिद्धान्तरत्नाकर" नामक व्याख्या लिखी है। इसकी एक और टीका राधाकृष्ण विरचित "सर्वनिघण्टुसर्वस्वटीका" का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

प्रकाशन: इस ग्रन्थ का प्राचीनतम संस्करण 1875 में जीवानन्द विद्यासागर, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त 1895 में दत्तराम चौबे की हिन्दी व्याख्या के साथ निर्णयसागर प्रेस, बंबई से तथा 1906 में शालिग्राम वैश्य विरचित हिन्दी व्याख्या के साथ वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई से प्रकाशित हुये। ब्रह्मशंकर मिश्र की 'विद्योतिनी' व्याख्या के साथ एक संस्करण चौखम्बा, वाराणसी से भी प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद डॉ. के.आर. श्रीकण्ठमूर्ति ने किया।

भावप्रकाश के निघण्टु भाग पर भी कई विद्वानों ने व्याख्यायें लिखी। इनकी सूची निम्नोक्त है:

- आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी विरचित व्याख्या

- श्रीकृष्णचन्द्र चुनेकर विरचित 'विमर्शाख्य' व्याख्या
- पं. शिवशर्मा विरचित 'शिवप्रकाशिका' व्याख्या
- डॉ. अमृतपाल सिंह विरचित अंग्रेजी व्याख्या।

आयुर्वेद के प्रसिद्ध आचार्य गण
(Important sages of Ayruveda)

भरद्वाज (*Bhardvaja*)

- चरक संहिता में मुख्य रूप से दो भरद्वाज नाम के ऋषियों का उल्लेख:
  1. भरद्वाज
  2. कुमारशिरा भरद्वाज
- काश्यप संहिता में 'कृष्ण भरद्वाज' का उल्लेख आता है।
- हारीत संहिता में आयुर्वेद प्रवर्तक भरद्वाज ऋषि का वर्णन है।
- चरक संहिता में वर्णित आयुर्वेदावतरण में भरद्वाज का उल्लेख प्राप्त होता है।
- इन्द्र से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर भरद्वाज ने भूतल पर आकर इसका ज्ञान आत्रेयादि ऋषियों को दिया।

पुनर्वसु आत्रेय (*Punarvasu Atreya*)

पर्याय: चान्द्रभागी, चान्द्रभाग, पुनर्वसु (संभवत: पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेने के कारण), अत्रिपुत्र आदि

- भरद्वाज ने इन्द्र से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर पुनर्वसु आत्रेय को दिया।
- कायचिकित्सा विषय के विशेषज्ञ
- आयुर्वेद शास्त्र में तीन आत्रेयों का वर्णन
  - पुनर्वसु आत्रेय
  - भिक्षु आत्रेय
  - कृष्णात्रेय
- शिष्य परम्परा: 6 प्रमुख शिष्य - अग्निवेश - जतूकर्ण - भेल - पराशर - हारीत - क्षारपाणि

धन्वन्तरि (*Dhanvantari*)

- शल्य शास्त्र का आद्यन्त सम्यग्ज्ञाता धन्वन्तरि कहलाता है।
- इन्होंने भरद्वाज से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर उसे अष्टांग में विभाजित कर अपने शिष्यों को दिया।
- धन्वन्तरि के पुत्र केतुमान्, केतुमान् के पुत्र भीमरथ, भीमरथ के पुत्र दिवोदास हुये जिन्होंने वाराणसी का आधिपत्य ग्रहण किया।
- सुश्रुत संहिता में धन्वन्तरि रूप काशिराज दिवोदास द्वारा सुश्रुतादि शिष्यों को उपदेश देने का निर्देश प्राप्त होता है।

काशिराज दिवोदास (*Kashiraja Divodasa*)

- ये वाराणसी नगर के संस्थापक थे।
- इन्होंने ही शल्य शास्त्र प्रधान 'धान्वन्तर सम्प्रदाय' की परम्परा को प्रचलित किया था।
- इन्होने अपने सुश्रुतादि 12 शिष्यों को शल्य प्रधान आयुर्वेद का ज्ञान दिया।

वृद्ध सुश्रुत (*Vrddha Sushruta*)

सुश्रुत दो माने जाते हैं। एक हैं वृद्ध सुश्रुत तथा दूसरे हैं सुश्रुत। सुश्रुत संहिता में कहीं कहीं वृद्ध सुश्रुत और सुश्रुत दोनों के उद्धरण एकत्र दृष्टिगोचर होते हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि काशिराज दिवोदास का शिष्य आद्य सुश्रुत या वृद्ध सुश्रुत था जिसने मूल संहिता की रचना की। उसके बाद सुश्रुत ने उसे प्रतिसंस्कार करके एक नवीन रूप दिया। आद्य सुश्रुत उपनिषत्कालीन हैं। अत: तत्कालीन सामग्री मूल सुश्रुत संहिता की ही माननी चाहिये। इसी लिये वर्तमान काल में उपलब्ध सुश्रुत संहिता के निर्माण के चार स्तर प्राप्त होते हैं।

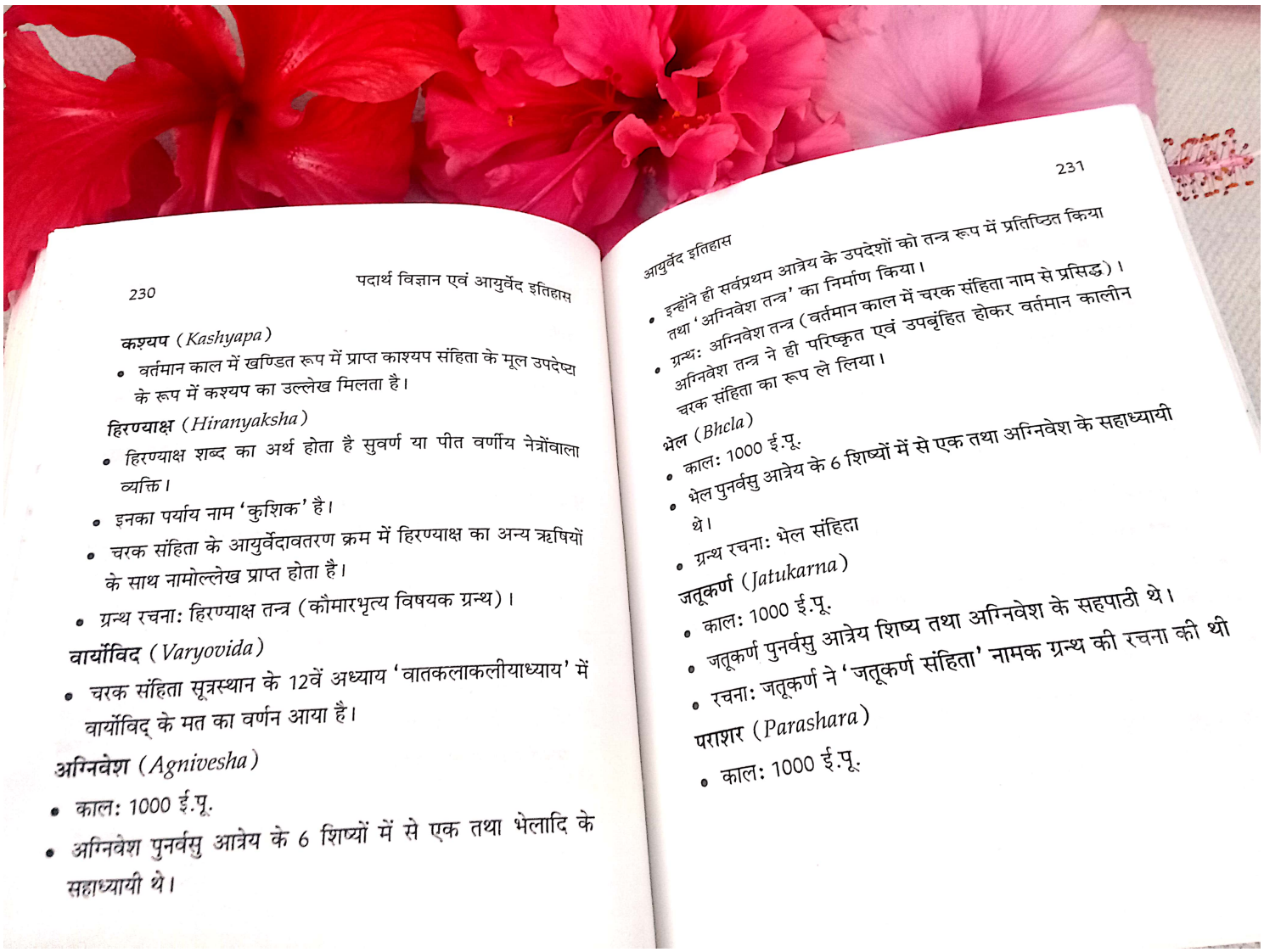

कश्यप (*Kashyapa*)

- वर्तमान काल में खण्डित रूप में प्राप्त काश्यप संहिता के मूल उपदेष्टा के रूप में कश्यप का उल्लेख मिलता है।

हिरण्याक्ष (*Hiranyaksha*)

- हिरण्याक्ष शब्द का अर्थ होता है सुवर्ण या पीत वर्णीय नेत्रोंवाला व्यक्ति।
- इनका पर्याय नाम 'कुशिक' है।
- चरक संहिता के आयुर्वेदावतरण क्रम में हिरण्याक्ष का अन्य ऋषियों के साथ नामोल्लेख प्राप्त होता है।
- ग्रन्थ रचना: हिरण्याक्ष तन्त्र (कौमारभृत्य विषयक ग्रन्थ)।

वार्योविद (*Varyovida*)

- चरक संहिता सूत्रस्थान के 12वें अध्याय 'वातकलाकलीयाध्याय' में वार्योविद् के मत का वर्णन आया है।

अग्निवेश (*Agnivesha*)

- काल: 1000 ई.पू.
- अग्निवेश पुनर्वसु आत्रेय के 6 शिष्यों में से एक तथा भेलादि के सहाध्यायी थे।

- इन्होंने ही सर्वप्रथम आत्रेय के उपदेशों को तन्त्र रूप में प्रतिष्ठित किया तथा 'अग्निवेश तन्त्र' का निर्माण किया।
- ग्रन्थ: अग्निवेश तन्त्र (वर्तमान काल में चरक संहिता नाम से प्रसिद्ध)। अग्निवेश तन्त्र ने ही परिष्कृत एवं उपबृंहित होकर वर्तमान कालीन चरक संहिता का रूप ले लिया।

भेल (*Bhela*)

- काल: 1000 ई.पू.
- भेल पुनर्वसु आत्रेय के 6 शिष्यों में से एक तथा अग्निवेश के सहाध्यायी थे।
- ग्रन्थ रचना: भेल संहिता

जतूकर्ण (*Jatukarna*)

- काल: 1000 ई.पू.
- जतूकर्ण पुनर्वसु आत्रेय शिष्य तथा अग्निवेश के सहपाठी थे।
- रचना: जतूकर्ण ने 'जतूकर्ण संहिता' नामक ग्रन्थ की रचना की थी

पराशर (*Parashara*)

- काल: 1000 ई.पू.

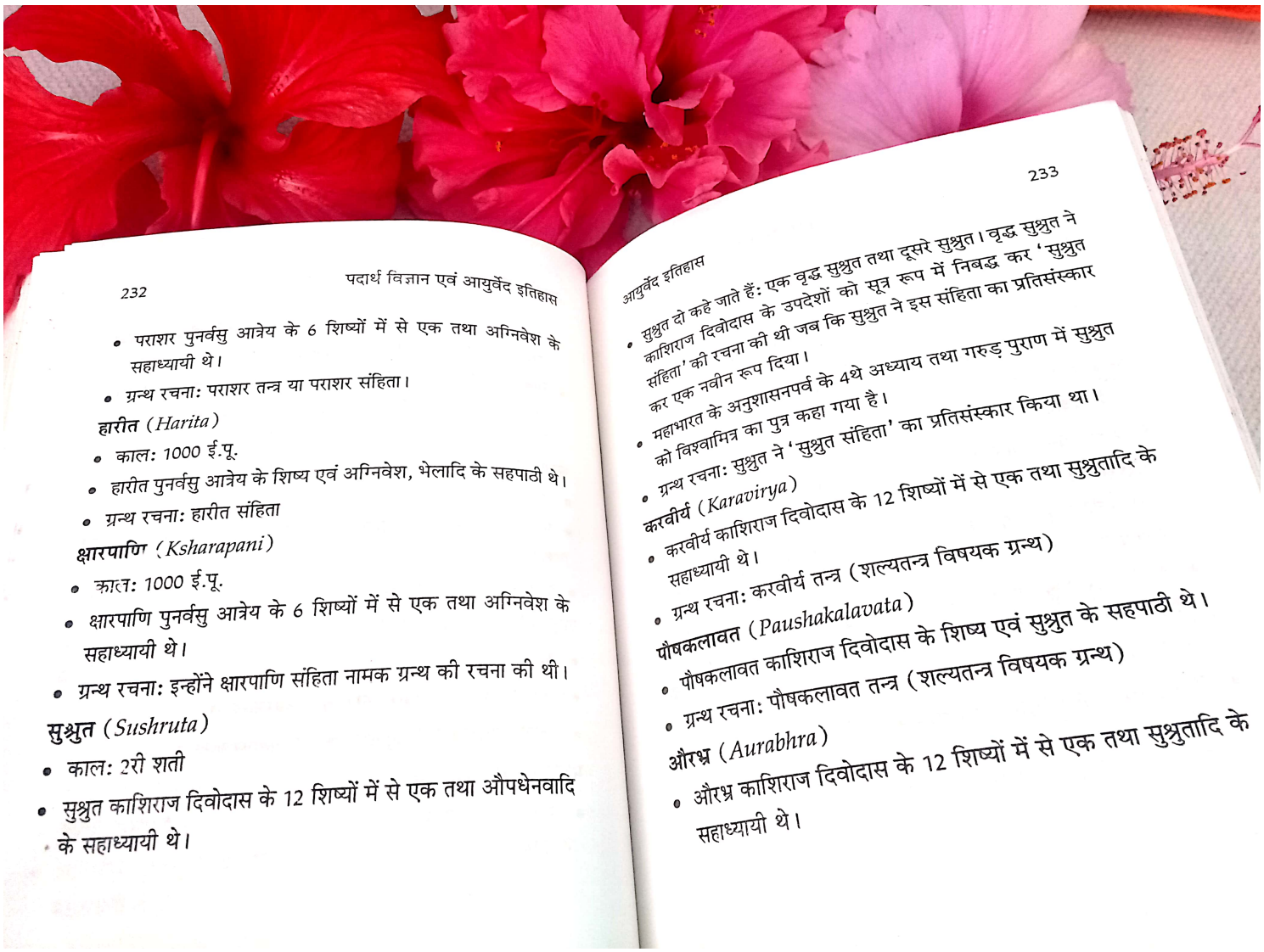

- पराशर पुनर्वसु आत्रेय के 6 शिष्यों में से एक तथा अग्निवेश के सहाध्यायी थे।
- ग्रन्थ रचना: पराशर तन्त्र या पराशर संहिता।

हारीत (*Harita*)

- काल: 1000 ई.पू.
- हारीत पुनर्वसु आत्रेय के शिष्य एवं अग्निवेश, भेलादि के सहपाठी थे।
- ग्रन्थ रचना: हारीत संहिता

क्षारपाणि (*Ksharapani*)

- काल: 1000 ई.पू.
- क्षारपाणि पुनर्वसु आत्रेय के 6 शिष्यों में से एक तथा अग्निवेश के सहाध्यायी थे।
- ग्रन्थ रचना: इन्होंने क्षारपाणि संहिता नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

सुश्रुत (*Sushruta*)

- काल: 2री शती
- सुश्रुत काशिराज दिवोदास के 12 शिष्यों में से एक तथा औपधेनवादि के सहाध्यायी थे।

- सुश्रुत दो कहे जाते हैं: एक वृद्ध सुश्रुत तथा दूसरे सुश्रुत। वृद्ध सुश्रुत ने काशिराज दिवोदास के उपदेशों को सूत्र रूप में निबद्ध कर 'सुश्रुत संहिता' की रचना की थी जब कि सुश्रुत ने इस संहिता का प्रतिसंस्कार कर एक नवीन रूप दिया।
- महाभारत के अनुशासनपर्व के 4थे अध्याय तथा गरुड़ पुराण में सुश्रुत को विश्वामित्र का पुत्र कहा गया है।
- ग्रन्थ रचना: सुश्रुत ने 'सुश्रुत संहिता' का प्रतिसंस्कार किया था।

करवीर्य (*Karavirya*)

- करवीर्य काशिराज दिवोदास के 12 शिष्यों में से एक तथा सुश्रुतादि के सहाध्यायी थे।
- ग्रन्थ रचना: करवीर्य तन्त्र (शल्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

पौषकलावत (*Paushakalavata*)

- पौषकलावत काशिराज दिवोदास के शिष्य एवं सुश्रुत के सहपाठी थे।
- ग्रन्थ रचना: पौषकलावत तन्त्र (शल्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

औरभ्र (*Aurabhra*)

- औरभ्र काशिराज दिवोदास के 12 शिष्यों में से एक तथा सुश्रुतादि के सहाध्यायी थे।

- ग्रन्थ रचना: औरभ्र तन्त्र (शल्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

औपधेनव (*Aupadhenava*)

- औपधेनव काशिराज दिवोदास शिष्य और सुश्रुत, करवीर्यादि के सहपाठी थे।
- ग्रन्थ रचना: औपधेनव तन्त्र (शल्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

भोज (*Bhoja*)

- ये दिवोदास के शिष्य थे।
- ग्रन्थ रचना: भोज तन्त्र (शल्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

गोपुररक्षित (*Gopurarakshita*)

- ये काशिराज दिवोदास के 12 शिष्यों में से एक तथा सुश्रुतादि के सहाध्यायी थे।
- कतिपय विद्वान गोपुररक्षित नाम से निर्दिष्ट गोपुर तथा रक्षित दो भिन्न-भिन्न आचार्य मानते हैं। कुछ लोग संयुक्त नाम से एक ही व्यक्ति मानते हैं।
- ग्रन्थ रचना: गोपुररक्षित तन्त्र (शल्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

वैतरण (*Vaitarana*)

- ये काशिराज दिवोदास के शिष्य तथा सुश्रुत, करवीर्यादि के सहपाठी थे।
- ग्रन्थ रचना: वैतरण तन्त्र (शल्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

वृद्ध जीवक (*Vrddha Jivaka*)

- वृद्धजीवक तन्त्र नामक ग्रन्थ के उपदेष्टा महर्षि कश्यप हैं तथा इनके वचनों को वृद्ध जीवक ने ग्रन्थ रूप में निबद्ध किया।
- यह एक कुशल शल्य चिकित्सक थे।
- ग्रन्थ रचना: वृद्धजीवक तन्त्र/काश्यप संहिता (कौमारभृत्य विषयक ग्रन्थ)

निमि (*Nimi*)

- यह काशिराज दिवोदास के शिष्य तथा सुश्रुत के सहध्यायी थे।
- यह शालाक्य तन्त्र के जनक के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- ग्रन्थ रचना: निमि तन्त्र (शालाक्यतन्त्र विषयक ग्रन्थ)

चरक (*Charaka*)

- काल: 3 शती ई. पूर्व (शुंग काल या मौर्य शुंग काल के सन्धि काल में)

- चरक 'यायावर' कोटि के ऋषि थे जो एक स्थान पर स्थित न रह कर घूमते रहते थे।
- कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा का नाम 'चरक' है और इस सम्प्रदाय के लोग भी चरक कहलाते थे।
- कई विद्वान चरक को शेषनाग का अवतार मान इनका सम्बन्ध पतञ्जलि से जोड़ते हैं।
- कुछ लोग इन्हें कनिष्क का राजवैद्य भी स्वीकार करते हैं।
- चरक और पतञ्जलि: चरक और पतञ्जलि की एकता का भ्रम उत्पन्न होने का कारण सम्भवत: उनका समकालीन होना, भाष्य की रचना करना तथा नाग से सम्बन्ध होना रहा है। इसका सबसे पहले वर्णन स्वामिकुमार ने अपनी व्याख्या 'चरक पञ्जिका' में किया है।

- ग्रन्थ लेखन: चरक ने अग्निवेश तन्त्र का प्रतिसंस्कार किया, जो कालान्तर में चरक संहिता के रूप में परिणत हो प्रसिद्ध हुई।

दृढ़बल (*Drdhabala*)

- काल: 4 थी शती
- पिता: कपिलबल

- निवास: पञ्चनदपुर। कई विद्वान इनका निवास स्थान कश्मीर, पंजाब या काशी भी मानते हैं।
- इन्होंने तन्त्रों की सहायता लेकर चरक संहिता के खण्डित अंशों को पूर्ण किया तथा प्रतिसंस्कार भी किया। दृढ़बल ने चरक संहिता के कुल 41 अध्यायों को पूर्ण किया। इनमें चिकित्सास्थान के 17 अध्याय, कल्प स्थान के 12 अध्याय और सिद्धिस्थान के 12 अध्याय हैं।

नागार्जुन (*Nagarjuna*)

- ये सुश्रुत संहिता के प्रतिसंस्कर्ता थे।
- ग्रन्थ लेखन: नागार्जुन ने सुश्रुत संहिता का प्रतिसंस्कार किया था।

वात्स्य (*Vatsya*)

- वृद्धजीवकीय तन्त्ररूप में आई हुई तथा काल प्रवाह से लुप्त हुई इस काश्यप संहिता को अनायास नामक यक्ष से प्राप्त करके जीवक के वंश वाले, वेदवेदांग के पण्डित तथा शिवकश्यप के भक्त वात्स्य नामक विद्वान ने पुन: संस्कृत करके प्रकाशित किया।
- ग्रन्थ लेखन: वात्स्य ने काश्यप संहिता का प्रतिसंस्कार किया।

वाग्भट (*Vagbhata*)

आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र में वाग्भट नाम के 4 विद्वानों का वर्णन प्राप्त होता है। यथा:

- वृद्ध वाग्भट (अष्टांग संग्रहकार)
- मध्य वाग्भट (इनका वर्णन बहुत कम मिलता है। चक्रदत्त के व्याख्याकार निश्चलकर की टीका रत्नप्रभा में इनके संदर्भ प्राप्त होते हैं।)
- लघु वाग्भट (अष्टांग हृदयकार)
- रस वाग्भट (रसरत्नसमुच्चय के रचयिता)

वृद्ध वाग्भट (*Vrddha Vagbhata*)

- काल: 550 ई.
- पर्याय नाम: वाग्भट प्रथम
- पिता: सिंहगुप्त
- गुरु: अवलोकितेश्वर
- ग्रन्थ लेखन: अष्टांग संग्रह

लघु वाग्भट (*Laghu Vagbhata*)

- काल: 7 वीं शती
- पर्याय नाम: स्वल्प वाग्भट, वाग्भट द्वितीय
- पिता: सिंहगुप्त
- ग्रन्थलेखन:

- अष्टांग हृदय
- अष्टांगावतार
- अष्टांग निघण्टु

आयुर्वेद के अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ

(Other popular texts of Ayurveda)

ग्रन्थ नाम	रचनाकार/ कालादि	टीका एवं वैशिष्ट्य
भैषज्यरत्नावली (*Bhaishajya Ratnavali*)	ग्रन्थकर्ता: गोविन्ददास सेन नामक वंगीय विद्वान काल: 18 वीं शती	वैशिष्ट्य: सभी रोगों की विशिष्ट चिकित्सा, चिकित्सा सूत्र, आहार व्यवस्था, पथ्यापथ्य विचार, चूर्ण, क्वाथादि, रसौषधियों आदि का सुंदर वर्णन किया है।
योगरत्नाकर (*Yoga Ratnakara*)	ग्रन्थकर्ता: नयनशेखर/ नारायणशेखर नामक जैन पण्डित काल: 17/ 18 वीं शती	ग्रन्थ वैशिष्ट्य: यह ग्रन्थ दो खण्डों में विभाजित है। यथा: पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध। ग्रन्थ के पूर्वार्ध में मूलत: कायचिकित्सा के विषयों का तथा उत्तरार्ध में अन्य विषयों का उल्लेख किया है।

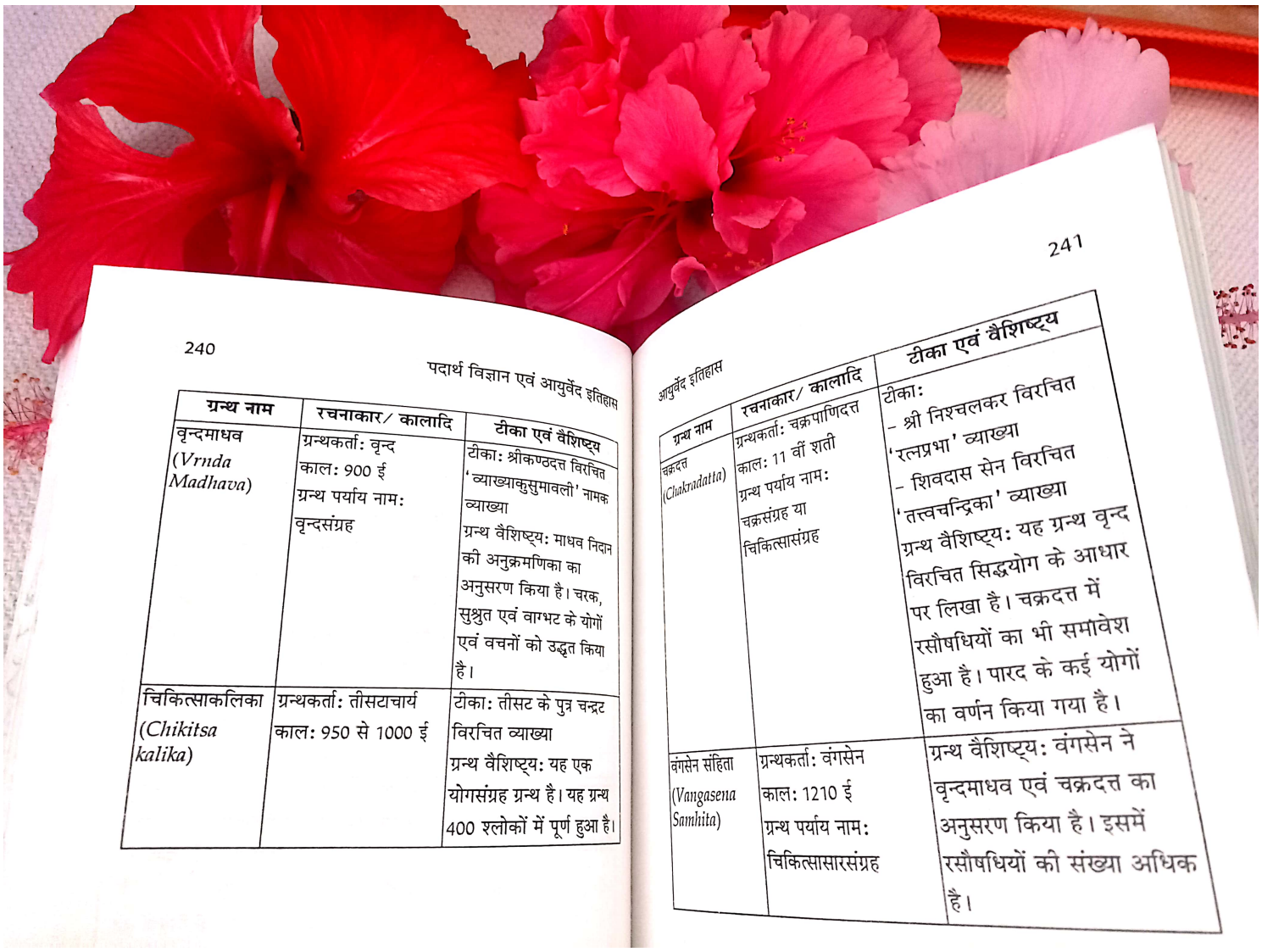

ग्रन्थ नाम	रचनाकार/ कालादि	टीका एवं वैशिष्ट्य
वृन्दमाधव (*Vrnda Madhava*)	ग्रन्थकर्ता: वृन्द काल: 900 ई ग्रन्थ पर्याय नाम: वृन्दसंग्रह	टीका: श्रीकण्ठदत्त विरचित 'व्याख्याकुसुमावली' नामक व्याख्या ग्रन्थ वैशिष्ट्य: माधव निदान की अनुक्रमणिका का अनुसरण किया है। चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट के योगों एवं वचनों को उद्धृत किया है।
चिकित्साकलिका (*Chikitsa kalika*)	ग्रन्थकर्ता: तीसटाचार्य काल: 950 से 1000 ई	टीका: तीसट के पुत्र चन्द्रट विरचित व्याख्या ग्रन्थ वैशिष्ट्य: यह एक योगसंग्रह ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ 400 श्लोकों में पूर्ण हुआ है।

ग्रन्थ नाम	रचनाकार/ कालादि	टीका एवं वैशिष्ट्य
चक्रदत्त (*Chakradatta*)	ग्रन्थकर्ता: चक्रपाणिदत्त काल: 11 वीं शती ग्रन्थ पर्याय नाम: चक्रसंग्रह या चिकित्सासंग्रह	टीका: - श्री निश्चलकर विरचित 'रत्नप्रभा' व्याख्या - शिवदास सेन विरचित 'तत्त्वचन्द्रिका' व्याख्या ग्रन्थ वैशिष्ट्य: यह ग्रन्थ वृन्द विरचित सिद्धयोग के आधार पर लिखा है। चक्रदत्त में रसौषधियों का भी समावेश हुआ है। पारद के कई योगों का वर्णन किया गया है।
वंगसेन संहिता (*Vangasena Samhita*)	ग्रन्थकर्ता: वंगसेन काल: 1210 ई ग्रन्थ पर्याय नाम: चिकित्सासारसंग्रह	ग्रन्थ वैशिष्ट्य: वंगसेन ने वृन्दमाधव एवं चक्रदत्त का अनुसरण किया है। इसमें रसौषधियों की संख्या अधिक है।

ग्रन्थ नाम	रचनाकार/ कालादि	टीका एवं वैशिष्ट्य
नावनीतक (*Navanitaka*)	- पाण्डुलिपी कर्नल एच. बावर को 1890 में पूर्वी तुर्किस्तान के कुछार नामक स्थान से प्राप्त। काल: 4 थी 0562ती पर्याय नाम: सिद्धसंकर्ष	ग्रन्थ संरचना: इसमें कुल 16 अध्याय हैं। 14, 15 एवं 16 वॉ अध्याय कुछ खण्डित हैं।
राजमार्तण्ड (*Raja Martanda*)	ग्रन्थकर्ता: राजा भोज (धारा के परमारवंशीय) काल: 11 वीं शती	ग्रन्थ वैशिष्ट्य: यह लघु काय योग संग्रह प्रधान ग्रन्थ है।
गदनिग्रह (*Gada Nigraha*)	ग्रन्थकर्ता: सोढल काल: 1175 से 1215 ई	ग्रन्थ संरचना: इस ग्रन्थ में दो खण्ड हैं। - प्रयोग खण्ड: इसमें कल्पानुसार योगों का संग्रह किया गया है। - कायचिकित्सा खण्ड: इसमें रोगानुसार चिकित्सा का वर्णन किया है।

ग्रन्थ नाम	रचनाकार/ कालादि	टीका एवं वैशिष्ट्य
वसवराजीयम् (*Vasava rajiyam*)	ग्रन्थकर्ता नाम: वसवराज निवास: कोट्टूर ग्राम, आन्ध्र प्रदेश गुरु: आराध्य रामदेशिक काल: 16 वीं शती	दक्षिण भारत में रुद्र सम्प्रदाय से सम्बद्ध यह ग्रन्थ है। ग्रन्थ संरचना: इस ग्रन्थ में 25 प्रकरण हैं।

प्रमुख टीकाकार/ व्याख्याकार (*Important Commentators*)

प्रमुख टीकाकार	काल	रचनायें
प्राचीन काल:		
भट्टारहरिचन्द्र	7वीं शती	चरक संहिता: चरकन्यास व्याख्या
स्वामिकुमार	7वीं शती	चरक संहिता: चरकपञ्जिका व्याख्या
मध्यकाल:		
जेज्जट	9वीं शती	चरक संहिता: निरन्तरपदव्याख्या टीका सुश्रुत संहिता पर टीका अष्टांग हृदय पर टीका

प्रमुख टीकाकार	काल	रचनायें
चन्द्रनन्दन	10वीं शती	अष्टांग हृदय: पदार्थचन्द्रिका टीका
चन्द्रट	10वीं शती	सुश्रुत संहिता पाठशुद्धि चिकित्साकलिका पर विवृति योगरत्नसमुच्चय योगमुष्टि वैद्यक कोष
गयदास	11वीं शती	सुश्रुत संहिता: न्यायचन्द्रिका व्याख्या चरक संहिता: चरक चन्द्रिका
चक्रपाणिदत्त	11वीं शती	चरक संहिता: आयुर्वेद दीपिका टीका सुश्रुत संहिता: भानुमती व्याख्या चक्रदत्त (चिकित्सासंग्रह) द्रव्यगुणसंग्रह शब्दचन्द्रिका (वैद्यककोष) व्याकरणतत्वचन्द्रिका व्यग्रदरिद्रशुभंकर सर्वसारसंग्रह

प्रमुख टीकाकार	काल	रचनायें
डल्हण	12वीं शती	सुश्रुत संहिता: निबन्ध संग्रह
विजयरक्षित	12वीं शती	माधव निदान: मधुकोष व्याख्या
श्रीकण्ठदत्त	12वीं शती	माधव निदान: मधुकोष व्याख्या वृन्दमाधव: व्याख्याकुसुमावली टीका
अरुणदत्त	13वीं शती	अष्टांग हृदय: सर्वांगसुन्दर व्याख्या
इन्दु	13वीं शती	अष्टांग संग्रह: शशिलेखा टीका अष्टांग हृदय टीका
निश्चलकर	13वीं शती	चक्रदत्त: रत्नप्रभा टीका
हेमाद्रि	13वीं शती	अष्टांग हृदय: आयुर्वेद रसायन टीका चतुर्वर्गचिन्तामणि मुक्ताफल पर टीका हरिलीला पर टीका

प्रमुख टीकाकार	काल	रचनायें
वोपदेव	13वीं शती	शार्गधर संहिता पर टीका सिद्धमन्त्र: प्रकाश व्याख्या शतश्लोकी शतश्लोकी: चन्द्रकला व्याख्या मुक्ताफल हरिलीला
आढमल्ल	14वीं शती	शार्गधर संहिता: दीपिका व्याख्या
वाचस्पति	14वीं शती	माधव निदान: आतंकदर्पण व्याख्या
शिवदास सेन	15वीं शती	चरक संहिता: तत्त्वप्रदीपिका व्याख्या चक्रदत्त: तत्त्वचन्द्रिका व्याख्या द्रव्यगुणसंग्रह: व्याख्या अष्टांग हृदय: तत्त्वबोध व्याख्या भव्यदत्त विरचित योगरत्नाकर की व्याख्या

प्रमुख टीकाकार	काल	रचनायें
आधुनिक काल:		
काशीराम वैद्य	17वीं शती	शार्गधर संहिता: गूढार्थदीपिका व्याख्या
नरसिंह कविराज	17वीं शती	माधव निदान: रोगविनिश्चयविवरण सिद्धान्तचिन्तामणि चरक संहिता: चरकतत्त्वप्रकाश कौस्तुभ मधुमती
गंगाधर राय	19वीं शती	चरक संहिता: जल्पकल्पतरु व्याख्या परिभाषा भैषज्यरामायण आग्नेयायुर्वेदव्याख्या नाडीपरीक्षा राजवल्लभीय द्रव्यगुणविवृति भास्करोदय मृत्युञ्जयसंहिता आरोग्यस्तोत्र प्रयोगचन्द्रोदय आयुर्वेद संग्रह

प्रमुख टीकाकार	काल	रचनायें
हाराणचन्द्र चक्रवर्ती	20वीं शती	सुश्रुत संहिता: सुश्रुतार्थसन्दीपन टीका
योगीन्द्रनाथसेन	20वीं शती	चरक संहिता: चरकोपस्कार टीका
ज्योतिषचन्द्र सरस्वती	20वीं शती	चरक संहिता: चरकप्रदीपिका व्याख्या

द्रव्यगुण वाङ्मय (Important texts on Dravyaguna)

ग्रन्थ नाम	लेखक एवं काल	वैशिष्ट्य
अष्टांग निघण्टु (*Ashtanga Nighantu*)	लेखक: वाहटाचार्य काल: 8 वीं शती	- अष्टांग हृदय में वर्णित द्रव्यों का पर्यायशैली में वर्णन - कतिपय प्रकीर्ण द्रव्यों का भी वर्णन
धन्वन्तरि निघण्टु (*Dhanvantari Nighantu*)	लेखक: महेन्द्रभोगिक काल: 10 वीं शती	7 वर्ग
द्रव्यगुणसंग्रह (*Dravyaguna Samgraha*)	लेखक: चक्रपाणिदत्त काल: 11 वीं शती शिवदास सेन: संस्कृत व्याख्या	15 वर्ग

ग्रन्थ नाम	लेखक एवं काल	वैशिष्ट्य
सोढल निघण्टु (नामगुणसंग्रह) (*Sodhala Nighantu/ Namaguna Samgraha*)	लेखक: सोढल काल: 12 वीं शती	27 वर्ग
सिद्धमन्त्र (*Siddha Mantra*)	लेखक: वैद्याचार्य केशव, सिंहराज के राजवैद्य काल: 13 वीं शती टीका: केशव के पुत्र वोपदेव ने सिद्धमन्त्र पर 'प्रकाश' नामक व्याख्या लिखी	8 विभाग
मदनपाल निघण्टु (*Madanapala Nighantu*)	लेखक: मदनपाल ग्रन्थ पर्याय नाम: मदनविनोद काल: 1374 ई.	13 वर्ग
कैयदेव निघण्टु (*Kaideva Nighantu*)	लेखक: कैयदेव पण्डित ग्रन्थ पर्याय नाम: पथ्यापथ्यविबोधक काल: 15 वीं शती	8 वर्ग

ग्रन्थ नाम	लेखक एवं काल	वैशिष्ट्य
भावप्रकाश निघण्टु (*Bhava Prakasha Nighantu*)	लेखक: भावमिश्र काल: 16 वीं शती	23 वर्ग
राजनिघण्टु (*Raja Nighantu*)	लेखक: नरहरि पण्डित काल: 17 वीं शती ग्रन्थ पर्याय नाम: निघण्टु राज/अभिधानचूड़ामणि	23 वर्ग
शालिग्राम निघण्टु (*Shaligrama Nighantu*)	लेखक: शालिग्राम वैश्य काल: 1896	- निघण्टु शालिग्राम वैश्य विरचित 'बृहद् निघण्टु रत्नाकर' का 7 एवं 8 वॉ भाग है - दो भाग: पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध

रस शास्त्र वाङ्मय (Important texts of Rasa Shastra)

ग्रन्थ नाम	लेखक	काल	वैशिष्ट्य
रसहृदयतन्त्र	श्री भगवद्गोविन्द-पादाचार्य	10वीं शती	- 19 अवबोध में ग्रन्थ पूर्ण - रसेश्वरदर्शन ग्रन्थ का आधारभूत ग्रन्थ
रसार्णव	भैरवानन्द योगी	12वीं शती	- पार्वती परमेश्वर संवाद रूप में ग्रन्थ - विभागों में 4 पटल
रसेन्द्रचूडामणि	सोमदेव	12वीं शती	- 16 अध्याय - रसरत्नसमुच्चय का पूर्व भाग इसी ग्रन्थ के आधार पर लिखा गया है
गोरक्ष संहिता	गोरखनाथ	12वीं शती	- 2 भाग: कादिप्रकरण और भूतिप्रकरण।
रसप्रकाशसुधाकर	यशोधर भट्ट	12वीं शती	- 13 अध्याय

ग्रन्थ नाम	लेखक	काल	वैशिष्ट्य
रसरत्नसमुच्चय	वाग्भटाचार्य	13वीं शती	- 2 खण्ड और 30 अध्यायों में पूर्ण - प्रथम खण्ड के 1 से 11 अध्यायों में रस शास्त्र के सभी विषयों का समावेश है। दूसरे खण्ड में 12 से 30 अध्याय तक चिकित्सा प्रकरण है।
आनन्दकन्द	मन्थान भैरव	13वीं शती	- 2 खण्ड: अमृतीकरण विश्रान्ति (26 उल्लास) और क्रियाकरण विश्रान्ति (10 उल्लास)।
रसाध्याय	आचार्य कंकाल योगी	13वीं शती	- पारद के 18 संस्कारों का वर्णन
रसपद्धति	बिन्दु	15वीं शती	

ग्रन्थ नाम	लेखक	काल	वैशिष्ट्य
रससंकेतकलिका	कायस्थ चामुण्ड	15वीं शती	- 5 उल्लासों में पूर्ण
रसरत्नाकर	नित्यनाथ	15वीं शती	- 5 खण्ड: रसखण्ड, रसेन्द्रखण्ड, वादिखण्ड, रसायनखण्ड और मन्त्रखण्ड।
रसचिन्तामणि	अनन्तदेव सूरि	15वीं शती	- 11 स्तवकों में ग्रन्थ पूर्ण हुआ है।
लोहसर्वस्वम्	आचार्य सुरेश्वर	15वीं शती	
रसेन्द्रचिन्तामणि	ढुण्ढुकनाथ	16वीं शती	- 9 अध्याय
रसेन्द्रसारसंग्रह	कृष्णगोपाल भट्ट	16वीं शती	- रसशास्त्रीय द्रव्यों से चिकित्सा कार्यार्थ ग्रन्थ निर्माण हुआ।
रसकामधेनु	श्रीचूडामणि मिश्र	16वीं शती	- 4 पाद: उपकरणपाद, धातुसंग्रहपाद, रसकर्मपाद, चिकित्सापाद।

ग्रन्थ नाम	लेखक	काल	वैशिष्ट्य
रसतरंगिणी	कविराज सदानन्द	20वीं शती	
History of Hindu Chemistry	पी.सी. राय	1904	- अंग्रेजी भाषा में 2 भागों में है। - रसशास्त्र के इतिहास पर महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किये गये हैं।
पारदविज्ञानीयम्	वासुदेव मूलशंकर द्विवेदी	1969	- प्रत्यक्ष प्रयोगों के आधार पर ग्रन्थ लिखा है।
रसयोगसागर	पं हरिप्रपन्न शर्मा	1927	- 2 भाग: प्रथम भाग में तवर्ग तक और द्वितीय भाग में अवशिष्ट योगों का संकलन किया है।
रसजलनिधि	भूदेव मुखोपाध्याय	1938	- अंग्रेजी भाषा में 5 भागों में प्रकाशित
रसामृत	यादवजी त्रिकमजी आचार्य	1951	- 9 अध्याय और 9 परिशिष्ट में अध्याय पूर्ण है।

प्रमुख संस्थायें (Important Institutes)

संस्थान	स्थापना/स्थानादि	वैशिष्ट्य
बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी	संस्थापक: पं. मदनमोहन मालवीय, डॉ. अनी बसन्त, डॉ. राधाकृष्णन आदि। वर्ष: 1916 (बी.एच.यु. एक्ट, 1915)। आयुर्वेद विभाग की स्थापना: 1922 स्नातकोत्तर विभाग की स्थापना: 1963 स्थान: वाराणसी, उत्तर प्रदेश	कोर्सेस: - बी.ए.एम.एस.: 50 सीट - एम.डी./एम.एस.: 25 सीट - पी.एच.डी. - बी. फार्म आयुर्वेद: 30 सीट - अन्य कोर्सेस
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर	स्थापना: 7 12 11976 स्थान: जयपुर, राजस्थान	कोर्सेस: - बी.ए.एम.एस.: 60 सीट - एम.डी. - पी.एच.डी.

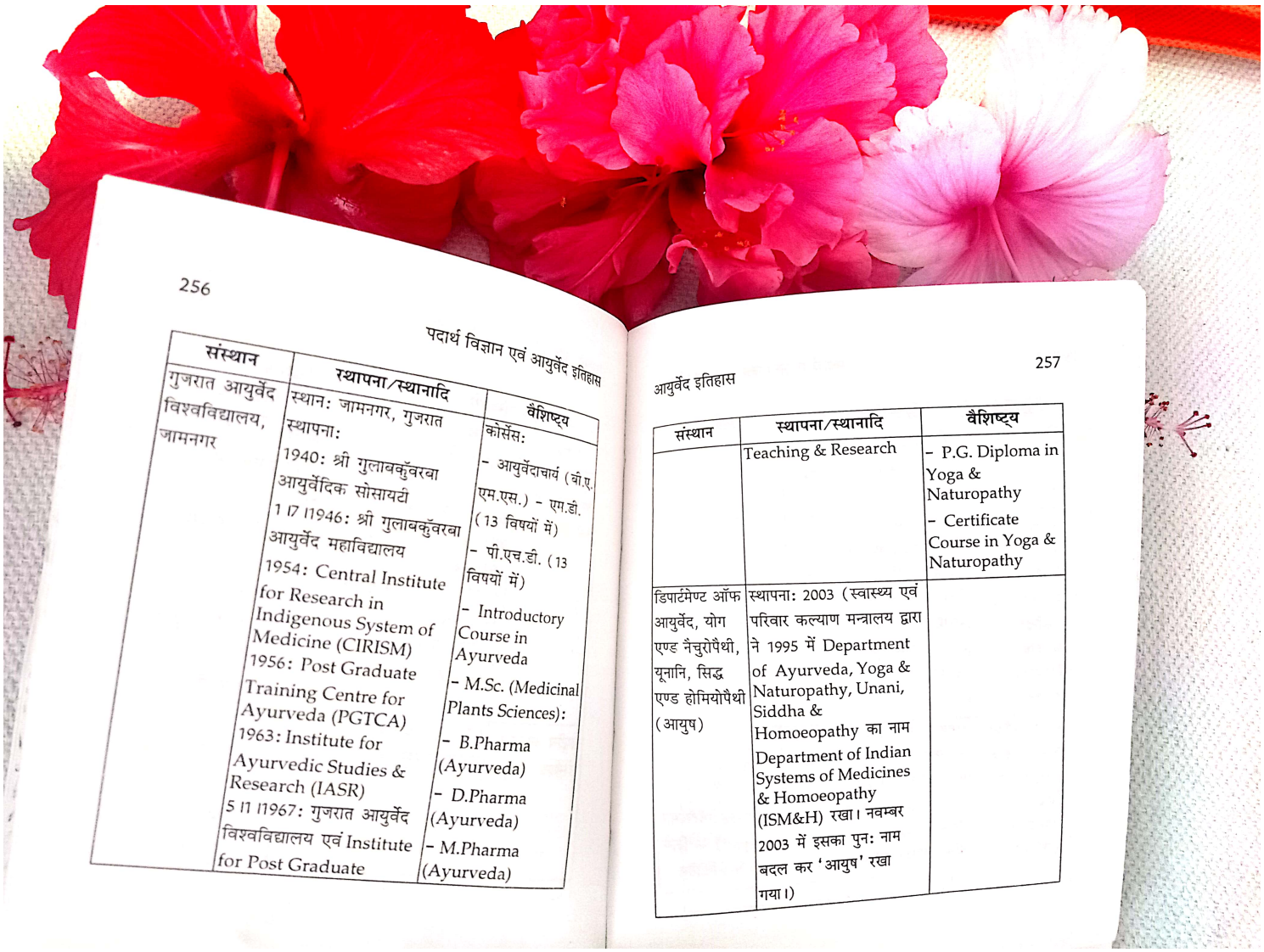

संस्थान	स्थापना/स्थानादि	वैशिष्ट्य
गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर	स्थान: जामनगर, गुजरात स्थापना: 1940: श्री गुलाबकुँवरबा आयुर्वेदिक सोसायटी 1 17 11946: श्री गुलाबकुँवरबा आयुर्वेद महाविद्यालय 1954: Central Institute for Research in Indigenous System of Medicine (CIRISM) 1956: Post Graduate Training Centre for Ayurveda (PGTCA) 1963: Institute for Ayurvedic Studies & Research (IASR) 5 11 11967: गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय एवं Institute for Post Graduate	कोर्सेस: - आयुर्वेदाचार्य (बी.ए. एम.एस.) - एग.डी. (13 विषयों में) - पी.एच.डी. (13 विषयों में) - Introductory Course in Ayurveda - M.Sc. (Medicinal Plants Sciences): - B.Pharma (Ayurveda) - D.Pharma (Ayurveda) - M.Pharma (Ayurveda)

संस्थान	स्थापना/स्थानादि	वैशिष्ट्य
	Teaching & Research	- P.G. Diploma in Yoga & Naturopathy - Certificate Course in Yoga & Naturopathy
डिपार्टमेण्ट ऑफ आयुर्वेद, योग एण्ड नैचुरोपैथी, यूनानि, सिद्ध एण्ड होमियोपैथी (आयुष)	स्थापना: 2003 (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय द्वारा ने 1995 में Department of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha & Homoeopathy का नाम Department of Indian Systems of Medicines & Homoeopathy (ISM&H) रखा। नवम्बर 2003 में इसका पुनः नाम बदल कर 'आयुष' रखा गया।)	

संस्थान	स्थापना/स्थानादि	वैशिष्ट्य
	पता: आय.आर.सी.एस. बिल्डींग, रेड क्रॉस रोड, नई दिल्ली।	
सेन्ट्रल कॉन्सिल ऑफ इन्डियन मेडिसिन (सी.सी.आय.एम.) (केन्द्रिय भारतीय चिकित्सा परिषद्)	स्थापना: 1971 पता: केन्द्रिय भारतीय चिकित्सा परिषद्, जवाहरलाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपॅथी अनुसन्धान भवन, 61-65, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, जनकपूरी, नई दिल्ली।	
सेन्ट्रल कॉन्सिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेद एण्ड सिद्ध (सी.सी.आर.ए.एस.) (केन्द्रिय	स्थापना: 30 13 11978 संचालक: डॉ. जी.एस. लवेकर पता: केन्द्रिय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसन्धान परिषद् (सी.सी.आर.ए.एस.), 61-65, इन्स्टिट्यूशनल एरिया,	औषधि अनुसन्धान: - आयुष-64: मलेरिया के लिये - आयुष-56: अपस्मार (Epilepsy) के लिये - 777 Oil: किटिभ

संस्थान	स्थापना/स्थानादि	वैशिष्ट्य
आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसन्धान परिषद्)	जनकपूरी, नई दिल्ली- 58। निदेशक: डॉ. सुमनप्रीत सिंह खनुजा स्थान: लखनऊ	कुष्ठ (Psoriasis) के लिये - क्षार सूत्र: भगन्दरादि एनोरेक्टल विकारों के लिये
सेन्ट्रल इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिसिनल एण्ड एरोमैटिक प्लान्ट्स (सी.आय.एम.ए.पी.) (केन्द्रिय औषधीय एवं सगन्ध पौधा संस्थान)		
नेशनल बॉटैनिकल रिसर्च इन्स्टिट्यूट (एन.बी.आर.आय.)	स्थापना: 1978 पता: लखनऊ निदेशक: डॉ. राकेश तुली	

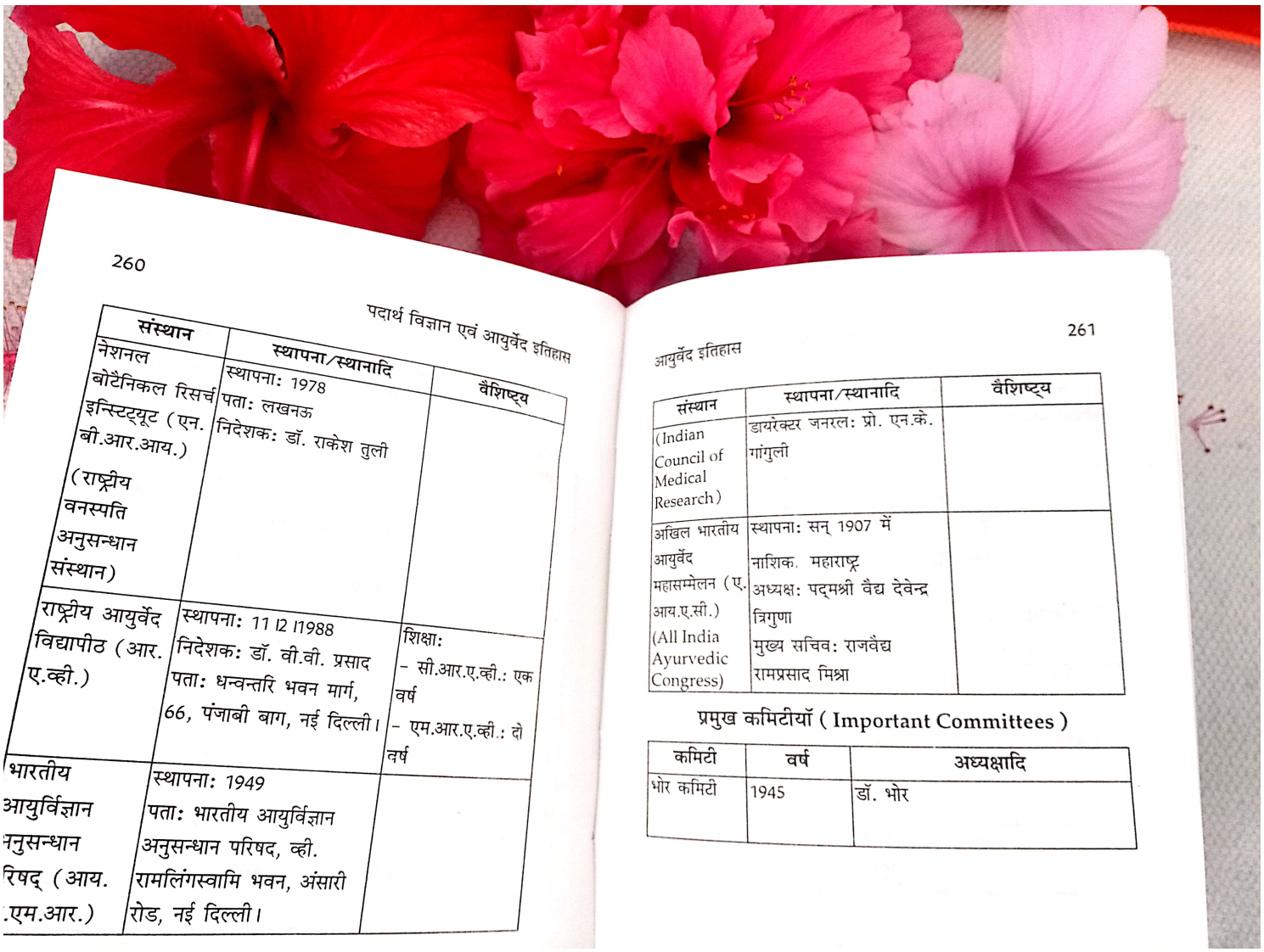

संस्थान	स्थापना/स्थानादि	वैशिष्ट्य
नेशनल बोटैनिकल रिसर्च इन्स्टिट्यूट (एन. बी.आर.आय.) (राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान)	स्थापनाः 1978 पताः लखनऊ निदेशकः डॉ. राकेश तुली	
राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आर. ए.व्ही.)	स्थापनाः 11 12 11988 निदेशकः डॉ. वी.वी. प्रसाद पताः धन्वन्तरि भवन मार्ग, 66, पंजाबी बाग, नई दिल्ली।	शिक्षाः - सी.आर.ए.व्ही.: एक वर्ष - एम.आर.ए.व्ही.: दो वर्ष
भारतीय आयुर्विज्ञान नुसन्धान रिषद् (आय. .एम.आर.)	स्थापनाः 1949 पताः भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसन्धान परिषद, व्ही. रामलिंगस्वामि भवन, अंसारी रोड, नई दिल्ली।	

संस्थान	स्थापना/स्थानादि	वैशिष्ट्य
(Indian Council of Medical Research)	डायरेक्टर जनरलः प्रो. एन.के. गांगुली	
अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन (ए. आय.ए.सी.) (All India Ayurvedic Congress)	स्थापनाः सन् 1907 में नाशिक, महाराष्ट्र अध्यक्षः पद्मश्री वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा मुख्य सचिवः राजवैद्य रामप्रसाद मिश्रा	

प्रमुख कमिटीयाँ (Important Committees)

कमिटी	वर्ष	अध्यक्षादि
भोर कमिटी	1945	डॉ. भोर

कमिटी	वर्ष	अध्यक्षादि
चोपड़ा कमिटी	19 दिसम्बर, 1946 (कमिटी की रिपोर्ट दो खण्डों में 1948 में प्रकाशित)	अध्यक्ष: कर्नल सर रामनाथ चोपड़ा सदस्य: डॉ. लक्ष्मीपति, डॉ. बी.सी. लागु, डॉ. बालकृष्ण अमरजी पाठक, डॉ. एम.एच. शाह, डॉ. बी.एन. घोष, यादवजी त्रिकमजी आचार्य और तीन हकीम। सचिव: डॉ. सी. द्वारकानाथ
पण्डित कमिटी	1949	डॉ. सी.जी. पण्डित
दवे कमिटी	1955	दयाशंकर दवे
उडुप कमिटी	29 जुलाई, 1958	अध्यक्ष: डॉ. के.एन. उडुप सदस्य: के. परमेश्वरन् पिल्लई मन्त्री: आर. नरसिंहम्
व्यास कमिटी	1963	श्री मोहनलाल व्यास (स्वास्थ्य मन्त्री, गुजरात)

कमिटी	वर्ष	अध्यक्षादि
सम्पूर्णानन्द कमिटी	1964	अध्यक्ष: डॉ. सम्पूर्णानन्द (मुख्यमन्त्री, उत्तरप्रदेश) सदस्य: श्री पण्डित शिवशर्मा, दत्तात्रेय अनन्त कुलकर्णी

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेदीय संस्थायें
(Ayurvedic institutes at International level)

देश	आयुर्वेदीय संस्थान	
अमेरिका	नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेदीक मेडिसिन	स्थापना: 1982 संस्थापक: स्कॉट जर्सन स्थान: न्यू योर्क
	द आयुर्वेदिक इन्स्टिट्यूट	स्थापना: 1986 संस्थापक: डॉ. वसन्त लाड स्थान: न्यू मेक्सिको

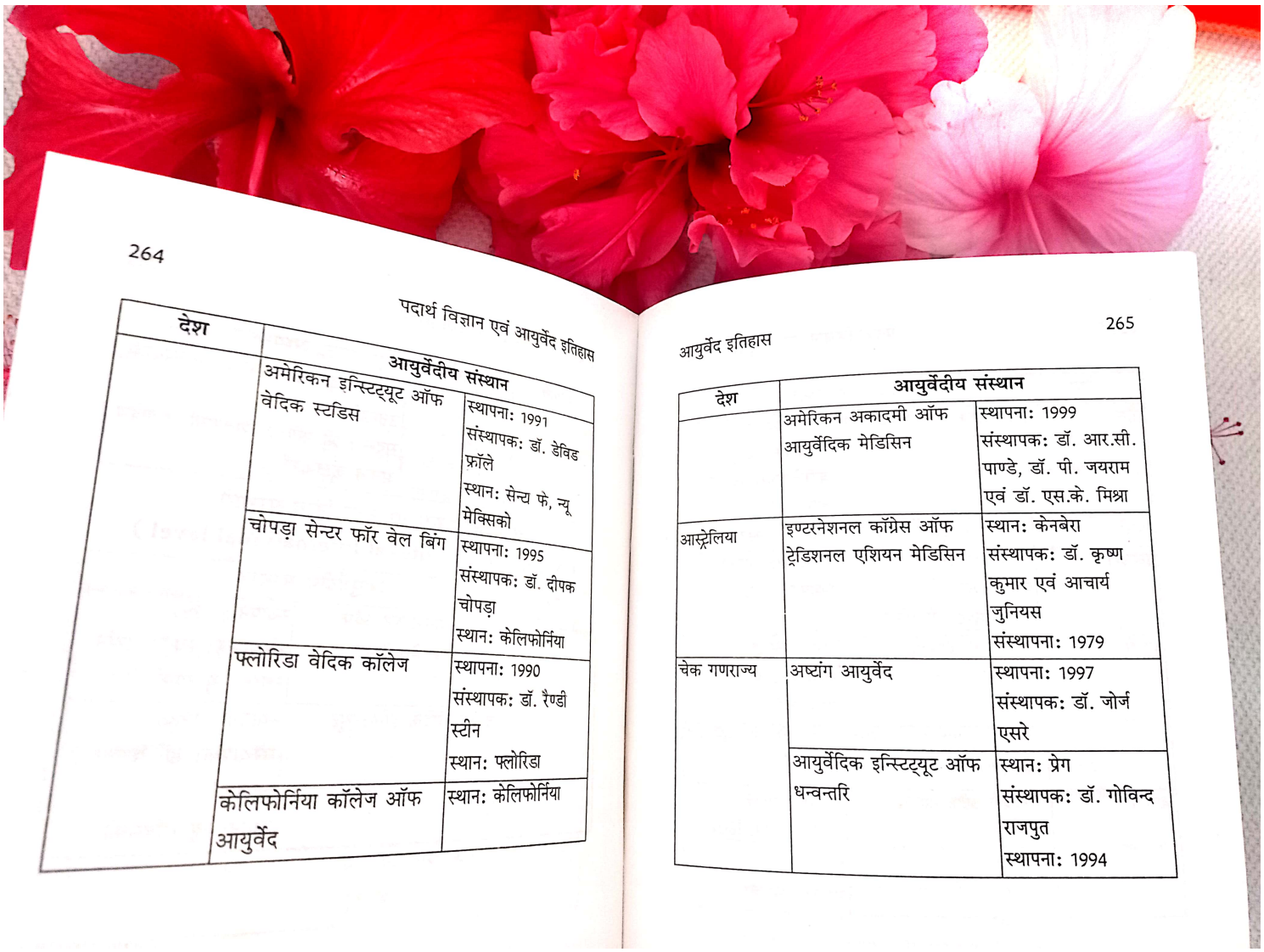

देश	आयुर्वेदीय संस्थान	
	अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑफ वेदिक स्टडिस	स्थापना: 1991 संस्थापक: डॉ. डेविड फ्रॉले स्थान: सेन्य फे, न्यू मेक्सिको
	चोपड़ा सेन्टर फॉर वेल बिंग	स्थापना: 1995 संस्थापक: डॉ. दीपक चोपड़ा स्थान: केलिफोर्निया
	फ्लोरिडा वेदिक कॉलेज	स्थापना: 1990 संस्थापक: डॉ. रैण्डी स्टीन स्थान: फ्लोरिडा
	केलिफोर्निया कॉलेज ऑफ आयुर्वेद	स्थान: केलिफोर्निया

देश	आयुर्वेदीय संस्थान	
	अमेरिकन अकादमी ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन	स्थापना: 1999 संस्थापक: डॉ. आर.सी. पाण्डे, डॉ. पी. जयराम एवं डॉ. एस.के. मिश्रा
आस्ट्रेलिया	इण्टरनेशनल कॉंग्रेस ऑफ ट्रेडिशनल एशियन मेडिसिन	स्थान: केनबेरा संस्थापक: डॉ. कृष्ण कुमार एवं आचार्य जुनियस संस्थापना: 1979
चेक गणराज्य	अष्टांग आयुर्वेद	स्थापना: 1997 संस्थापक: डॉ. जोर्ज एसरे
	आयुर्वेदिक इन्स्टिट्यूट ऑफ धन्वन्तरि	स्थान: प्रेग संस्थापक: डॉ. गोविन्द राजपुत स्थापना: 1994

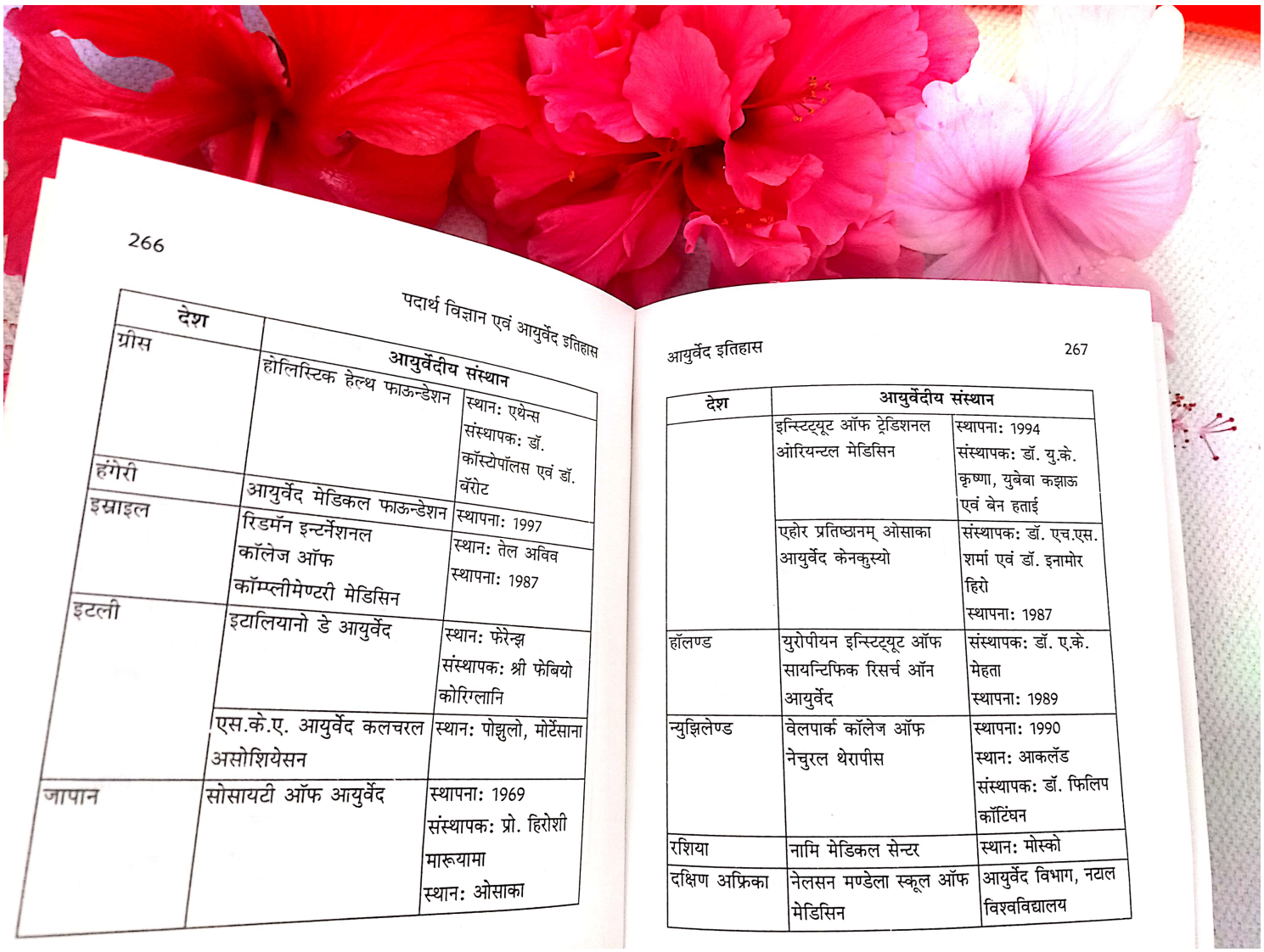

देश	आयुर्वेदीय संस्थान	
ग्रीस	होलिस्टिक हेल्थ फाऊन्डेशन	स्थान: एथेन्स संस्थापक: डॉ. कॉस्टोपॉलस एवं डॉ. वॅरोट
हंगेरी	आयुर्वेद मेडिकल फाऊन्डेशन	स्थापना: 1997
इस्राइल	रिडमॅन इन्टर्नेशनल कॉलेज ऑफ कॉम्प्लीमेण्टरी मेडिसिन	स्थान: तेल अविव स्थापना: 1987
इटली	इटालियानो डे आयुर्वेद	स्थान: फेरेन्झ संस्थापक: श्री फेबियो कोरिग्लानि
	एस.के.ए. आयुर्वेद कलचरल असोशियेसन	स्थान: पोझुलो, मोर्टेसाना
जापान	सोसायटी ऑफ आयुर्वेद	स्थापना: 1969 संस्थापक: प्रो. हिरोशी मारूयामा स्थान: ओसाका

देश	आयुर्वेदीय संस्थान	
	इन्स्टिट्यूट ऑफ ट्रेडिशनल ओरियन्टल मेडिसिन	स्थापना: 1994 संस्थापक: डॉ. यु.के. कृष्णा, युबेबा कझाऊ एवं बेन हताई
	एहोर प्रतिष्ठानम् ओसाका आयुर्वेद केनकुस्यो	संस्थापक: डॉ. एच.एस. शर्मा एवं डॉ. इनामोर हिरो स्थापना: 1987
हॉलण्ड	युरोपीयन इन्स्टिट्यूट ऑफ सायन्टिफिक रिसर्च ऑन आयुर्वेद	संस्थापक: डॉ. ए.के. मेहता स्थापना: 1989
न्युझिलेण्ड	वेलपार्क कॉलेज ऑफ नेचुरल थेरापीस	स्थापना: 1990 स्थान: आकलॅड संस्थापक: डॉ. फिलिप कॉटिंघन
रशिया	नामि मेडिकल सेन्टर	स्थान: मोस्को
दक्षिण अफ्रिका	नेलसन मण्डेला स्कूल ऑफ मेडिसिन	आयुर्वेद विभाग, नटाल विश्वविद्यालय

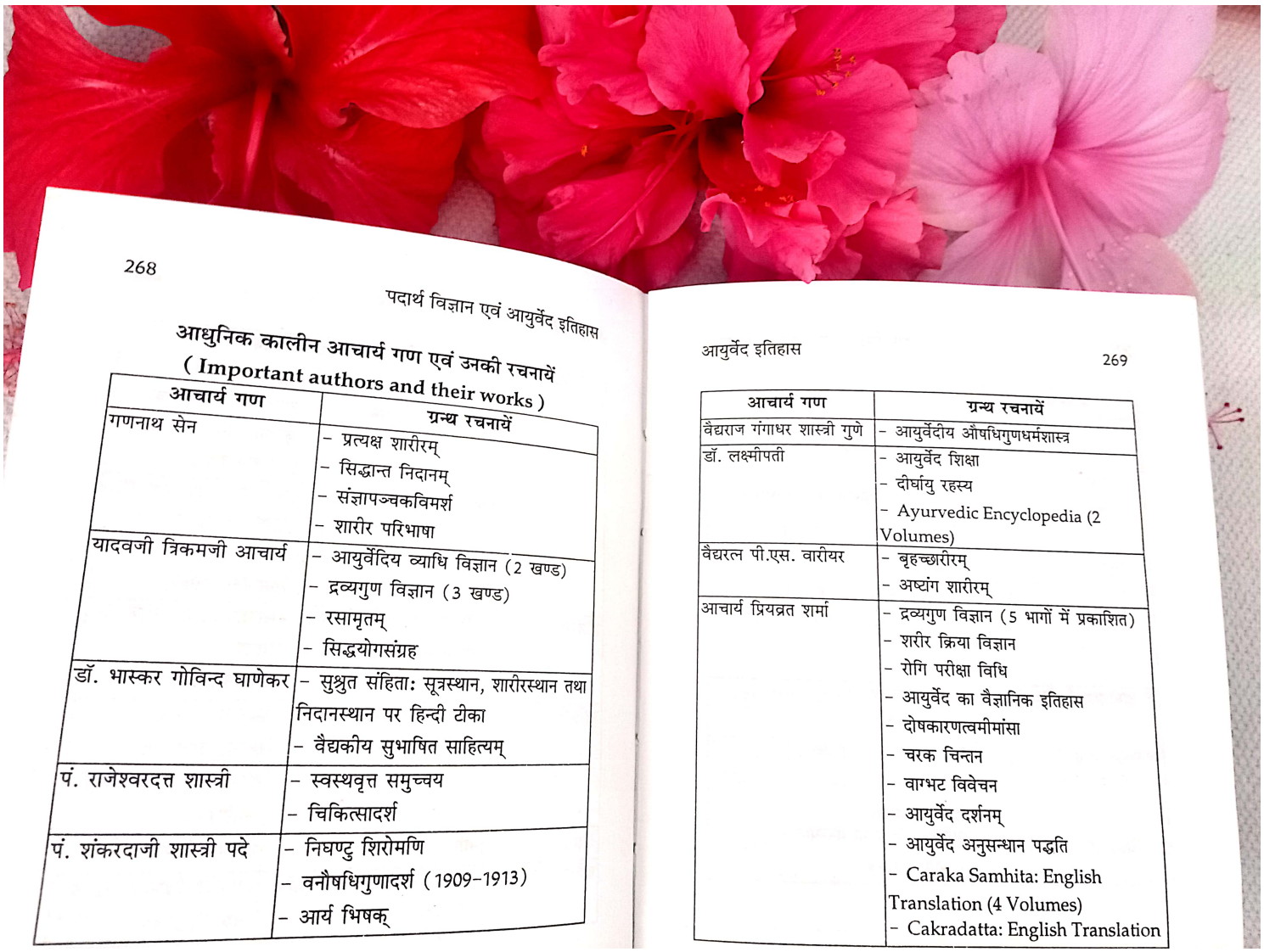

आधुनिक कालीन आचार्य गण एवं उनकी रचनायें
(Important authors and their works)

आचार्य गण	ग्रन्थ रचनायें
गणनाथ सेन	- प्रत्यक्ष शारीरम् - सिद्धान्त निदानम् - संज्ञापञ्चकविमर्श - शारीर परिभाषा
यादवजी त्रिकमजी आचार्य	- आयुर्वेदिय व्याधि विज्ञान (2 खण्ड) - द्रव्यगुण विज्ञान (3 खण्ड) - रसामृतम् - सिद्धयोगसंग्रह
डॉ. भास्कर गोविन्द घाणेकर	- सुश्रुत संहिता: सूत्रस्थान, शारीरस्थान तथा निदानस्थान पर हिन्दी टीका - वैद्यकीय सुभाषित साहित्यम्
पं. राजेश्वरदत्त शास्त्री	- स्वस्थवृत्त समुच्चय - चिकित्सादर्श
पं. शंकरदाजी शास्त्री पदे	- निघण्टु शिरोमणि - वनौषधिगुणादर्श (1909-1913) - आर्य भिषक्

आचार्य गण	ग्रन्थ रचनायें
वैद्यराज गंगाधर शास्त्री गुणे	- आयुर्वेदीय औषधिगुणधर्मशास्त्र
डॉ. लक्ष्मीपती	- आयुर्वेद शिक्षा - दीर्घायु रहस्य - Ayurvedic Encyclopedia (2 Volumes)
वैद्यरत्न पी.एस. वारीयर	- बृहच्छारीरम् - अष्टांग शारीरम्
आचार्य प्रियव्रत शर्मा	- द्रव्यगुण विज्ञान (5 भागों में प्रकाशित) - शरीर क्रिया विज्ञान - रोगि परीक्षा विधि - आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास - दोषकारणत्वमीमांसा - चरक चिन्तन - वाग्भट विवेचन - आयुर्वेद दर्शनम् - आयुर्वेद अनुसन्धान पद्धति - Caraka Samhita: English Translation (4 Volumes) - Cakradatta: English Translation

आचार्य गण	ग्रन्थ रचनायें
	- Introduction to Dravyaguna - Indian Medicine in the Classical Age - Fruits & Vegetables in Ancient India - चरक समज्ञा - द्रव्यगुणकोष: - Susruta Samhita: English Translation with Commentary of Dalhana - पुष्पायुर्वेद:
पं. दामोदरशर्मा गौड	- पारिषद्यं शब्दार्थ शारीरम् - अभिनव शारीरम्
बापालाल शाह	- निघण्टु आदर्श (2 खण्डों में) - Some Controversial Drugs in Indian Medicine - संस्कृत साहित्य मा वनस्पतिओं - भारतीय रसशास्त्र

भाषानुसार पत्र पत्रिकायें (Magazines, periodicals of Ayurveda)

हिन्दी भाषा में पत्र पत्रिकायें

क्र.	पत्रिका नाम	प्रकाशन वर्ष	संपादक	प्रकाशन स्थान
1	आरोग्यसुधानिधि	1901	पं श्रीनारायण शर्मा	कलकत्ता
2	आरोग्यसुधाकर	1901	पं मुरलीधर शर्मा	फर्रूखनगर
3	सद्वैद्यकौस्तुभ	1905	शंकरदाजी शास्त्री पदे	अहमदनगर
4	सुधानिधि	1907	पं वैद्यनाथ शर्मा राजवैद्य	प्रयाग
5	सुधानिधि	1909	पं जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल	प्रयाग
6	धन्वन्तरि	1924	वैद्य बांकेलाल गुप्त	विजयगढ
7	प्राणाचार्य	1928	रामनारायण वैद्य शास्त्री	कानपुर
8	प्राणाचार्य	1948	वैद्य बांकेलाल गुप्त	विजयगढ
9	अनुभूतयोगमाला	1923	वैद्यराज विश्वेश्वरदयालु जी	बरालोकपुर इटावा

क्र.	पत्रिका नाम	प्रकाशन वर्ष	संपादक	प्रकाशन स्थान
10	आयुर्वेदविज्ञान	1927	वैद्य स्वामी हरिशरणानन्द	अमृतसर
11	आयुर्वेद	1952	पं गोवर्धन शर्मा छांगाणी	नागपुर
12	स्वास्थ्य	1953	डा बलदेव शर्मा	कालेडा अजमेर
13	सचित्र आयुर्वेद	1948	पं सभाकान्त झा	श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन कलकत्ता
14	आयुर्वेद विकास	1952	श्री शम्भुनाथ बलियासे मुकुल	डाबर नई दिल्ली
15	वैद्यसम्मेलन पत्रिका	1928	यादवजी त्रिकमजी आचार्य	
16	आरोग्यदर्पण		वैद्य गोपीनाथ गुप्त	ऊँझा फार्मेसी अहमदाबाद

क्र.	पत्रिका नाम	प्रकाशन वर्ष	संपादक	प्रकाशन स्थान
17	चिकित्सक	1918	पं किशोरीदत्त शास्त्री	कानपुर
18	राकेश	1929	पं रामकुमार द्विवेदी पं रूपेन्द्रनाथ शास्त्री	बरालोकपुर इटावा
19	बूटीदर्पण	1924	श्रीसरस्वतीप्रसाद त्रिपाठी रूपलाल वैश्य	लाहौर
20	आयुर्वेद	1919	पं बाबूराम शर्मा	मेरठ
21	आयुर्वेदप्रदीप	1921	पं शिवचन्द्र मिश्र	मुजफ्फरपुर
22	स्वास्थ्यसन्देश	1941	पं कपिलदेव त्रिपाठी पं शुकदेव शर्मा	आयुर्वेद कार्यालय पटना
23	आयुर्वेदसन्देश	1955	पं सुरेन्द्रनाथ दीक्षित	लखनऊ
24	आयुर्वेदवाणी	1955	वासुदेव मिश्र वैद्य	जौनपुर
25	आरोग्यसिन्धु	1913	वैद्य राधावल्लभ	अलीगढ
26	जीवनविज्ञान		वैद्य हरिवक्ष जोशी	कलकत्ता

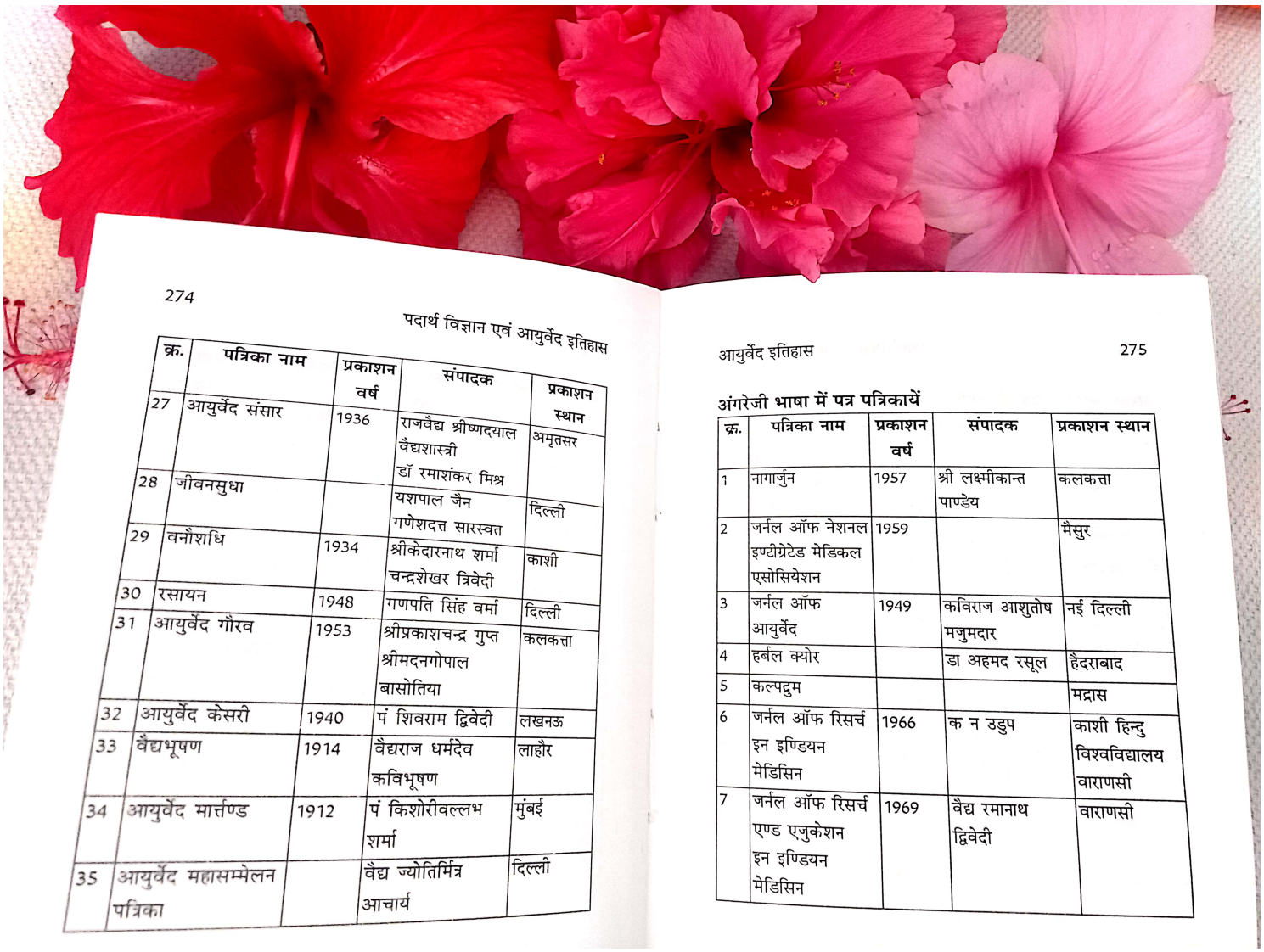

क्र.	पत्रिका नाम	प्रकाशन वर्ष	संपादक	प्रकाशन स्थान
27	आयुर्वेद संसार	1936	राजवैद्य श्रीष्णदयाल वैद्यशास्त्री डॉ रमाशंकर मिश्र	अमृतसर
28	जीवनसुधा		यशपाल जैन गणेशदत्त सारस्वत	दिल्ली
29	वनौशधि	1934	श्रीकेदारनाथ शर्मा चन्द्रशेखर त्रिवेदी	काशी
30	रसायन	1948	गणपति सिंह वर्मा	दिल्ली
31	आयुर्वेद गौरव	1953	श्रीप्रकाशचन्द्र गुप्त श्रीमदनगोपाल बासोतिया	कलकत्ता
32	आयुर्वेद केसरी	1940	पं शिवराम द्विवेदी	लखनऊ
33	वैद्यभूषण	1914	वैद्यराज धर्मदेव कविभूषण	लाहौर
34	आयुर्वेद मार्त्तण्ड	1912	पं किशोरीवल्लभ शर्मा	मुंबई
35	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका		वैद्य ज्योतिर्मित्र आचार्य	दिल्ली

अंगरेजी भाषा में पत्र पत्रिकायें

क्र.	पत्रिका नाम	प्रकाशन वर्ष	संपादक	प्रकाशन स्थान
1	नागार्जुन	1957	श्री लक्ष्मीकान्त पाण्डेय	कलकत्ता
2	जर्नल ऑफ नेशनल इण्टीग्रेटेड मेडिकल एसोसियेशन	1959		मैसुर
3	जर्नल ऑफ आयुर्वेद	1949	कविराज आशुतोष मजुमदार	नई दिल्ली
4	हर्बल क्योर		डा अहमद रसूल	हैदराबाद
5	कल्पद्रुम			मद्रास
6	जर्नल ऑफ रिसर्च इन इण्डियन मेडिसिन	1966	क न उडुप	काशी हिन्दु विश्वविद्यालय वाराणसी
7	जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन इन इण्डियन मेडिसिन	1969	वैद्य रमानाथ द्विवेदी	वाराणसी

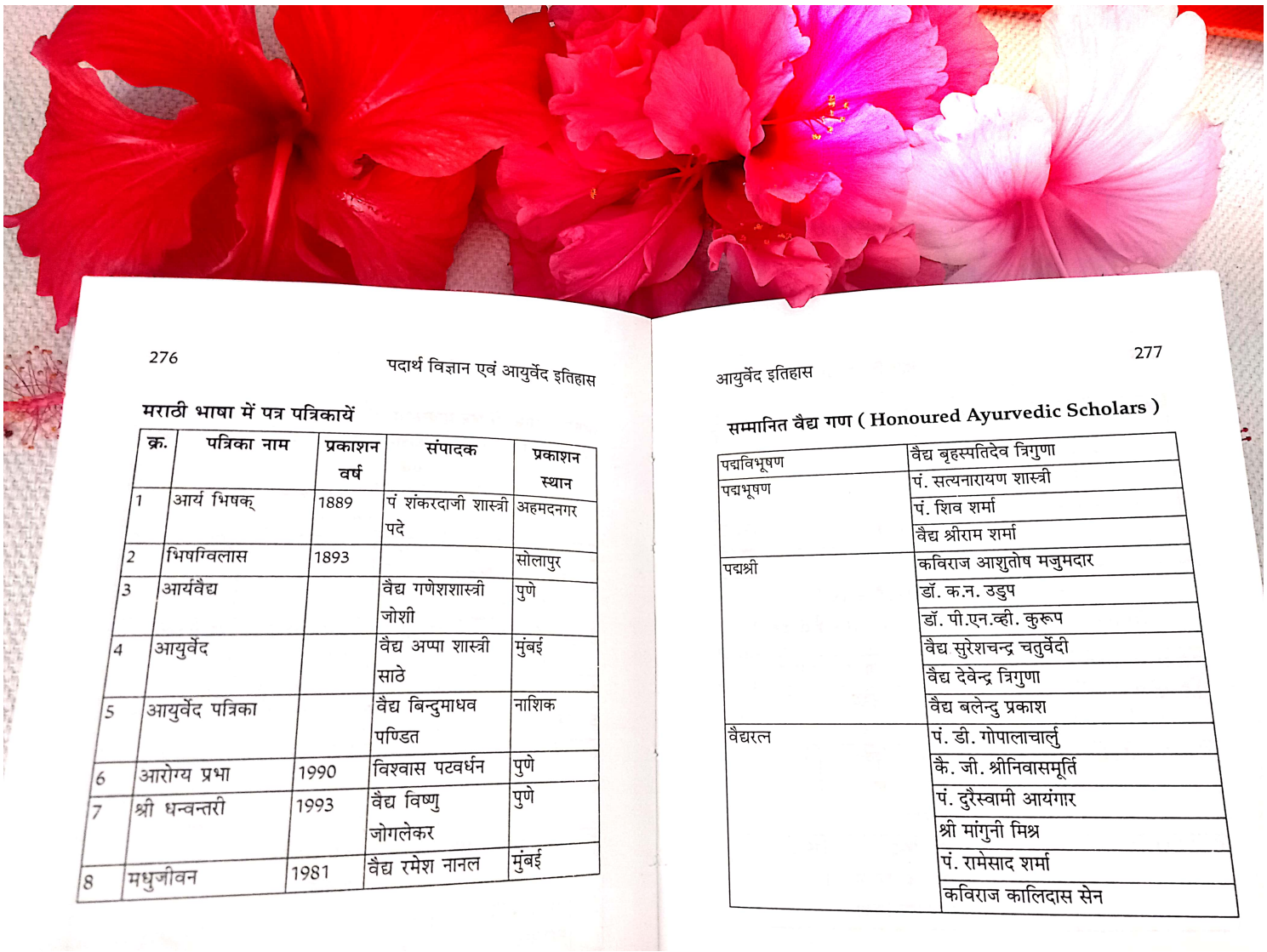

मराठी भाषा में पत्र पत्रिकायें

क्र.	पत्रिका नाम	प्रकाशन वर्ष	संपादक	प्रकाशन स्थान
1	आर्य भिषक्	1889	पं शंकरदाजी शास्त्री पदे	अहमदनगर
2	भिषग्विलास	1893		सोलापुर
3	आर्यवैद्य		वैद्य गणेशशास्त्री जोशी	पुणे
4	आयुर्वेद		वैद्य अप्पा शास्त्री साठे	मुंबई
5	आयुर्वेद पत्रिका		वैद्य बिन्दुमाधव पण्डित	नाशिक
6	आरोग्य प्रभा	1990	विश्वास पटवर्धन	पुणे
7	श्री धन्वन्तरी	1993	वैद्य विष्णु जोगलेकर	पुणे
8	मधुजीवन	1981	वैद्य रमेश नानल	मुंबई

सम्मानित वैद्य गण (Honoured Ayurvedic Scholars)

पद्मविभूषण	वैद्य बृहस्पतिदेव त्रिगुणा
पद्मभूषण	पं. सत्यनारायण शास्त्री
	पं. शिव शर्मा
	वैद्य श्रीराम शर्मा
पद्मश्री	कविराज आशुतोष मजुमदार
	डॉ. क.न. उडुप
	डॉ. पी.एन.व्ही. कुरूप
	वैद्य सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी
	वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा
	वैद्य बलेन्दु प्रकाश
वैद्यरत्न	पं. डी. गोपालाचार्लु
	कै. जी. श्रीनिवासमूर्ति
	पं. दुरैस्वामी आयंगार
	श्री मांगुनी मिश्र
	पं. रामेसाद शर्मा
	कविराज कालिदास सेन

Ayurveda Ek Vikalp Foundation

- All ayurvedic books store
- India's biggest Ayurveda union.
- For Ayurvedic E- book follow, subscribe us on

Telegram-
https://t.me/ayurvedaekvikalpfoundation

Facebook-
https://m.facebook.com/ayurvedaekvikalp/?ref=bookmarks

E-mail- ayurvedaekvikalp@gmail.com

Website- ayurvedaekvikalp.org

For WhatsApp group msg-
9561788826

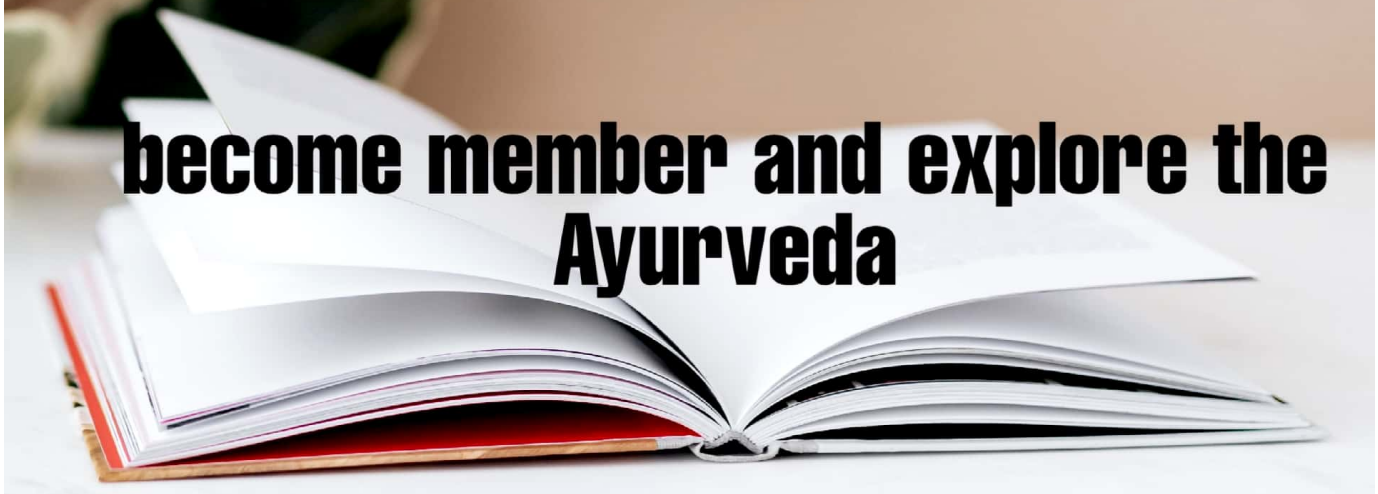

become member and explore the Ayurveda